BAD SHUGOONI (HINDI)

बद शुगूनी

(दा'वते इस्लामी)

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म** ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म** ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां **ख़राबी** हो या **सफ़ह़ात** कम हों या **बाइन्डिंग** में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (हिन्दी–गुजराती) दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह किताब "**बद शुगूनी**" उर्दू ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम, बरोडा (हिन्दी–गुजराती) ने इस किताब को हिन्द (**INDIA**) की **राष्ट्रिय भाषा** "**हिन्दी**" में रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** या'नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करते हुवे दर्जे ज़ैल मुआ़मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :-

﴾1﴿ कमो बेश दस(10) मराह़िल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :- (1) कम्पोज़िंग (2) सेटिंग (3) कम्पयूटर तक़ाबुल (4) तक़ाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्पयूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

﴾2﴿ क़रीबुस्सौत़ (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (़) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाइयें।

﴾3﴿ हिन्दी पढ़ने वालों को सह़ीह़ उर्दू तलफ़्फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में ह़ासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर **अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़्फ़ुज़** के ऐ़न मुताबिक़ ही **हिन्दी-जोडणी** (**SPELLING**) रखी गई है और बत़ौरे ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़तूह़ (ज़बर वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के पहले डेश (-) और साकिन (जज़्म वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के नीचे खोड़ा (्) इस्ति'माल किया गया है। मषलन **उ-लमा** (عُلَمَاء) में "**-ल**" मफ़तूह़ और **रह़म** (رَحْم) में "**ह़्**" साकिन है।

﴾4﴿ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं भी ऐन साकिन (عْ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। जैसे : **दा'वत** (دَعْوَت)

﴾5﴿ अ़रबी-फ़ारसी मतन के साथ साथ अ़रबी किताबों के ह़वालाजात भी अ़रबी ही रखे गए हैं जब कि "عَزَّوَجَلَّ", "صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم" और "رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ" वग़ैरा को भी अ़रबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़-लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = عْ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = ِی	ू = ُو	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

''لَيْسَ مِنَّا مَنْ تَطَيَّرَ وَلَا تُطُيِّرَ لَه''

''या'नी जिस ने **बद शुगूनी** ली और जिस के लिये **बद शुगूनी** ली गई वोह हम में से नहीं है।''

(المعجم الکبیر، ۱۸/ ۱۶۲، حدیث: ۳۵۵)

बद शुगूनी

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बए इस्लाही कुतुब)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना

421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ मस्जिद, देहली-110006

फ़ोन : 011-23284560

नाम किताब : बद शुगूनी

मुरत्तिबीन : मदनी उ़-लमा (शो'बए इस्लाही़ कुतुब)

सिने त़बाअ़त : जमादिल आख़िर, सि.1435 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली -6

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 7 मुहर्रमुल ह़राम 1435 हि. ह़वाला : 188

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين وعلى اله واصحابه اجمعين

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"बद शुगूनी" (उर्दू)

(मत़बूआ़ : मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे षानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिया इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़रबी इबारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
12-11-2013

E. mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

“इस्लामी ज़िन्दगी” के 11 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की “11 निय्यतें”

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(المعجم الکبیر للطبرانی،٦/١٨٥،حدیث:٥٩٤٢)

दो मदनी फूल :-

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

इस किताब को पढ़ने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये, मषलन ﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। ﴾5﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾6﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾7﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾8﴿ अह़ादीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾9﴿ जहां जहां “**अल्लाह**” का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾10﴿ जहां जहां “**सरकार**” का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾11﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** کَثَّرَ ھُمُ اللّٰہُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

“**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**” की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहि़ये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़षे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है । तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का खुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ “**दा'वते इस्लामी**” की तमाम मजालिस ब शुमूल “**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**” को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए । हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में जगह नसीब फ़रमाए ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

क़ियामत का नूर

शफ़ीए रोज़े शुमार, जनाबे अहमदे मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे नूरबार है : زَيِّنُوْا مَجَالِسَكُمْ بِالصَّلَاةِ عَلَيَّ فَاِنَّ صَلَاتَكُمْ عَلَيَّ نُوْرٌ لَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ या'नी तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्यूंकि तुम्हारा मुझ पर दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (الجامع الصغير، ص ٢٨٠، حديث ٤٥٨٠)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मन्हूस कौन ?

एक बादशाह अपने वज़ीरों और मुशीरों के साथ दरबार में मौजूद था कि काले रंग के एक आंख वाले आदमी को बादशाह के सामने पेश किया गया, लोगों को शिकायत थी कि येह ऐसा मन्हूस है कि जो सुब्ह सवेरे इस की शक्ल देख लेता है उसे ज़रूर कोई न कोई नुक़्सान उठाना पड़ता है लिहाज़ा इसे मुल्क से निकाल दिया जाए। थोड़ी देर सोचने के बा'द बादशाह ने कहा : कोई फ़ैसला करने से पहले मैं ख़ुद तजरिबा करूंगा और कल सुब्ह सब से पहले इस की सूरत देखूंगा फिर कोई दूसरा काम करूंगा। अगले दिन जब बादशाह बेदार हुवा और ख़्वाबगाह का दरवाज़ा खोला तो वोही एक आंख वाला आदमी सामने खड़ा था। बादशाह उस को देख कर वापस पलट आया और दरबार में जाने के लिये तय्यार होने लगा। लिबास तब्दील करने के बा'द जूंही बादशाह ने जूते में अपना पाउं डाला तो उस में मौजूद ज़हरीले बिच्छू ने डंक मार दिया। बादशाह की चीख़ें बुलन्द हुईं तो ख़िदमत गार भागम भाग

इस के पास पहुंचे। ज़हर के अषर से बादशाह का सुर्ख़ व सफ़ेद चेहरा नीला पड़ चुका था, महल में शोर मच गया कि "बादशाह सलामत को बिच्छू ने काट लिया है।" चन्द लम्हों में वज़ीरे ख़ास भी पहुंच गए, हाथों हाथ शाही त़बीब को त़लब कर लिया गया जिस ने बड़ी महारत से बादशाह का इ़लाज शुरूअ़ कर दिया। जैसे तैसे कर के बादशाह की जान तो बच गई लेकिन इसे कई रोज़ बिस्तरे अ़लालत पर गुज़ारना पड़े। जब त़बीअ़त ज़रा संभली और बादशाह दरबार में बैठा तो एक आंख वाले आदमी को दोबारा पेश किया गया ताकि उसे सज़ा सुनाई जाए क्यूंकि शिकायत करने वालों का कहना था कि अब उस के "मन्हूस" होने का तजरिबा ख़ुद बादशाह सलामत कर चुके हैं। वोह शख़्स रो रो कर रह़्म की फ़रयाद करने लगा कि मुझे मेरे वत़न से न निकाला जाए। येह देख कर एक वज़ीर को उस पर रह़्म आ गया, उस ने बादशाह से बोलने की इजाज़त ली और कहने लगा : बादशाह सलामत ! आप ने सुब्ह़ सुब्ह़ इस की सूरत देखी तो आप को बिच्छू ने काट लिया इस लिये येह मन्हूस ठहरा लेकिन मुआ़फ़ कीजियेगा कि **इस ने भी सुब्ह़ सवेरे आप ही का चेहरा देखा था** ! ! ! जिस के बा'द से येह अब तक क़ैद में था और अब शायद इसे मुल्क बदरी (या'नी मुल्क छोड़ने) की सज़ा सुना दी जाए तो ज़रा ठन्डे दिल से ग़ौर कीजिये कि मन्हूस कौन ? येह शख़्स या आप ? येह सुन कर बादशाह ला जवाब हो गया और एक आंख वाले काले आदमी को न सिर्फ़ आज़ाद कर दिया बल्कि ऐ'लान करवा दिया कि आइन्दा किसी ने भी इस को मन्हूस कहा तो उसे सख़्त सज़ा दी जाएगी।

क्या कोई शख़्स मन्हूस हो सकता है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी शख़्स, जगह, चीज़ या वक़्त को मन्हूस जानने का इस्लाम में कोई तसव्वुर ही नहीं, येह तो महूज़ वहमी ख़यालात होते हैं। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से इसी नोइय्यत का **सुवाल** किया गया कि एक शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ मश्हूर है कि अगर सुब्ह़ को उस की मन्हूस सूरत देख ली जाए या कहीं काम को जाते हुवे येह सामने आ जाए तो ज़रूर कुछ न कुछ दिक़्क़त और परेशानी उठानी पड़ेगी और चाहे कैसा ही यक़ीनी त़ौर पर काम हो जाने का वुसूक़ (ए'तिमाद और भरोसा) हो लेकिन उन का ख़याल है कि कुछ न कुछ ज़रूर रुकावट और परेशानी होगी चुनान्चे, उन लोगों को उन के ख़याल के मुनासिब हर बार तजरिबा होता रहता है और वोह लोग बराबर इस अम्र (या'नी बात) का ख़याल रखते हैं कि अगर कहीं जाते हुवे उस से सामना हो जाए तो अपने मकान पर वापस आ जाते हैं। और थोडी देर बा'द येह मा'लूम कर के कि वोह मन्हूस सामने तो नहीं है ! अपने काम के लिये जाते हैं। अब सुवाल येह है कि उन लोगों का येह अ़क़ीदा और त़र्ज़े अ़मल कैसा है ? कोई क़बाह़ते शरइय्या तो नहीं ? आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **जवाब** दिया : **शरए़ मुत़ह्हर** में इस की कुछ अस्ल नहीं, लोगों का वहम सामने आता है। शरीअ़त में हुक्म है : اِذَا تَطَيَّرْتُمْ فَامْضُوْا या'नी जब कोई शुगूने बद गुमान में आए तो उस पर अ़मल न करो ।(1) वोह त़रीक़ा

مدینہ

(1) فتح الباری،کتاب الطب، باب الطیرۃ،۱۱/ ۱۸۱،تحت الحدیث:۵۷۵۴

महज़ हिन्दवाना है मुसलमानों को ऐसी जगह चाहिये कि ''اَللّٰھُمَّ لَاطَیْرَ اِلَّا طَیْرُکَ ،وَلَا خَیْرَ اِلَّا خَیْرُکَ ،وَلَا اِلٰہَ غَیْرُکَ''[1] (ऐ **अल्लाह** ! नहीं है कोई बुराई मगर तेरी त़रफ़ से और नहीं है कोई भलाई मगर तेरी त़रफ़ से और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं) पढ़ ले और अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) पर भरोसा कर के अपने काम को चला जाए, हरगिज़ न रुके, न वापस आए। واللّٰہ تعالٰی اعلم (फ़तावा रज़विय्या, **29/641** मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गुनाहों का मजमूआ़

किसी शख़्स को मन्हूस क़रार देने में उस की सख़्त दिल आज़ारी है और इस से तोहमत धरने का गुनाह भी होता है और येह दोनों जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं। मज़्कूरा गुनाहों की मज़म्मत पर मुश्तमिल **2** रिवायात मुलाह़ज़ा कीजिये और ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी से लरज़िये ,

चुनान्चे, ★ शहनशाहे नबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी मुसलमान की बुराई बयान करे जो उस में नहीं पाई जाती तो उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक दोज़ख़ियों के कीचड़, पीप और ख़ून में रखेगा जब तक कि वोह अपनी कही हुई बात से न निकल आए।

(ابوداؤد ،کتاب القضیہ،باب فی الشھادات، ۳/۴۲۷، حدیث: ۳۵۹۷)

★सुल्त़ाने दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

مَنْ اٰذٰی مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِیْ وَمَنْ اٰذَانِیْ فَقَدْ اٰذَی اللّٰہ

[1] :مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الدعاء، باب مایقول الرجل اذا نعق الغراب، ۷/۱۴۲، حدیث:۱

(या'नी) जिस ने (बिला वजहे शरई) किसी मुसलमान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी।" (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط، ۲/۳۸۷، الحدیث ۳۶۰۷)

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को ईज़ा देने वालों के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 22 सूरतुल अह़ज़ाब की आयत 57 में इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۵۷﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۵۷)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईज़ा देते हैं **अल्लाह** और उस के रसूल को उन पर **अल्लाह** की ला'नत है दुन्या व आख़िरत में और **अल्लाह** ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शुगून की क़िस्में

शुगून का मा'ना है फ़ाल लेना या'नी किसी चीज़, शख़्स, अ़मल, आवाज़ या वक़्त को अपने ह़क़ में अच्छा या बुरा समझना। इस की बुन्यादी तौ़र पर दो क़िस्में हैं : (1) बुरा शुगून (अप शुकन) लेना (2) अच्छा शुगून (शुकन) लेना। अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अह़मद अन्सारी कुरतुबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی तफ़्सीरे कुरतुबी में नक़्ल करते हैं : अच्छा शुगून येह है कि जिस काम का इरादा किया हो उस के बारे में कोई कलाम सुन कर दलील पकड़ना, येह उस वक़्त है जब कलाम अच्छा हो, अगर बुरा हो तो बद शुगूनी है।

शरीअ़त ने इस बात का हुक्म दिया है कि इन्सान अच्छा शुगून ले कर ख़ुश हो और अपना काम ख़ुशी ख़ुशी पायए तकमील तक पहुंचाए और जब बुरा कलाम सुने तो इस की त़रफ़ तवज्जोह न करे और न ही इस के सबब अपने काम से रुके।

(الجامع لاحكام القرآن للقرطبی،پ٢٦، الاحقاف،تحت الآية:٤،ج٨،جزء١٦،ص١٣٢)

अच्छे बुरे शुगून की मिषालें

अच्छे शुगून की मिषाल येह है कि हम किसी काम को जा रहे हों, किसी ने पुकारा : "या रशीद (या'नी ऐ हिदायत याफ़्ता)", "या सईद (या'नी ऐ सआ़दत मन्द)", "ऐ नेक बख़्त", हम ने ख़याल किया कि अच्छा नाम सुना है اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कामयाबी होगी या किसी बुज़ुर्ग की ज़ियारत हो गई इसे अपने ह़क़ में अच्छा समझा कि अब اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे अपने मक़्सद में कामयाबी मिलेगी जब कि बद शुगूनी की मिषाल येह है कि एक शख़्स सफ़र के इरादे से घर से निकला लेकिन रास्ते में काली बिल्ली रास्ता काट कर गुज़र गई, अब उस शख़्स ने येह यक़ीन कर लिया कि इस की नुहूसत की वजह से मुझे सफ़र में ज़रूर कोई नुक़्सान उठाना पड़ेगा और सफ़र करने से रुक गया तो समझ लीजिये कि वोह शख़्स बद शुगूनी में मुब्तला हो गया है। हमारे मुआ़शरे में जहालत की वजह से रवाज पाने वाली ख़राबियों में एक बद शुगूनी भी है जिस को बद फ़ाली भी कहा जाता है जब कि अ़रबी में इस को **त़ाइरुन**, **त़ैरुन** और **त़ियरतुन** कहा जाता है, अ़रब लोग त़ाइर (طائِر या'नी परन्दे) को उड़ा कर इस से फ़ाल लेते थे, परन्दे के दाईं त़रफ़ उड़ने से अच्छी फ़ाल लेते और बाईं त़रफ़ उड़ने और कव्वों के काईं काईं करने से बद शुगूनी (बुरी फ़ाल) लेते, इस के बा'द

मुत़लक़न बद शुगूनी के लिये **त़ाइरुन**, **त़ैरुन** और **त़ियरतुन** का लफ़्ज़ इस्ति'माल होने लगा। (تفسیر کبیر، ۵/۳٤٤ ملتقطًا) अ़रब लोग परन्दों के नामों, आवाज़ों, रंगों और इन के उड़ने की सम्तों से फ़ाल लिया करते थे चुनान्चे, उ़क़ाब (एक त़ाक़तवर शिकारी परन्दे) से मुसीबत, कव्वे से सफ़र और हुद हुद (एक ख़ूब सूरत परन्दे) से हिदायत की फ़ाल लेते इसी त़रह़ अगर परन्दे दाईं जानिब उड़ते तो अच्छा शुगून और बाईं जानिब उड़ते तो बद शुगूनी लिया करते थे। (بریقہ محمودیہ شرح طریقہ محمدیہ، باب الخلس والعشرون، ۲/۳۷۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शैत़ानी काम

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْعِیَافَۃُ وَالطِّیَرَۃُ وَالطَّرْقُ مِنَ الْجِبْتِ या'नी अच्छा या बुरा शुगून लेने के लिये परन्दा उड़ाना, बद शुगूनी लेना और त़र्क़ (या'नी कन्कर फेंक कर या रैत में लकीर खींच कर फ़ाल निकालना) शैत़ानी कामों में से है। (ابو داؤد، کتاب الطب، باب فی الخط و زجر الطیر، ٤/۲۲، الحدیث ۳۹۰۷)

बद शुगूनी ह़राम और नेक फ़ाल लेना मुस्तह़ब है

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद आफ़न्दी रूमी बिरकली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی **अत्त़रीक़तुल मुह़म्मदिया** में लिखते हैं : बद शुगूनी लेना ह़राम और नेक फ़ाल या अच्छा शुगून लेना मुस्तह़ब है।

(الطریقۃ المحمدیۃ، ۲/۱۷، ۲٤)

और मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان लिखते हैं : इस्लाम में नेक फ़ाल लेना जाइज़ है, बदफ़ाली (बद शुगूनी) लेना ह़राम है। (تفسیر نعیمی، ۹/۱۱۹)

अहम तरीन वज़ाहत

न चाहते हुवे भी बा'ज़ अवक़ात इन्सान के दिल में बुरे शुगून (अप शुकन) का ख़याल आ ही जाता है इस लिये किसी शख़्स के दिल में बद शुगूनी का ख़याल आते ही उसे **गुनहगार** क़रार नहीं दिया जाएगा क्यूंकि महूज़ दिल में बुरा ख़याल आ जाने की बिना पर सज़ा का हक़दार ठहराने का मत़लब किसी इन्सान पर उस की त़ाक़त से ज़ाइद बोझ डालना है और येह बात शरई तक़ाज़े के ख़िलाफ़ है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ (پ۳،البقرۃ:۲۸۶)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की त़ाक़त भर ।*

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुल्ला जीवन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आयत के तह़त तफ़्सीराते अह़मदिय्या में लिखते हैं : या'नी **अल्लाह** तआ़ला हर जानदार को इस बात का मुकल्लफ़ (या'नी ज़िम्मेदार) बनाता है जो उस की वुस्अ़त व क़ुदरत में हो । (التفسيرات الاحمدیه ،ص۱۸۹)

चुनान्चे, अगर किसी ने बद शुगूनी का ख़याल दिल में आते ही इसे झटक दिया तो उस पर कुछ इलज़ाम नहीं लेकिन अगर उस ने बद शुगूनी की ताषीर का ए'तिक़ाद रखा और इसी ए'तिक़ाद की बिना पर उस काम से रुक गया तो गुनाहगार होगा मषलन किसी चीज़ को मन्हूस समझ कर सफ़र या कारोबार करने से येह सोच कर रुक गया कि अब मुझे नुक़्सान ही होगा तो अब गुनहगार होगा । शैख़ुल इस्लाम शहाबुद्दीन इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की हैतमी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی अपनी किताब اَلزَّوَاجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِر में बद शुगूनी के बारे में दो ह़दीषें नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं :

पहली और दूसरी ह़दीषे पाक के ज़ाहिरी मा'ना की वजह से बद फ़ाली गुनाहे कबीरा शुमार किया जाता है और मुनासिब भी येही है कि येह हुक्म उस शख़्स के बारे में हो जो बद फ़ाली की ताषीर का ए'तिक़ाद रखता हो जब कि ऐसे लोगों के इस्लाम (या'नी मुसलमान होने न होने) में कलाम है। (الزواجر عن اقتراف الكبار ،باب السفر،١/٣٢٦)

करें न तंग ख़यालाते बद कभी, कर दे
शुऊ़र व फ़िक्र को पाकीज़गी अ़ता या रब

(वसाइले बख़्शिश, स.**93**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नाज़ुक तरीन मुआ़मला

रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلطِّيَرَةُ شِرْكٌ اَلطِّيَرَةُ شِرْكٌ ثَلَاثًا وَمَا مِنَّا اِلَّا وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يُذْهِبُهٗ بِالتَّوَكُّلِ या'नी बद फ़ाली लेना शिर्क है, बद फ़ाली लेना शिर्क है, येह तीन मरतबा फ़रमाया, (फिर इरशाद फ़रमाया :) हम में से हर शख़्स को ऐसा ख़याल आ जाता है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तवक्कुल के ज़रीए इसे दूर फ़रमा देता है। (ابو داؤد،كتاب الكهانة و الطير،باب فى الطيرة، ٤ / ٢٣،الحديث:٣٩١٠)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى इस ह़दीष की तशरीह़ में लिखते हैं : बद शुगूनी लेने को शिर्क क़रार दिया गया है क्यूंकि ज़मानए जाहिलिय्यत में लोगों का ए'तिक़ाद था कि बद शुगूनी के तक़ाज़े पर अ़मल करने से उन को नफ़्अ़ ह़ासिल होता है या उन से ज़रर और परेशानी दूर होती है

और जब इन्हों ने इस के तक़ाज़े पर अ़मल किया तो गोया उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क किया और इसे शिर्के ख़फ़ी कहा जाता है (जो कि गुनाह है) और अगर किसी शख़्स ने येह अ़क़ीदा रखा कि फ़ाइदा दिलाने और मुसीबत में मुब्तला करने वाली अल्लाह तआ़ला के सिवा और कोई ज़ात है जो एक मुस्तक़िल ताक़त है तो उस ने शिर्के जली का इर्तिकाब किया है (जो कि कुफ़्र है)।

(مرقاۃ المفاتیح ،کتاب الطب والرقی ، باب الفال والطیرۃ،۸/ ۳۴۹،تحت الحدیث:۴۵۸۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शिर्क में आलूदा हो गया

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَن رَدَّتْهُ الطِّيَرَةُ عَنْ شَيْءٍ فَقَدْ قَارَفَ الشِّرْكَ या'नी जो शख़्स बद शुगूनी की वजह से किसी चीज़ से रुक जाए वोह शिर्क में आलूदा हो गया।(1) (مجمع الزوائد،کتاب الطب، باب فیمن یتطیر ۵/ ۱۸۰، الحدیث:۸۴۱۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बद शुगूनी की मुख़्तलिफ़ शक्लें

बद शुगूनी लेना आ़लमी बीमारी है, मुख़्तलिफ़ ममालिक में रहने वाले मुख़्तलिफ़ लोग मुख़्तलिफ़ चीज़ों से ऐसी ऐसी बद शुगूनियां लेते हैं कि इन्सान सुन कर हैरान रह जाता है चुनान्चे,

مدینہ

1 : शिर्क कहने की वजह ऊपर गुज़र चुकी।

❁ कभी अन्धे, लंगड़े, एक आंख वाले और मा'ज़ूर लोगों से तो कभी किसी ख़ास परन्दे या जानवर को देख कर या उस की आवाज़ को सुन कर बद शुगूनी का शिकार हो जाते हैं ❁ कभी किसी वक़्त या दिन या महीने से बद फ़ाली लेते हैं ❁ कोई काम करने का इरादा किया और किसी ने त़रीक़ए कार में नुक़्स की निशानदही कर दी या उस काम से रुक जाने का कहा तो इस से बद शुगूनी लेते हैं कि अब तुम ने टांग अड़ा दी है तो येह काम नहीं हो सकेगा ❁ कभी एम्बूलेन्स (Ambulance) की आवाज़ से तो कभी फाइर ब्रिगेड़ (Fire brigade) की आवाज़ से बद शुगूनी में मुब्तला होते हैं ❁ कभी अख़्बारात में शाएअ़ होने वाले सितारों के खेल से अपनी ज़िन्दगी को ग़मगीन व रन्जीदा कर लेते हैं ❁ कभी मेहमान की रुख़्सती के बा'द घर में झाड़ू देने को मन्हूस ख़याल करते हैं ❁ कभी जूता उतारते वक़्त जूते पर जूता आने से बद शुगूनी लेते हैं ❁ किसी का कटा हुवा नाख़ुन पाउं के नीचे आ जाए तो आपस में दुश्मनी हो जाने की बद शुगूनी लेते हैं ❁ ईद जुमुआ़ के दिन हो जाए तो इसे हुकूमते वक़्त पर भारी समझते हैं ❁ कभी बिल्ली के रोने को मन्हूस समझते हैं तो कभी रात के वक़्त कुत्ते के रोने को ❁ मुर्ग़ा दिन के वक़्त अज़ान दे तो बद फ़ाली में मुब्तला हो जाते हैं यहां तक कि इसे ज़ब्ह़ कर डालते हैं ❁ पहला गाहक (ग्राहक) सौदा लिये बिग़ैर चला जाए तो दुकानदार इस से बद शुगूनी लेता है ❁ नई नवेली दुल्हन के घर आने पर ख़ान्दान का कोई शख़्स फ़ौत हो जाए या किसी औ़रत की सिर्फ़ बेटियां ही पैदा हों तो उस पर मन्हूस होने का लेबल लग जाता है

۞ ह़ामिला औ़रत को मय्यित के क़रीब नहीं आने देते कि बच्चे पर बुरा अषर पड़ेगा ۞ जवानी में बेवा हो जाने वाली औ़रत को मन्हूस जानते हैं, नीज़ येह भी समझते हैं कि ۞ ख़ाली क़ैंची चलाने से घर में लड़ाई होती है ۞किसी का कंघा इस्ति'माल करने से दोनों में झगड़ा होता है ۞ ख़ाली बरतनों या चम्मच आपस में टकराने से घर में लड़ाई झगड़ा हो जाता है ۞ जब बादलों में बिजली कड़क रही हो और सब से बड़ा बच्चा (पलूठा, पहलूठा) बाहर निकले तो बिजली इस पर गिर जाएगी ۞ बच्चे के दांत उलटे निकलें तो नन्हियाल (या'नी मामूं वग़ैरा) पर भारी होते हैं ۞ दूध पीते बच्चे के बालों में कंघी की जाए तो उस के दांत टेढ़े निकलते हैं ۞ छोटा बच्चा किसी की टांग के नीचे से गुज़र जाए तो उस का क़द छोटा रह जाता है ۞ बच्चा सोया हुवा हो उस के ऊपर से कोई फलांग कर गुज़र जाए तो बच्चे का क़द छोटा रह जाता है ۞ मग़रिब के बा'द दरवाज़े (डेली) में नहीं बैठना चाहिये क्यूंकि बलाएं गुज़र रही होती हैं ۞ ज़लज़ले के वक़्त भागते हुवे जो ज़मीन पर गिर गया वोह गूंगा हो जाएगा ۞ रात को आईना देखने से चेहरे पर झुरियां पड़ती हैं ۞ उंगलियां चटख़ाने से नुहूसत आती है[1] ۞ सूरज ग्रहन के वक़्त ह़ामिला औ़रत छुरी से कोई चीज़ न

---

1 : उंगलियां चटख़ाने के तीन अह़काम (**अलिफ़**) नमाज़ के दौरान मकरूहे तह़रीमी है और तवाबेए़ नमाज़ में मषलन नमाज़ के लिये जाते हुवे, नमाज़ का इन्तिज़ार करते हुवे भी उंगलियां चटख़ाना मकरूह है (बहारे शरीअ़त,1/625) (**बा**) ख़ारिजे नमाज़ में (या'नी तवाबेअ़ नमाज़ में भी न हो) बिग़ैर ह़ाजत के उंगलियां चटख़ाना मकरूहे तन्ज़ीही है (**जीम**) ख़ारिजे नमाज़ में किसी ह़ाजत के सबब मषलन उंगलियों को आराम देने के लिये उंगलियां चटख़ाना मुबाह़ (या'नी बिला कराहत जाइज़) है (رَدُّالْمُحتار، ۲/ ۴۹۳-۴۹۴)

काटे कि बच्चा पैदा होगा तो उस का हाथ या पाउं कटा या चिरा हुवा होगा ۞ नौ मौलूद (या'नी बहुत छोटे बच्चे) के कपड़े धो कर निचोड़े नहीं जाते कि इस से बच्चे के जिस्म में दर्द होगा ۞ कभी नम्बरों से बद फ़ाली लेते हैं (बिल ख़ुसूस यूरोपी मुमालिक के रहने वाले), इसी लिये इन की बड़ी बड़ी इमारतों में **13** नम्बर वाली मन्ज़िल नहीं होती (या'नी बारहवीं मन्ज़िल के बा'द वाली मन्ज़िल को चौदहवीं मन्ज़िल क़रार दे लेते हैं), इसी त़रह़ इन के अस्पतालों में **13** नम्बर वाला बिस्तर या कमरा भी नहीं पाया जाता क्यूंकि वोह इस नम्बर को मन्हूस समझते हैं ۞ रात के वक़्त कंघी चोटी करने या नाख़ुन काटने से नुहूसत आती है ۞ घर की छत या दीवार पर उल्लू बैठने से नुहूसत आती है (जब कि मग़रिबी मुमालिक में उल्लू को बा बरकत समझा जाता है) ۞ मग़रिब की अज़ान के वक़्त तमाम लाइटें रोशन कर देनी चाहिये वरना बलाएं उतरती हैं।

मज़कूरा बाला बद शुगूनियों के इलावा भी मुख़्तलिफ़ मुआ़शरों, क़ौमों, बरादरियों में मुख़्तलिफ़ बद शुगूनियां पाई जाती हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बद शुगूनी के नुक़्सानात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बद शुगूनी इन्सान के लिये दीनी व दुन्यवी दोनों ए'तिबार से बहुत ज़ियादा ख़त़रनाक है। येह इन्सान को वस्वसों की दलदल में उतार देती है चुनान्चे, वोह हर छोटी बड़ी चीज़ से डरने लगता है यहां तक कि वोह अपनी परछाई (या'नी साए) से भी ख़ौफ़ खाता है। वोह इस वहम में

मुब्तला हो जाता है कि दुन्या की सारी बद बख़्ती व बद नसीबी इसी के गिर्द जम्अ़ हो चुकी है और दूसरे लोग पुर सुकून ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। ऐसा शख़्स अपने प्यारों को भी वहमी निगाह से देखता है जिस से दिलों में कदूरत (या'नी दुश्मनी) पैदा होती है। बद शुगूनी की बातिनी बीमारी में मुब्तला इन्सान ज़ेहनी व क़ल्बी तौ़र पर मफ़्लूज (या'नी नाकारा) हो कर रह जाता है और कोई काम ढंग से नहीं कर सकता। इमाम अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद मावरदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं اِعْلَمْ اَنَّه لَيْسَ شَيْءٌ اَضَرَّ بِالرَّأْيِ وَلَا اَفْسَدَ لِلتَّدبِيرِ مِن اِعتِقَادِ الطِّيَرَةِ जान लो ! बद शुगूनी से ज़ियादा फ़िक्र को नुक़्सान पहुंचाने वाली और तदबीर को बिगाड़ने वाली कोई शै नहीं है। (ادب الدنیا والدین، ص ٢٧٤)

कषीर अह़ादिषे मुबारका में भी बद शुगूनी के नुक़्सानात से ख़बर दार किया गया है चुनान्चे,

(1) वोह हम में से नहीं

हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बदफ़ाली लेने वालों से अपनी बेज़ारी का इज़हार इन अलफ़ाज़ में फ़रमाया : لَيسَ مِنَّا مَن تَطَيَّرَ وَلَاتُطُيِّرَ لَه या'नी जिस ने बद शुगूनी ली और जिस के लिये बद शुगूनी ली गई वोह हम में से नहीं है (या'नी हमारे त़रीक़े पर नहीं है) (المعجم الکبیر، ١٨/ ١٦٢، الحدیث ٣٥٥ و فیض القدیر، ٣/ ٢٨٨، تحت الحدیث: ٣٢٠٦)

(2) बुलन्द दरजों तक नहीं पहुंच सकता

शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ثَلَاثٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ لَمْ يَنَلِ الدَّرَجَاتِ الْعُلٰى مَنْ تَكَهَّنَ اَوِ اسْتُقْسَمَ اَوْ رَدَّهُ مِنْ سَفَرٍ طِيَرَةٌ

या'नी तीन चीज़ें जिस शख़्स में हों वोह बुलन्द दरजात तक नहीं पहुंच सकता (1) जो अपनी अटकल से ग़ैब की ख़बर दे (या'नी आइन्दा की बात बताए) या (2) फ़ाल के तीरों से अपनी क़िस्मत मा'लूम करे या (3) बद शुगूनी के सबब अपने सफ़र से रुक जाए। (تاریخ ابن عساکر، رجاء بن حیوۃ، ۱۸/ ۹۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बद शुगूनी के भयानक नताइज

❁ बद शुगूनी का शिकार होने वालों का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिमाद और तवक्कुल कमज़ोर हो जाता है ❁ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में बदगुमानी पैदा होती है ❁ तक़दीर पर ईमान कमज़ोर होने लगता है ❁ शैतानी वसवसों का दरवाज़ा खुलता है ❁ बदफ़ाली से आदमी के अन्दर तवह्हुम परस्ती, बुज़दिली, डर और ख़ौफ़, पस्त हिम्मती और तंग दिली पैदा हो जाती है ❁ नाकामी की बहुत सी वुजूहात हो सकती हैं मषलन काम करने का त़रीक़ा दुरुस्त न होना, ग़लत़ वक़्त और ग़लत़ जगह पर काम करना और ना तजरिबा कारी लेकिन बद शुगूनी का आ़दी शख़्स अपनी नाकामी का सबब नुहूसत को क़रार देने की वजह से अपनी इस्लाह़ से भी महरूम रह जाता है ❁ बद शुगूनी की वजह से अगर रिश्ते नाते तोड़े जाएं तो आपस की नाचाक़ियां जनम लेती हैं ❁ जो लोग अपने ऊपर बद फ़ाली का दरवाज़ा खोल लेते हैं उन्हें हर चीज़ मन्हूस नज़र आने लगती है, किसी काम के लिये घर से निकले और काली बिल्ली ने रास्ता काट लिया तो येह ज़ेहन बना लेते हैं कि अब हमारा काम नहीं होगा और वापस घर आ गए, एक शख़्स

सुब्ह़ सवेरे अपनी दुकान खोलने जाता है रास्ते में कोई ह़ादिषा पेश आया तो समझ लेता है कि आज का दिन मेरे लिये मन्हूस है लिहाज़ा आज मुझे नुक़्सान होगा यूं इन का निज़ामे ज़िन्दगी दरहम बरहम हो कर रह जाता है ۞ किसी के घर पर उल्लू की आवाज़ सुन ली तो ए'लान कर दिया कि इस घर का कोई फ़र्द मरने वाला है या ख़ान्दान में झगड़ा होने वाला है, जिस के नतीजे में इस घर वालों के लिये मुसीबत खड़ी हो जाती है ۞ नया मुलाज़िम अगर कारोबारी डील न कर पाए और ऑर्डर हाथ से निकल जाए तो फ़ेक्ट्री मालिक इसे मन्हूस क़रार दे कर नोकरी से निकाल देता है ۞ नई दुल्हन के हाथों अगर कोई चीज़ गिर कर टूट फूट जाए तो इस को मन्हूस समझा जाता है और बात बात पर उस की दिल आज़ारी की जाती है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बद शुगूनी और त़रह़ त़रह़ के ज़ाहिरी व बात़िनी गुनाहों से बचने का जज़्बा पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का मदनी माह़ोल किसी ने'मते उ़ज़्मा से कम नहीं, इस से हर दम वाबस्ता रहिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस से मुन्सलिक होने वालों की ज़िन्दगियों में ह़ैरत अंगेज़ तब्दीलियां बल्कि मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाता है। इस ज़िम्न में एक **मदनी बहार** मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे,

आस्मान पर से काग़ज़ का पुरज़ा गिरा

क़स्बा कॉलोनी (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : हमारे ख़ानदान में लड़कियां काफ़ी थीं, चचा जान के यहां सात लड़कियां तो बड़े भाई जान के यहां **9** लड़कियां ! मेरी शादी हुई तो मेरे यहां भी लड़की की विलादत हुई। सब को तशवीश सी होने लगी और आज कल के एक आ़म ज़ेह्न के मुताबिक़ सब को वहम सा होने लगा कि किसी ने जादू कर के अवलादे नरीना का सिलसिला बन्द करवा दिया है ! मैं ने निय्यत की, कि मेरे यहां लड़का पैदा हुवा तो **30 दिन के मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र करूंगा। मेरी मदनी मुन्नी की अम्मी ने एक बार ख़्वाब देखा कि आस्मान से कोई काग़ज़ का पुरज़ा उन के क़रीब आ कर गीरा, उठा कर देखा तो उस पर लिखा था, **बिलाल**। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **30** दिन के मदनी क़ाफ़िले की बरकत से मेरे यहां यक़ीनन **मदनी मुन्ने** की आमद हो गई ! न सिर्फ़ एक बल्कि आगे चल कर यके बा'द दीगरे **दो मदनी मुन्ने** मज़ीद पैदा हुवे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम देखिये ! **30 दिन के मदनी क़ाफ़िले** की बरकत सिर्फ़ मुझ तक महदूद न रही। हमारे ख़ानदान में जो भी अवलादे नरीना से महरूम था सब के यहां ख़ुशियों की बहारें लुटाते हुवे **मदनी मुन्ने** तवल्लुद (या'नी पैदा) हुवे। येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं अ़लाक़ाई मदनी क़ाफ़िला ज़िम्मेदार की हैषिय्यत से मदनी क़ाफ़िलों की बहारें लुटाने की कोशिशें कर रहा हूं।

आ के तुम बा अदब, देख लो फ़ज़्ले रब मदनी मुन्ने मिलें, क़ाफ़िलें में चलो
खोटी क़िस्मत खरी, गोद होगी हरी मुन्ना मुन्नी मिलें, क़ाफ़िले में चलो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **मदनी क़ाफ़िले** की बरकत से किस त़रह़ मन की मुरादें बर आती हैं ! उम्मीदों की सूखी खेतियां हरी हो जाती हैं, दिलों की पज़् मुर्दा (या'नी मुरझाई हुई) कलियां खिल उठती हैं और ख़ानुमां बरबादों की ख़ुशियां लौट आती हैं। मगर येह ज़ेह्न में रहे कि ज़रूरी नहीं हर एक की दिली मुराद लाज़िमी ही पूरी हो, बारहा ऐसा होता है कि बन्दा जो त़लब करता है वोह उस के ह़क़ में बेहतर नहीं होता और उस का सुवाल पूरा नहीं किया जाता। उस की मुंह मांगी मुराद न मिलना ही उस के लिये इन्आ़म होता है। मषलन येही कि वोह **अवलादे नरीना** मांगता है मगर उस को मदनी मुन्नियों से नवाज़ा जाता है और येही उस के ह़क़ में बेहतर भी होता है। चुनान्चे, पारह दूसरा सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 216 में रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ का इरशादे ह़क़ीक़त बुन्याद है :

عَسٰۤى اَنۡ تَكۡرَهُوۡا شَيۡـئًا وَّهُوَ خَيۡرٌ لَّكُمۡ‌ ۚ وَعَسٰۤى اَنۡ تُحِبُّوۡا شَيۡـئًا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمۡ‌ ؕ وَاللّٰهُ يَعۡلَمُ وَاَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٢١٦﴾

(پ۲، البقرة:۲۱٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर हो और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने रमज़ान, 1/1061 बित्तग़य्युरे क़लील)

बद शुगूनी लेना ग़ैर मुस्लिमों का त़रीक़ा है

किसी शख़्स या चीज़ को मन्हूस क़रार देना मुसलमानों का शैवा नहीं येह तो ग़ैर मुस्लिमों का पुराना त़रीक़ा है। इस क़िस्म के **4** वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा हों :

(1) फ़िरऔ़नियों का ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से बद शुगूनी लेना

पारह **9** सूरतुल आ'राफ़ की आयत **131** में है :

فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ؕ اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۱﴾

(پ۹،الاعراف:۱۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो जब उन्हें भलाई मिलती कहते येह हमारे लिये है और जब बुराई पहुंचती तो मूसा और उस के साथ वालों से बद शुगूनी लेते, सुन लो उन के नसीबा की शामत तो* **अल्लाह** *के यहां है लेकिन उन में अकषर को ख़बर नहीं।*

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयत के तह़्त लिखते हैं : जब फ़िरऔ़नियों पर कोई मुसीबत (क़ह़्त़ साली वग़ैरा) आती थी तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और उन के मोअमिनीन साथी से बद शुगूनी लेते थे, कहते थे कि जब से येह लोग हमारे मुल्क में ज़ाहिर हुवे हैं तब से हम पर मुसीबतें बलाएं आने लगीं। (मुफ़्ती साह़िब मज़ीद लिखते हैं :) इन्सान मुसीबतों, आफ़तों में फंस कर तौबा कर लेता है मगर वोह लोग ऐसे सरकश थे कि इन सब से उन की

आंखें न खुलीं बल्कि उन का कुफ़्र व सरकशी और ज़ियादा हो गई कि जब कभी हम उन को आराम देते हैं, अरज़ानी (चीज़ों की फ़रावानी) वग़ैरा तो वोह कहते कि येह आराम व राहत हमारी अपनी चीज़ें हैं, हम इस के मुस्तहिक़ हैं नीज़ येह आराम हमारी अपनी कोशिशों से हैं। (तफ़्सीरे नईमी 9/117)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) क़ौमे षमूद ने ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से बद शुगूनी ली

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को क़ौमे षमूद की त़रफ़ मबऊष किया गया कि उन्हें एक रब عَزَّوَجَلَّ की इबादत की त़रफ़ बुलाएं। जब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन्हें इस की दा'वत पेश की तो एक गुरौह आप पर ईमान ले आया जब कि दूसरा गुरौह अपने कुफ़्र पर क़ाइम रहा और ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को चेलेन्ज देने लगा कि ऐ सालेह़ ! जिस अ़ज़ाब का तुम वा'दा देते हो उस को लाओ अगर रसूलों में से हो ! जवाबन आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन को समझाते : तुम आ़फ़िय्यत की जगह मुसीबत व अ़ज़ाब क्यूं मांगते हो, अ़ज़ाब नाज़िल होने से पहले कुफ़्र से तौबा कर के ईमान ला कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश क्यूं नहीं मांगते शायद तुम पर रह़्म हो और दुन्या में अ़ज़ाब न किया जाए मगर क़ौम ने तकज़ीब की इस के बाइष बारिश रुक गई, क़ह़त़ हो गया, लोग भूके मरने लगे। इस को उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तशरीफ़ आवरी की त़रफ़ निस्बत किया और आप की आमद को बद शुगूनी

समझा और बोले : हम ने बुरा शुगून लिया तुम से और तुम्हारे साथियों से । ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : तुम्हारी बद शुगूनी **अल्लाह** के पास है बल्कि तुम लोग फ़ितने में पड़े हो या'नी आज़माइश में डाले गए या अपने दीन के बाइ़ष अ़ज़ाब में मुब्तला हो । (ماخوذ از سورۃ النمل، پ۱۹، آیت: ٤٥ تا ٤٧ مع تفسیر خزائن العرفان، ص ٧٠٦)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) मुबल्लिग़ीन को मन्हूस कहने वाले बद बख़्त लोग

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने दो ह़वारियों सादिक़ व मसदूक़ को अन्त़ाकिय्या भेजा ताकि वहां के लोगों को जो बुत परस्त थे दीने ह़क़ की दा'वत दें । जब येह दोनों शहर के क़रीब पहुंचे तो इन्हों ने एक बुढ्ढे शख़्स को देखा कि बकरियां चरा रहा है । उस शख़्स का नाम ह़बीब नज्जार था उस ने इन का ह़ाल दरयाफ़्त किया, इन दोनों ने कहा कि हम ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के भेजे हुवे हैं तुम्हें दीने ह़क़ की दा'वत देने आए हैं कि बुत परस्ती छोड़ कर ख़ुदा परस्ती इख़्तियार करो । ह़बीब नज्जार ने निशानी दरयाफ़्त की तो इन्हों ने कहा कि निशानी येह है कि हम बीमारों को अच्छा करते हैं, अन्धों को बीना करते हैं, बर्स वाले का मरज़ दूर कर देते हैं । ह़बीब नज्जार का एक बेटा दो साल से बीमार था, इन्हों ने उस पर हाथ फेरा वोह तन्दुरुस्त हो गया, ह़बीब ईमान लाए और इस वाक़िए की ख़बर मश्हूर हो गई यहां तक कि कषीर लोगों ने इन के हाथों अपने अमराज़ से शिफ़ा पाई । येह ख़बर पहुंचने पर बादशाह ने इन्हें बुला कर कहा : क्या हमारे

मा'बूदों के सिवा और कोई मा'बूद है ? इन दोनों ने कहा : "हां ! वोही जिस ने तुझे और तेरे मा'बूदों को पैदा किया।" फिर लोग इन के दरपे हुवे और इन्हें मारा और येह दोनों क़ैद कर लिये गए फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते शमऊ़न (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को भेजा वोह अजनबी बन कर शहर में दाख़िल हुवे और बादशाह के मुसाह़िबीन व मुक़र्रबीन से रस्मो राह पैदा कर के बादशाह तक पहुंचे और उस पर अपना अषर पैदा कर लिया। जब देखा कि बादशाह इन से ख़ूब मानूस हो गया है तो एक रोज़ बादशाह से ज़िक्र किया कि जो दो आदमी क़ैद किये गए हैं क्या उन की बात सुनी गई थी ? वोह क्या कहते थे ? बादशाह ने कहा कि नहीं जब उन्हों ने नए दीन का नाम लिया फ़ौरन ही मुझे ग़ुस्सा आ गया। ह़ज़रते शमऊ़न (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने कहा कि अगर बादशाह की राए हो तो उन्हें बुलाया जाए, देखें उन के पास क्या है ? चुनान्चे, वोह दोनों बुलाए गए, ह़ज़रते शमऊ़न (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने उन से दरयाफ़्त किया : तुम्हें किस ने भेजा है ? उन्हों ने कहा : उस **अल्लाह** ने जिस ने हर चीज़ को पैदा किया और हर जानदार को रोज़ी दी और जिस का कोई शरीक नहीं, ह़ज़रते शमऊ़न (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने कहा : उस की मुख़्तसर सिफ़त बयान करो। उन्हों ने कहा : वोह जो चाहता है करता है, जो चाहता है हुक्म देता है। ह़ज़रते शमऊ़न (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने कहा : तुम्हारी निशानी क्या है ? उन्हों ने कहा : "जो बादशाह चाहे।" तो बादशाह ने एक अन्धे लड़के को बुलाया, उन्हों ने दुआ़ की वोह फ़ौरन बीना (या'नी देखने वाला) हो गया। ह़ज़रते शमऊ़न (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने

बादशाह से कहा कि अब मुनासिब येह है कि तू अपने मा'बूदों से कह कि वोह भी ऐसा ही कर के दिखाएं ताकि तेरी और इन की इ़ज़्ज़त ज़ाहिर हो। बादशाह ने ह़ज़रते शमऊ़न (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से कहा कि तुम से कुछ छुपाने की बात नहीं है, हमारा मा'बूद न देखे, न सुने, न कुछ बिगाड़ सके, न बना सके फिर बादशाह ने इन दोनों ह़वारियों से कहा कि अगर तुम्हारे मा'बूद को मुर्दे के ज़िन्दा कर देने की क़ुदरत हो तो हम उस पर ईमान ले आएं। इन्हों ने कहा : हमारा मा'बूद हर शै पर क़ादिर है, बादशाह ने एक किसान के लड़के को मंगाया जिस को मरे हुवे सात दिन हो गए थे और जिस्म ख़राब हो चुका था, बदबू फेल रही थी, इन की दुआ़ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस को ज़िन्दा किया और वोह उठ खड़ा हुवा और कहने लगा कि मैं मुशरिक मरा था मुझ को जहन्नम की सात वादियों में दाख़िल किया गया, मैं तुम्हें आगाह करता हूं कि जिस दीन पर तुम हो बहुत नुक़्सान देह है, ईमान लाओ और कहने लगा कि आस्मान के दरवाज़े खुले और एक ह़सीन जवान मुझे नज़र आया जो इन तीनों शख़्सों की सिफ़ारिश करता है। बादशाह ने कहा : कौन तीन ? उस ने कहा : एक शमऊ़न और दो येह (क़ैदी)। (येह सुन कर) बादशाह को तअ़ज्जुब हुवा। जब ह़ज़रते शमऊ़न (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने देखा कि इन की बात बादशाह में अषर कर गई तो उन्हों ने बादशाह को नसीह़त की तो वोह ईमान लाया और उस की क़ौम के कुछ लोग ईमान लाए और कुछ नहीं लाए बल्कि कहने लगे : हम तुम्हें मन्हूस समझते हैं जब से तुम आए हो बारिश ही नहीं हुई, बेशक तुम अगर अपने दीन की तब्लीग़ से बाज़ न आए तो ज़रूर हम तुम्हें संगसार करेंगे और बेशक हमारे

हाथों तुम पर दुख की मार पड़ेगी। उन्हों ने फ़रमाया : तुम्हारी नुहूसत (या'नी तुम्हारा कुफ़्र) तो तुम्हारे साथ है, क्या इस पर बिदकते हो कि तुम समझाए गए और तुम्हें इस्लाम की दा'वत दी गई ! बल्कि तुम ह़द से बढ़ने वाले लोग हो ज़लाल व तुग़यान में और येही बड़ी नुहूसत है। (سورۂ یٰسٓ آیت ۱۳ تا ۱۹ مع تفسیر خزائن العرفان، ص ۸۱۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) यहूदो मुनाफ़िक़ीन ने आमदे मुस्त़फ़ा से बद शुगूनी ली

सूरतुन्निसा आयत 78 में है :

وَ اِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ یَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ سَیِّئَةٌ یَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ هٰۤؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا یَكَادُوْنَ یَفْقَهُوْنَ حَدِیْثًا ۝۷۸

(پ ۵، النساء: ۷۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें कोई भलाई पहुंचे तो कहें येह **अल्लाह** की त़रफ़ से है और उन्हें कोई बुराई पहुंचे तो कहें येह हुज़ूर की त़रफ़ से आई तुम फ़रमा दो सब **अल्लाह** की त़रफ़ से है तो उन लोगों को क्या हुवा कोई बात समझते मा'लूम ही नहीं होते !*

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयत के तह़्त लिखते हैं : जब हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हिजरत फ़रमा कर मदीने पाक (زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا) में रोनक़ अफ़्रोज़ हुवे और यहूदे मदीना को दा'वते इस्लाम दी तो अकषर यहूद ने सरकशी करते हुवे हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की मुख़ालफ़त पर कमर बांध ली और इन में से बा'ज़ लोग **तक़िय्या** कर के (या'नी अपने कुफ़्र को छुपाते हुवे) कलिमा पढ़ कर मुसलमानों में घुस आए और त़रह़ त़रह़ से

मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचाने लगे जिस की सज़ा में कभी वहां वक़्त पर बारिश न होती कभी फल कम होते जैसे कि गुज़श्ता उम्मतों का ह़ाल होता रहा है तो मरदूद यहूदी और मुनाफ़िक़ीन बोले कि نعوذبالله इन साहिब (मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के क़दम आने से हमारे हां की ख़ैरो बरकत कम हो गई, येह सब मुसीबतें इन की आमद से हुईं, इन की तरदीद में येह आयते करीमा नाज़िल हुई। (मुफ़्ती साहिब मज़ीद लिखते हैं :) अब भी बा'ज़ कुफ़्फ़ार मुसलमानों को मन्हूस कहते हैं बल्कि बा'ज़ जाहिल मुसलमान नमाज़ी परहेज़गार मुत्तक़ी मुसलमान को मन्हूस और इन के नेक आ'माल को नुहूसत कहते सुने गए, येह सब इन्हीं शयात़ीन का तरका (या'नी छोड़ी हुई चीज़) है। (तफ़्सीरे नईमी, 5/240)

हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद से यषरब मदीना बना

मुफ़्ती साहिब मज़ीद लिखते हैं : उस ज़मानए पाक में सिद्दीक़ीन तो कहते थे : हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की तशरीफ़ आवरी से हमारा यषरब मदीना शरीफ़ बन गया, यहां की ख़ाक शिफ़ा, यहां की आबो हवा इलाज हो गए मगर मुनाफ़िक़ीन व यहूद या'नी ज़िन्दीक़ीन कहते थे कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के क़दम से मदीने की बरकतें उड़ गईं,.....

आ'ला ह़ज़रत (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ने क्या ख़ूब फ़रमाया है :

कोई जान बस के महक रही, किसी दिल में इस से खटक रही !
नहीं इस के जल्वे में यक रही कहीं फूल है कहीं ख़ार है

हम ने अ़र्ज़ किया है :

त़यबा की ज़ीनत इन ही के दम से का'बा की रोनक़ इन के क़दम से !!
का'बा ही क्या है सारे जहां में धूम है इन की कौनो मकां में !

या'नी हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के दम क़दम से मदीने के बाशिन्दे आपस में शीरो शकर हो गए, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के दम से मदीना तमाम दुन्या का मलजा व मावा बन गया, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की वजह से मदीने की सदहा तारीख़ें लिखी गईं और येह तारीख़ी मक़ाम हो गया, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की वजह से मदीने की ता'रीफ़ में हज़ार हां क़सीदे लिखे गए, किसी शहर को येह इ़ज़्ज़त न मिली, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की वजह से मदीने की त़रफ़ तमाम मख़्लूक़ खिचने लगी, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के क़दम से मदीने को मदीनए मुनव्वरा कहा जाने लगा येह सब बहारें इन के दम क़दम की हैं। (तफ़्सीरे नई़मी, 5/243)

कर के हिजरत यहां आ गए मुस्त़फ़ा रोशनी आज घर घर मदीने में है
जानते हो मदीना है क्यूं दिल पसन्द दोनों आ़लम का दिलबर मदीने में है
नूर की देखो बरसात है चार सू क्या समां कैफ़ आवर मदीने में है
है मदीने का रुत्बा बड़ा ख़ुल्द से क्यूं कि महबूबे दावर मदीने में है

सब्ज़ गुम्बद का "अ़त्तार" मन्ज़र तो देख
किस क़दर कैफ़ आवर मदीने में है (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1 : मुकम्मल कलाम पढ़ने के लिये "**वसाइले बख़्शिश**" (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का सफ़ह़ा नम्बर **150** मुलाह़ज़ा कीजिये ।

बुराई की निस्बत अपनी त़रफ़ करनी चाहिये

सुरतुन्निसा आयत **78** में इरशाद होता है :

مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۫ وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ (پ۵،النساء:۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ सुनने वाले तुझे जो भलाई पहुंचे वोह* ***अल्लाह*** *की त़रफ़ से है और जो बुराई पहुंचे वोह तेरी अपनी त़रफ़ से है।*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस आयत के तह़्त लिखते हैं : कि तू ने ऐसे गुनाहों का इर्तिकाब किया कि तू इस का मुस्तह़िक़ हुवा। **मस्अला :** यहां बुराई की निस्बत बन्दे की त़रफ़ मजाज़ है और ऊपर जो मज़्कूर हुवा वोह ह़क़ीक़त थी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि बदी की निस्बत बन्दे की त़रफ़ बर सबीले अदब है, ख़ुलासा येह कि बन्दा जब फ़ाइले ह़क़ीक़ी की त़रफ़ नज़र करे तो हर चीज़ को उसी की त़रफ़ से जाने और जब अस्बाब पर नज़र करे तो बुराइयों को अपनी शामते नफ़्स के सबब से समझे।

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स.**177**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुशरिकीन बद शुगूनी लिया करते थे

ह़ाफ़िज़ शहाबुद्दीन अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर अस्क़लानी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى लिखते हैं : ज़मानए जाहिलिय्यत में मुशरिकीन परन्दों पर ए'तिमाद करते थे, जब इन में से कोई शख़्स किसी

काम के लिये निकलता तो वोह परन्दे की त़रफ़ देखता अगर वोह परन्दा दाईं त़रफ़ उड़ता तो वोह इस से नेक शुगून लेता और अपने काम पर रवाना हो जाता और अगर वोह परन्दा बाईं जानिब उड़ता तो वोह इस से बद शुगूनी लेता और लौट आता, बा'ज़ अवक़ात वोह किसी मुहिम पर रवाना होने से पहले ख़ुद परन्दे को उड़ाते थे, फिर जिस जानिब वोह उड़ता था उस पर ए'तिमाद कर के उस के मुत़ाबिक़ मुहिम पर रवाना होते या रुक जाते। जब शरीअ़त आ गई तो उन को इस त़रीक़े से रोक दिया। (فتح الباری،کتاب الطب،باب الطیرۃ،۱۱/ ۱۸۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

येह तुम्हारे ज़ेह्न का वहम है

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विय्या बिन ह़कम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम ज़मानए जाहिलिय्यत में कुछ काम करते थे (आप हमें इन का हुक्म बताइये ?) हम काहिनों के पास जाया करते थे, सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : काहिनों के पास मत जाओ, मैं ने पूछा : हम (परन्दों वग़ैरा से) शुगून भी लेते थे ? इरशाद फ़रमाया : येह एक चीज़ (या'नी ख़याल) है जिसे तुम में से कोई अपने दिल में पाता है लेकिन येह तुम्हें (तुम्हारी ह़ाजत वग़ैरा से) न रोक दे।

(مسلم،کتاب السلام،باب تحریم الکھانۃ و اتیان الکھان ص۱۲۲۳، الحدیث۵۳۷ مع مرقاۃ المفاتیح،کتاب الطب و الرقی،الفصل الاول،۸/ ۳۵۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

परन्दे भी तक़्दीर के मुताबिक़ ही उड़ते हैं

हज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं : मैं हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : मुझे कोई ऐसी ह़दीष बयान कीजिये जो आप ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़ुद सुनी हो ? उम्मुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जवाब दिया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : परन्दे तक़्दीर के मुताबिक़ उड़ते हैं[1] और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अच्छी फ़ाल को पसन्द फ़रमाते थे । (مسند امام احمد،٩/٤٥٠، الحديث٢٥٠٣٦)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बद फ़ाली की कुछ ह़क़ीक़त नहीं है

बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़दवा नहीं (या'नी मरज़ लगना और मुतअ़द्दी होना नहीं) है और न बदफ़ाली है और न हाम्मह है, न सफ़र और मजज़ूम से भागो, जैसे शेर से भागते हो । (بخارى، كتاب الطب، باب الجذام، ٤/٢٤، حديث: ٥٧٠٧، و عمدة القارى، كتاب الطب، باب الجذام، ١٤/٦٩٢، تحت الحديث: ٥٧٠٧)

मदीना

1 : इस लिये इन के दाएं बाएं उड़ने में कोई ताषीर नहीं है । (التيسير بشرح جامع الصغير،٢/ ١٢٣)

शारेह़ बुख़ारी मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِي ने इस ह़दीष की जो शर्ह़ फ़रमाई है इस से ह़ासिल होने वाले चन्द मदनी फूल पेश करता हूं ۞ अहले जाहिलिय्यत का ए'तिक़ाद था कि बा'ज़ बीमारियां ऐसी हैं जो दूसरे को लग जाती हैं, जैसे जुज़ाम, ख़ारिश, त़ाऊन वग़ैरा, इस की हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नफ़ी फ़रमाई (रद्द फ़रमाया)। एक आ'राबी ह़ाज़िर हुवे, उन्हों ने अ़र्ज़ की, कि हमारे ऊंट साफ़ सुथरे अच्छे होते हैं, इस में एक ख़ारिश ज़दा ऊंट आता है और सब को ख़ारिश ज़दा बना देता है, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया किस ने पहले को ख़ारिश ज़दा बनाया ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** ने। फ़रमाया : इसी त़रह़ सब को **अल्लाह** ने ख़ारिश ज़दा बनाया। ۞ अ़रब की आ़दत थी कि जब सफ़र के लिये निकलते तो अगर कोई परन्दा दाहिने त़रफ़ से उड़ता तो इस को मुबारक जानते और अगर बाईं त़रफ़ उड़ता तो इस को बुरा शुगून जानते, इस क़िस्म के और भी तवह्हुमात फैले हुवे थे और आज हमारे भी मुआ़शरे में फैले हुवे हैं। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन तमाम तवह्हुमात (वहमों) को दफ़्अ़ (या'नी दूर) फ़रमाया। ۞ **''हाम्मह''** एक चिड़या का नाम है, एक क़ौल है कि येह उल्लू है, अहले जाहिलिय्यत का ए'तिक़ाद था कि येह चिड़या जब किसी घर पर बैठती है तो उस घर में कोई मुसीबत नाज़िल होती है। आज भी जाहिलों में येह मश्हूर है कि उल्लू जिस घर में बोले या जिस घर की छत पर बोले उस घर में कोई मुसीबत नाज़िल होगी। एक क़ौल येह है कि अहले जाहिलिय्यत का ए'तिक़ाद था कि मुर्दे की हड्डियां ''हाम्मह'' हो कर उड़ती हैं, एक क़ौल येह है

कि उन का ए'तिक़ाद येह था कि जिस मक़्तूल का क़िसास (या'नी बदला) न लिया जाए वोह "हाम्मह" हो जाता है, और वोह कहता रहता है मुझे पिलाओ मुझे पिलाओ, जब इस का क़िसास ले लिया जाता है तो वोह उड़ जाता है। इन सब तवह्हुमात का हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रद्द फ़रमाया कि येह सब कुछ नहीं है।

(नुज़्हतुल क़ारी, 5/502)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या घर बदलने से बरकत ख़त्म हो जाती है ?

मन्क़ूल है कि एक शख़्स नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम एक मकान में रहते थे, इस में हमारे अहलो इ़याल कषीर और माल कषरत से था फिर हम ने मकान बदला चुनान्चे, हमारे माल और अहलो इ़याल कम हो गए। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : छोड़ो ! ऐसा कहना बुरी बात है।

(ادب الدنیا والدین للماوردی، ص۲۷٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बद शुगूनी लेना मेरा वहम था

तफ़्सीरे रूहुल बयान में है कि एक शख़्स का बयान है कि एक मरतबा मैं इतना तंगदस्त हो गया कि भूक मिटाने के लिये मिट्टी खानी पड़ी मगर फिर भी भूक सताती रही। मैं ने सोचा काश ! कोई ऐसा शख़्स मिल जाए जो मुझे खाना खिला दे, चुनान्चे, मैं ऐसे शख़्स की तलाश में ईरान के शहर अहवाज़ की त़रफ़ रवाना हुवा हालांकि वहां मेरा कोई वाक़िफ़ न था। जब मैं दरया के

किनारे पहुंचा तो वहां कोई कश्ती मौजूद नहीं थी, मैं ने इसे **बदफ़ाली** पर महमूल किया। फिर मुझे एक कश्ती नज़र आई मगर उस में सुराख़ था, येह **दूसरी बदफ़ाली** हुई। मैं ने कश्ती के मल्लाह का नाम पूछा तो उस ने "देवज़ादा" बताया (जिसे अरबी में शैतान कहा जाता है) येह **तीसरी बदफ़ाली** थी। बहर हाल मैं उस कश्ती पर सुवार हो गया, जब दरया के दूसरे किनारे पर पहुंचा तो मैं ने आवाज़ लगाई : ऐ बोझ उठाने वाले मज़दूर ! मेरा सामान ले चलो, उस वक़्त मेरे पास एक पुराना लिहाफ़ और कुछ ज़रूरी सामान था। जिस मज़दूर ने मुझे जवाब दिया वोह एक आंख वाला (या'नी काना) था, मैं ने कहा : येह **चौथी बदफ़ाली** है। मेरे जी में आई कि यहां से वापस लौट जाने में ही आफ़िय्यत है लेकिन फिर अपनी हाजत को याद कर के वापसी का इरादा तर्क कर दिया। जब मैं सराए (मुसाफ़िर ख़ाने) पहुंचा और अभी येह सोच रहा था कि क्या करूं कि इतने में किसी ने दरवाज़ा खट-खटाया। मैं ने पूछा : कौन ? तो जवाब मिला कि मैं आप से ही मिलना चाहता हूं। मैं ने पूछा : क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूं ? उस ने कहा : हां। मैं ने दिल में कहा : "या तो येह दुश्मन है या फिर बादशाह का क़ासिद !" मैं ने कुछ देर सोचने के बा'द दरवाज़ा खोल दिया। उस शख़्स ने कहा : मुझे फुलां शख़्स ने आप के पास भेजा है और येह पैग़ाम दिया है कि अगर्चे मेरे आप से इख़्तिलाफ़ात हैं लेकिन अख़्लाक़ी हुक़ूक़ की अदाएगी ज़रूरी है, मैं ने आप के हालात सुने हैं इस लिये मुझ पर लाज़िम है कि आप की ज़रूरिय्यात की कफ़ालत करूं। अगर आप एक या दो माह तक हमारे यहां क़ियाम करें तो आप की ज़िन्दगी भर की

कफ़ालत की तरकीब हो जाएगी और अगर आप यहां से जाना चाहते हैं तो येह **30** दीनार हैं इन्हें अपनी ज़रूरियात पर ख़र्च कर लीजिये और तशरीफ़ ले जाइये हम आप की मजबूरी समझते हैं । उस शख़्स का बयान है कि इस से पहले मैं कभी **30** दीनार का मालिक नहीं हुवा था नीज़ मुझ पर येह बात भी ज़ाहिर हो गई कि **बद शुगूनी की कोई हक़ीक़त नहीं ।** (रूहुल बयान, **1/304** मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीरों से फ़ाल न निकालो

पारह **5** सूरए माइदा की आयत **90** में इरशाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾ (پ۷،المائدہ:۹۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालों ! शराब और जूआ और बुत और तीरों से फ़ाल निकालना येह सब नापाकी हैं, शैतान के कामों से हैं, इन से बचो ताकि फ़लाह पाओ ।*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पांसे डालना (या'नी तीर फेंक कर फ़ाल निकालना) गुनाह का काम है

पारह **6** सूरए माइदह की आयत **3** में इरशाद होता है :

وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ؕ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ؕ (پ۶،المائدۃ:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और पांसे डाल कर बांटा करना येह गुनाह का काम है ।*

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى लिखते हैं : ज़मानए जाहिलिय्यत

के लोगों को जब सफ़र या जंग या तिजारत या निकाह़ वग़ैरा काम दरपेश होते तो वोह तीन तीरों से पांसे डालते और जो निकलता इस के मुत़ाबिक़ अ़मल करते और इस को हुक्मे इलाही जानते, इन सब की मुमानअ़त फ़रमाई गई । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 207) बरीक़ा मह़मूदिय्या शर्ह़े त़रीक़ए मुह़म्मदिया में है : तीन तीरों में से एक पर लिखा होता : اَمَرَنِی رَبِّی (या'नी मुझे मेरे रब ने हुक्म दिया)" दूसरे पर : نَهَانِی رَبِّی (या'नी मुझे मेरे रब ने रोका) और तीसरे तीर पर कुछ न लिखा होता, अगर पहला तीर निकलता तो वोह काम कर लिया करते, अगर दूसरा निकलता तो उस काम से रुक जाते और अगर तीसरा निकलता तो दोबारा पांसे डालते । इन तीरों और इस त़रह़ की दूसरी चीज़ों का इस्ति'माल जाइज़ नहीं । (بریقه محمودیه شرح طریقه محمدیه، باب الخامس والعشرون، ۲/ ۳۸۵)

क़ुरआनी फ़ाल निकालना नाजाइज़ है

बा'ज़ लोग क़ुरआने मजीद का कोई भी सफ़ह़ा खोल कर सब से पहली आयत के तर्जमे से अपने काम के बारे में ख़ुदसाख़्ता मफ़्हूम अख़ज़ कर के फ़ाल निकालते हैं, इस त़रह़ फ़ाल निकालना नाजाइज़ है । ह़दीक़ए नदिय्या में है : क़ुरआनी फ़ाल, फ़ाले दानियाल और इस त़रह़ की दीगर फ़ाल जो फ़ी ज़माना निकालीं जाती हैं नेक फ़ाली में नहीं आतीं बल्कि इन का भी वोही हुक्म है जो पांसों के तीरों का है लिहाज़ा येह नाजाइज़ हैं । (حدیقه ندیه شرح طریقه محمدیه، ۲/ ۲۶ ملخصًا) जब कि बरीक़ए मह़मूदिय्या में है : क़ुरआने पाक से बद शुगूनी लेना मकरूहे तह़रीमी है । (بریقه محمودیه شرح طریقه محمدیه، باب الخامس والعشرون، ۲/ ۳۸۶)

एक इब्रत अंगेज़ हिकायत

एक दिन वलीद बिन यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक ने कुरआने पाक से फ़ाल निकाली तो जैसे ही कुरआने पाक खोला तो येह आयते मुबारका निकली :

وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿١٥﴾ (پ١٣، ابراهيم ١٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और इन्हों ने फ़ैसला मांगा और हर सरकश व हटधर्म ना मुराद हुवा ।*

तो वलीद बिन यज़ीद ने कुरआने पाक को (مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ) शहीद कर दिया और येह शे'र पढ़ा :

أَتُوْعِدُ كُلَّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ   فَهَا أَنَا ذَاكَ جَبَّارٌ عَنِيْدُ

إِذَا مَا جِئْتَ رَبَّكَ يَوْمَ حَشْرٍ   فَقُلْ يَا رَبِّ خَرَّقَنِي الْوَلِيْدُ

तर्जमा : क्यूं तू हर सरकश व हटधर्म को धमकी देता है (مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ) हां ! मैं हूं वोह सरकश व हटधर्म जब तू क़ियामत के दिन अपने रब के पास हाज़िर हो तो कह देना मुझे वलीद ने शहीद किया था ।

इस सानेह के थोड़े ही दिनों के बा'द किसी ने वलीद को बे दर्दी से क़त्ल कर दिया, इस के सर को पहले इस के महल फिर शहर की दीवारों पर लटका दिया गया । (ادب الدنيا والدين، ص٢٧٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

उन्हों ने कभी फ़ाल का तीर नहीं फेंका

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब **बैतुल्लाह** में तस्वीरें देखीं तो दाख़िल न हुवे यहां तक कि उन्हें आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म से मिटा दिया गया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम और ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल علیہما السلام की तस्वीरों को देखा कि उन के हाथों में फ़ाल के तीर थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन लोगों (या'नी तस्वीर बनाने वालों) को हलाक करे, बख़ुदा ! इन दोनों बुज़ुर्गों ने कभी इन तीरों के ज़रीए क़िस्मत मा'लूम नहीं की।

(بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، ۲/ ۴۲۱، الحدیث ۳۳۵۲)

फ़ाल के तीर कैसे होते थे ?

शारेह़े बुख़ारी मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीष के तह़्त लिखते हैं : मुशरिकीन ने फ़ाल के सात तीर बना लिये थे एक पर लिखा था "**नअ़म** (हां)" दूसरे पर "**ला** (नहीं)" तीसरे पर "**मिन्हुम** (इन में से)" चौथे पर "**मिन ग़ैरिहिम** (इन के इ़लावा में से)" पांचवें पर "**मुल्सक़** (वाबस्ता होने वाला)" छटे पर "**अल अ़क़्ल** (दीत)"[1] सातवें पर "**फ़ज़्लुल अ़क़्ल** (बक़िय्या दीत)"। येह तीर का'बे के ख़ादिम के पास रहते थे। मुशरिकीन जब कहीं जाने या बियाह

---

1 : दीत उस माल को कहते हैं जो नफ़्स (जान) के बदले में लाज़िम होता है (बहारे शरीअ़त 3/830)

करने का इरादा करते या उन्हें और भी कोई ज़रूरत होती तो येह ख़ादिम पांसा फेंकता अगर "**नअ़म** (हां)" निकलता तो वोह काम करते अगर "**ला** (नहीं)" निकलता तो नहीं करते और अगर किसी के नसब में शक होता तो उन तीन तीर का पांसा फेंकते जिन पर "**मिन्हुम**", "**मिन ग़ैरिहिम**" और "**मुल्सक़**" होता। अगर "**मिन्हुम** (इन में से)" निकलता तो कहते कि इस का नसब दुरुस्त है और अगर "**मिन ग़ैरिहिम** (इन के इ़लावा में से)" निकलता तो कहते येह इस क़ौम का नहीं इस का ह़लीफ़ है और अगर "**मुल्सक़** (वाबस्ता होने वाला)" निकलता तो कहते कि इस का इस क़ौम से न नसब है न इस का ह़लीफ़ है और अगर कोई जुर्म करता और इस में इख़्तिलाफ़ होता कि इस की दीत (माली तावान) किस पर है तो बक़िय्या दोनों तीर से काम लेते, एक फ़रीक़ को मुतअ़य्यन कर के पांसा डालते अगर उस के नाम पर "**अ़क़्ल** (दीत)" वाला तीर आ जाता तो उस पर दीत लाज़िम कर देते और दूसरे फ़रीक़ को बरी (या'नी आज़ाद) और अगर इन से दीत की पूरी रक़म वुसूल न होती और इख़्तिलाफ़ होता कि कौन अदा करे? तो फिर "**फ़ज़्लुल अ़क़्ल** (बक़िय्या दीत)" वाला तीर फेंकते जिस के नाम पर गिरता वोह अदा करता। इस की तफ़्सील में और भी अक़्वाल हैं मैं ने तआ़रुफ़ के लिये येह एक ज़िक्र कर दिया है। येह तवह्हुम परस्ती थी, जहालत थी बल्कि नसब और दीत के मुआ़मले में ज़ुल्म, इस लिये इस्लाम ने इसे सख़्ती से मन्अ़ फ़रमा दिया है, इरशाद है : وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ؕ (پ٦،المائدة:٣) तुम पर ह़राम किया गया है पांसों से क़िस्मत का ह़ाल मा'लूम करना। (नुज़्हतुल क़ारी, 3/105)

फ़ाल खोलने के बारे में आ'ला ह़ज़रत का फ़तवा

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से ऐसे शख़्स के बारे में **सुवाल** किया गया कि जो शख़्स फ़ाल खोलता हो, लोगों को कहता हो : तुम्हारा काम हो जाएगा या न होगा, येह काम तुम्हारे वासिते अच्छा होगा या बुरा होगा ? इस में नफ़्अ़ होगा या नुक़्सान ? तो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने **जवाब** दिया : (1) अगर येह अह़काम क़त्अ़ व यक़ीन के साथ लगाता हो जब तो वोह मुसलमान ही नहीं, इस की तस्दीक़ करने वाले को सह़ीह़ ह़दीष में फ़रमाया : فَقَدْ كَفَرَ بِمَانُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّد या'नी इस ने उस चीज़ के साथ कुफ़्र किया जो मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उतारी गई[1] और (2) अगर यक़ीन नहीं करता जब भी आ़म त़ौर पर जो फ़ाल देखना राइज है मा'सिय्यत (या'नी गुनाह) से ख़ाली नहीं ।

(फ़तावा रज़विय्या, 23/100 मुलख़्ख़सन)

फ़ाल की उजरत लेने का हुक्म

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان तफ़्सीरे नईमी में लिखते हैं : फ़ाल खोलना या फ़ाल खोलने पर उजरत लेना या देना सब ह़राम है ।

(नूरुल इरफ़ान, पा.7, अल माइदह 90)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

[1] : ترمذی، کتاب الطھارۃ، باب ما جاء فی کراھیۃ اتیان الحائض، ۱/ ۱۸۵، حدیث: ۱۳۵

इस्तिख़ारा सिखाते थे

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लोगों को फ़ाल की जगह इस्तिख़ारा की ता'लीम दी है, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि रसूले अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम को तमाम उमूर में इस्तिख़ारा ता'लीम फ़रमाते जैसे कुरआन की सूरत ता'लीम फ़रमाते थे। (بُخارِی،کتاب التهجد،باب ما جاء فی التطوع مثنی مثنی،۱/۳۹۳،حدیث۱۱۶۲)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त लिखते हैं : इस्तिख़ारा के मा'ना हैं ख़ैर मांगना या किसी से भलाई का मश्वरा करना, चूंकि इस दुआ़ व नमाज़ में बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से गोया मश्वरा करता है कि फ़ुलां काम करूं या न करूं इसी लिये इसे इस्तिख़ारा कहते हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, **2/301**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्तिख़ारा करने वाला नुक़्सान में नहीं रहेगा

ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : مَا خَابَ مَنِ اسْتَخَارَ وَلَا نَدِمَ مَنِ اسْتَشَارَ وَلَا عَالَ مَنِ اقْتَصَدَ या'नी जो इस्तिख़ारा करे वोह नुक़्सान में न रहेगा, जो मुशावरत से काम करे वोह पशेमान न होगा और जिस ने मियानारवी इख़्तियार की वोह मोह़ताज न होगा। (مجمع الزوائد،کتاب الصلاة،باب الاستخارة، ۲ / ۵۶۶،حدیث:۳۶۷۰)

इस्तिख़ारा छोड़ने का नुक़्सान

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مِنْ شَقَاوَةِ بْنِ آدَمَ تَرْكُهُ اسْتِخَارَةَ اللّٰهِ या'नी बन्दे की बदबख़्ती में से है कि वोह अल्लाह तआ़ला से इस्तिख़ारा करना छोड़ दे । (ترمذی،کتاب القدر، باب ما جاء فی الرضا بالقضاء، ٤ / ٦٠، حدیث: ٢١٥٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्तिख़ारा किन कामों के बारे में होगा ?

सिर्फ़ उन कामों के बारे में इस्तिख़ारा हो सकता है जो हर मुसलमान की राए पर छोड़े गए हैं मषलन तिजारत या मुलाज़मत में से किस का इन्तिख़ाब किया जाए ? सफ़र के लिये कौन सा दिन या कौन सा ज़रीआ़ मुनासिब रहेगा ? मकान व दुकान की ख़रीदारी मुफ़ीद होगी या नहीं ? कौन से अ़लाक़े में रिहाइश मुनासिब होगी ? शादी कहां की जाए ? वग़ैरा वग़ैरा । जिन कामों के बारे में शरीअ़त ने वाज़ेह़ अह़काम बयान कर दिये हैं इन में इस्तिख़ारा नहीं होता जैसे पंज वक़्ता फ़र्ज़ नमाज़ें, मालदार होने की सूरत में ज़कात की अदाएगी, रमज़ानुल मुबारक के रोज़े वग़ैरा के बारे में इस्तिख़ारा नहीं किया जाएगा कि मैं नमाज़ पढ़ूं या न पढ़ूं ? ज़कात अदा करूं या न करूं ? इसी त़रह़ झूट बोलना या किसी की ह़क़ तलफ़ी करना वग़ैरा जिन कामों से शरीअ़त ने मन्अ़ किया है वोह करूं या न करूं ? बल्कि इन तमाम कामों में शरीअ़त की हिदायात पर अ़मल करना ज़रूरी है नीज़ इस्तिख़ारा के लिये येह भी शर्त़ है कि वोह काम जाइज़ हो । नाजाइज़ कारोबार वग़ैरा के लिये इस्तिख़ारा

नहीं किया जाएगा। ह़कीमुल उम्मत मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي इस्तिख़ारा से मुतअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक की शर्ह़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : बशर्ते कि वोह काम न ह़राम हो, न फ़र्ज़ व वाजिब और न रोज़ मर्रा का आ़दी काम, लिहाज़ा नमाज़ पढ़ने, ह़ज करने या खाना खाने, पानी पीने पर इस्तिख़ारा नहीं। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/301)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

उस काम का मुकम्मल इरादा न किया हो

इस्तिख़ारा के आदाब में से येह भी है कि इस्तिख़ारा ऐसे काम के मुतअ़ल्लिक़ किया जाए जिस के करने के बारे में त़बीअ़त का किसी त़रफ़ मैलान न हो क्यूंकि अगर किसी एक त़रफ़ रग़बत पैदा हो चुकी होगी तो फिर इस्तिख़ारा की मदद से सह़ीह़ सूरते ह़ाल का वाज़ेह़ होना बहुत मुश्किल हो जाएगा। (فتح الباری، ۱۲/ ۱۵۵ملخصاً)

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي बहारे शरीअ़त जिल्द 1 सफ़ह़ा 683 पर लिखते हैं : इस्तिख़ारा का वक़्त उस वक़्त तक है कि एक त़रफ़ राए पूरी जम न चुकी हो। (बहारे शरीअ़त 1/683) मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان लिखते हैं : येह भी ज़रूरी है कि उस काम का पूरा इरादा न किया हो सिर्फ़ ख़याल हो, जैसे कोई कारोबार, शादी बियाह, मकान की ता'मीर वग़ैरा का मा'मूली इरादा हो और तरद्दुद हो कि न मा'लूम इस में भलाई होगी या नहीं तो इस्तिख़ारा करे। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/301)

इस्तिख़ारा का मत़लब त़लबे ख़ैर (या'नी भलाई को त़लब करना) है चुनान्चे, इस्तिख़ारा कर लेने के बा'द इस पर अ़मल करना बेहतर है, हां ! किसी सबब से अगर अ़मल न भी किया तो गुनाहगार नहीं होगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्तिख़ारे के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े

इस्तिख़ारा चूंकि रब عَزَّوَجَلَّ से ख़ैर मांगने या किसी से भलाई का मश्वरा करने को कहते हैं, इस लिये मुख़्तलिफ़ दुआ़ओं के ज़रीए रब तआ़ला से इस्तिख़ारा किया जाता है, जिस में से एक दुआ़ नमाज़ के बा'द मांगी जाती है इसी वजह से इस नमाज़ को नमाज़े इस्तिख़ारा कहा जाता है ।

नमाज़े इस्तिख़ारा का त़रीक़ा

जब कोई किसी अम्र का क़स्द करे तो दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े फिर कहे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِیْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ
وَاَسْاَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِیْمِ فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ وَ
تَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ
تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَیْرٌ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ
اَمْرِیْ اَوْقَالَ عَاجِلِ اَمْرِیْ وَاٰجِلِهٖ فَاقْدِرْهُ لِیْ وَیَسِّرْهُ
لِیْ ثُمَّ بَارِكْ لِیْ فِیْهِ وَاِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ
لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ اَوْ قَالَ عَاجِلِ اَمْرِیْ
وَاٰجِلِهٖ فَاصْرِفْهُ عَنِّیْ وَاصْرِفْنِیْ عَنْهُ وَاقْدِرْ لِیَ الْخَیْرَ
حَیْثُ كَانَ ثُمَّ رَضِّنِیْ بِهٖ.

ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) मैं तेरे इल्म के साथ तुझ से ख़ैर त़लब करता (करती) हूं और तेरी कुदरत के ज़रीए से त़लबे कुदरत करता (करती) हूं और तुझ से तेरा फ़ज़्ले अ़ज़ीम मांगता (मांगती) हूं क्यूंकि तू कुदरत रखता है और मैं कुदरत नहीं रखता (रखती) तू सब कुछ जानता है और मैं नहीं जानता (जानती) और तू तमाम पोशीदा बातों को ख़ूब जानता है, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) अगर तेरे इल्म में येह अम्र (जिस का मैं क़स्द व इरादा रखता (रखती) हूं) मेरे दीनो ईमान और मेरी ज़िन्दगी और मेरे अन्जामे कार में दुन्या व आखिरत में मेरे लिये बेहतर है तो इस को मेरे लिये मुक़द्दर कर दे और मेरे लिये आसान कर दे फिर इस में मेरे वासित़े बरकत कर दे। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) अगर तेरे इल्म में येह काम मेरे लिये बुरा है मेरे दीनो ईमान मेरी ज़िन्दगी और मेरे अन्जामे कार दुन्या व आख़िरत में तो इस को मुझ से और मुझ को इस से फेर दे और जहां कहीं बेहतरी हो मेरे लिये मुक़द्दर कर फिर इस से मुझे राज़ी कर दे।)

(بُخاری،کتاب التهجد،باب ما جاء فی التطوع مثنی مثنی،۱/ ۳۹۳،حدیث:۱۱۶۲، ردالمحتار،کتاب الصلاۃ،مطلب فی رکعتی الاستخارۃ،۲/ ۵۶۹)

अल्लामा इब्ने आबेदीन शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السّامی फ़रमाते हैं : ह़दीष में वारिद इस दुआ में "هٰذَا الْاَمْرَ" की जगह चाहे तो ह़ाजत का नाम ले या उस के बा'द। (ردالمحتار ۲/ ۵۷۰) या'नी अगर अ़रबी जानता है तो इस जगह अपनी ह़ाजत का तज़्किरा करे या'नी "هٰذَا الْاَمْرَ" की जगह अपने काम का नाम ले, मषलन هٰذَا السَّفْرَ या هٰذَا النِّكَاحَ या هٰذَا الْبَيْعَ या هٰذِهِ التِّجَارَةَ कहे और अगर अ़रबी नहीं जानता तो "هٰذَا الْاَمْرَ" ही कह कर दिल में अपने उस काम के बारे में सोचे और ध्यान दे जिस के लिये इस्तिख़ारा कर रहा है।

नमाज़े इस्तिख़ारा में कौन सी सूरतें पढ़ें ?

मुस्तहब येह है कि इस दुआ के अव्वल आख़िर اَلْحَمْدُ لِلّٰه और दुरूद शरीफ़ पढ़े और पहली रक्अत में قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और दूसरी में قُلْ هُوَ اللّٰهُ पढ़े और बा'ज़ मशाइख़ फ़रमाते हैं कि पहली में

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ؕ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ

وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۶۸﴾ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿۶۹﴾

(پ۲۰،القصص:۶۸،۶۹)

और दूसरी में

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ

لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿۳۶﴾ (پ۲۲،الاحزاب:۳۶)

पढ़े ।

(رَدُّالْمُحتَار،۲/۵۷۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इशारा कैसे मिलेगा ?

बा'ज़ मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से मन्क़ूल है कि दुआए मज़्कूर पढ़ कर बा त़हारत क़िब्ला रू सो रहे अगर ख़्वाब में सफ़ेदी या सब्ज़ी देखे तो वोह काम बेहतर है और सियाही या सुर्ख़ी देखे तो बुरा है इस से बचे । (رَدُّالْمُحتَار،۲/۵۷۰) मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने भी इस मस्अले की तफ़्सील इरशाद फ़रमाई है : बा'ज़ सूफ़ियां फ़रमाते हैं कि अगर सोते वक़्त दो रक्अतें पढ़ कर येह दुआ पढ़े फिर बा वुज़ू क़िब्ला रू हो जाए तो अगर ख़्वाब में सब्ज़ी या

सफ़ेद जारी पानी या रोशनी देखे तो कामयाबी की अ़लामत है और अगर सियाही या गदला पानी या अन्धेरा देखे तो नाकामी और नामुरादी की अ़लामत है। सात रोज़ येह अ़मल करे, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस दौरान ख़्वाब में इशारा हो जाएगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/302)

सात मरतबा इस्तिख़ारा करना बेहतर है

बेहतर है कि सात बार इस्तिख़ारा करे कि एक ह़दीष में है : ''ऐ अनस ! जब तू किसी काम का क़स्द करे तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ से उस में सात बार इस्तिख़ारा कर फिर नज़र कर तेरे दिल में क्या गुज़रा कि बेशक उसी में ख़ैर है। (رَدُّالْمُحتَار،کتاب الصلاۃ، مطلب فی رکعتی الاستخارۃ،۲/ ۵۷و عمل الیوم واللیل لابن سنی باب کم مرۃ یستخیرالله عزوجل۔ص ۵۵۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अगर इशारा न हो तो ?

इस्तिख़ारा करने के बा'द अगर ख़्वाब में कोई इशारा न हो तो अपने दिल की त़रफ़ ध्यान करना चाहिये, अगर दिल में कोई पुख़्ता इरादा जम जाए या किसी काम के करने या न करने के बारे में अज़ ख़ुद रुजह़ान बदल जाए इसी को इस्तिख़ारा का नतीजा समझना चाहिये और त़बीअ़त के ग़ालिब रुजह़ान पर अ़मल करना चाहिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिर्फ़ दुआ के ज़रीए भी इस्तिख़ारा किया जा सकता है

अ़ल्लामा इब्ने आ़बेदीन शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السّامی फ़तावा शामी में लिखते हैं : وَلَوْ تَعَذَّرَتْ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ اِسْتَخَارَ بِالدُّعَاءِ या'नी "और अगर किसी पर नमाज़े इस्तिख़ारा पढ़ना दुश्वार हो जाए तो वोह दुआ के ज़रीए इस्तिख़ारा करे।" (رَدُّالْمُحتَار،کتاب الصلاۃ، مطلب فی رکعتی الاستخارۃ،۲/ ۵۷۰)

इस्तिख़ारे की मुख़्तसर दुआएं

मश्हूर मुह़द्दिष ह़ज़रते अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی "मिरक़ातुल मफ़ातीह़" में लिखते हैं : जिसे काम में जल्दी हो तो वोह सिर्फ़ येह कह ले : اَللّٰهُمَّ خِرْلِیْ وَاخْتَرْلِیْ وَاجْعَلْ لِیَ الْخِيَرَةَ (ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा काम बेहतर कर दे और मेरे लिये (दो कामों में से बेहतर को) इख़्तियार फ़रमा कर (इस में) मेरे लिये बेहतरी रख दे) या येह कहे : اَللّٰهُمَّ خِرْلِیْ وَاخْتَرْلِیْ وَلَا تَكِلْنِیْ اِلٰی اِخْتِيَارِیْ (ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा काम बेहतर कर दे और मेरे लिये (दो कामों में से बेहतर को) इख़्तियार फ़रमा और मुझे मेरी पसन्द के ह़वाले न फ़रमा) (مرقاۃ المفاتیح، کتاب الصلاۃ، باب التطوع، ۳/ ۴۰۶)

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن से इस्तिख़ारा करने के और भी कई त़रीक़े और वज़ाइफ़ मन्क़ूल हैं मषलन तस्बीह़ के ज़रीए इस्तिख़ारा करना जो क़लील वक़्त में मुकम्मल हो जाता है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अगर इस्तिख़ारा के बा'द भी नुक़्सान उठाना पड़े तो ?

बा'ज़ अवक़ात इन्सान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिख़ारा करता है कि जिस काम में मेरे लिये बेहतरी हो वोह हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये वोह काम अ़ता करता है जो उस के ह़क़ में बेहतर होता है लेकिन ज़ाहिरी ए'तिबार से वोह काम उस शख़्स की समझ में नहीं आता तो उस के जी में आता है कि मैं ने तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से येह चाहा था कि मुझे वोह काम मिले जो मेरे लिये बेहतर हो लेकिन जो काम मिला वोह तो मुझे अच्छा नज़र नहीं आ रहा है, इस में मेरे लिये तक्लीफ़ और परेशानी है, लेकिन कुछ अ़र्से बा'द जब अन्जाम सामने आता है तब उस को पता चलता है कि ह़क़ीक़त में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के लिये जो फ़ैसला किया था वोही उस के ह़क़ में बेहतर था। ह़ज़रते सय्यिदुना मकहूल अज़्दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को फ़रमाते सुना कि आदमी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिख़ारा करता है फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये कोई काम पसन्द फ़रमाता है तो वोह आदमी अपने रब से नाराज़ हो जाता है लेकिन जब वोह आदमी उस के अन्जाम में नज़र करता है तो पता चलता है कि येही उस के लिये बेहतर है।

(کتاب الزھد لابن مبارک،مارواہ نعیم بن حمادالخ،باب فی الرضا بالقضاء،ص ۳۲،حدیث:۱۲۸)

इस की मिषाल यूं समझें बुख़ार में तपने वाला बच्चा मां बाप के सामने मचल रहा है कि फुलां चीज़ खाऊंगा और मां बाप जानते हैं कि इस वक़्त येह चीज़ खाना बच्चे के लिये नुक़्सान देह और मोहलिक है, चुनान्चे, मां बाप बच्चे को वोह चीज़ नहीं देते

बल्कि कड़वी दवाई खिलाते हैं, अब बच्चा अपनी नादानी की वजह से येह समझता है कि मेरे मां बाप ने मुझ पर ज़ुल्म किया, मैं जो चीज़ मांग रहा था वोह मुझे नहीं दी और इस के बदले में मुझे कड़वी कड़वी दवा खिला रहे हैं, अब वोह बच्चा इस दवा को अपने हक़ में ख़ैर नहीं समझ रहा लेकिन बड़ा होने के बा'द जब उसे अक़्ल व शुऊ़र की ने'मत मिलेगी तो उस को समझ आएगी कि मैं तो अपने लिये मौत मांग रहा था और मेरे मां बाप मेरे लिये ज़िन्दगी और सिह्हत का रास्ता तलाश कर रहे थे। हमारा रब عَزَّوَجَلَّ तो अपने बन्दों पर मां बाप से कहीं ज़ियादा मेहरबान है, इस लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक मुसलमान को वोही शै अ़ता फ़रमाता है जो अन्जाम के ए'तिबार से उस के हक़ में बेहतर होती है। बा'ज़ अवक़ात उस का बेहतर होना दुन्या में पता चल जाता है और बा'ज़ का आख़िरत में मा'लूम होगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दरयाए नील के नाम ख़त

दरयाए नील हर साल ख़ुश्क हो जाया करता था, जिस से जहालत की बुन्याद पर लोग येह बद शुगूनी लेते कि दरया को जान की त़लब है चुनान्चे, वोह एक कंवारी लड़की को उ़मदा लिबास और नफ़ीस ज़ेवर से सजा कर **दरयाए नील** में डाल देते जिस के बा'द दरया जारी हो जाया करता था। जब मिस्र फ़त्ह हुवा तो एक रोज़ **अहले मिस्र** ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से अ़र्ज़ की : ऐ अमीर ! हमारे **दरयाए नील** की एक रस्म है, जब तक इस को अदा न किया जाए दरया जारी नहीं रहता। इन्हों ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : क्या ? कहा : हम एक

कंवारी लड़की को उस के वालिदैन से ले कर उ़मदा लिबास और नफ़ीस ज़ेवर से सजा कर दरयाए नील में डालते हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **इस्लाम** में हरगिज़ ऐसा नहीं हो सकता और इस्लाम पुरानी वाहिय्यात रस्मों को मिटाता है । चुनान्चे, वोह रस्म मौक़ूफ़ रखी (या'नी रोक दी) गई और दरया की रवानी कम होती गई यहां तक कि लोगों ने वहां से चले जाने का क़स्द (या'नी इरादा) किया, येह देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोअमिनीन ख़लीफ़ए षानी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में तमाम वाक़िआ़ लिख भेजा । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब में तह़रीर फ़रमाया : तुम ने ठीक किया, बेशक इस्लाम ऐसी रस्मों को मिटाता है । मेरे इस ख़त़ में एक रुक़्आ़ है इस को दरयाए नील में डाल देना । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जब अमीरुल मोअमिनीन का ख़त़ पहुंचा और उन्हों ने वोह रुक़्आ़ उस ख़त़ में से निकाला तो उस में लिखा था : "(ऐ दरयाए नील !) अगर तू ख़ुद जारी है तो न जारी हो और **अल्लाह** तआ़ला ने जारी फ़रमाया है तो मैं वाह़िदो क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ करता हूं कि तुझे जारी फ़रमा दे ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह रुक़्आ़ **दरयाए नील** में डाला तो एक रात में **16** ग़ज़ पानी बढ़ गया और येह रस्म मिस्र से बिल्कुल मौक़ूफ़ (या'नी ख़त्म) हो गई । (العظمة لابی الشیخ الاصبهانی،باب صفة النیل ومنتهاه، ص۳۱۸ حدیث ۹٤۰ ملخصاً وموضحاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अफ़्सोस नाक सूरते हाल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ अहले मिस्र में दरयाए नील को जारी रखने के लिये ग़लत़ ए'तिक़ाद पर मब्नी रस्मे बद जारी थी इसी त़रह़ दौरे ह़ाज़िर में भी बहुत से ग़लत़ सलत़ ए'तिक़ादात, तवह्हुमात (वहमों) और नाजाइज़ रुसूमात ज़ोर पकड़ती जा रही हैं जिन का तअ़ल्लुक़ बद शुगूनी से भी होता है, इन में से चन्द चीज़ों की निशान देही की कोशिश करता हूं :

(1) माहे सफ़र को मन्हूस जानना

नुहूसत के वहमी तसव्वुरात के शिकार लोग माहे सफ़र को मुसीबतों और आफ़तों के उतरने का महीना समझते हैं ख़ुसूसन इस की इब्तिदाई तेरह तारीख़ें जिन्हें "तेरह तेज़ी" कहा जाता है बहुत मन्हूस तसव्वुर की जाती हैं। वहमी लोगों का येह ज़ेह्न बना होता है कि सफ़र के महीने में नया कारोबार शुरूअ़ नहीं करना चाहिये नुक़्सान का ख़त़रा है, सफ़र करने से बचना चाहिये एक्सीडन्ट का अन्देशा है, शादियां न करें, बच्चियों की रुख़्सती न करें घर बरबाद होने का इम्कान है, ऐसे लोग बड़ा कारोबारी लैन दैन नहीं करते, घर से बाहर आमदो रफ़्त में कमी कर देते हैं, इस गुमान के साथ कि आफ़ात नाज़िल हो रही हैं अपने घर के एक एक बरतन को और सामान को ख़ूब झाड़ते हैं, इसी त़रह़ अगर किसी के घर में इस माह में मय्यित हो जाए तो इसे मन्हूस समझते हैं और अगर उस घराने में अपने लड़के या लड़की की निस्बत त़ै हुई हो तो उस को तोड़ देते हैं। तेरह तेज़ी के उ़न्वान से सफ़ेद चने (काबुली चने) की नियाज़ भी दी जाती है। नियाज़ फ़ातिह़ा करना मुस्तह़ब

व बाइषे षवाब है और हर त़रह़ के रिज़्क़े ह़लाल पर हर माह की हर तारीख़ को फ़ातिह़ा दी जा सकती है लेकिन येह समझना कि अगर तेरह तेज़ी की फ़ातिह़ा न दी और सफ़ेद चने पका कर तक़्सीम न किये तो घर के कमाने वाले अफ़्राद का रोज़गार मुतअष्षिर होगा, येह बे बुन्याद ख़यालात हैं ।

अ़रबों में माहे सफ़र को मन्हूस समझा जाता था

दौरे जाहिलिय्यत (या'नी इस्लाम से पहले) में भी माहे सफ़र के बारे में लोग इसी क़िस्म के वहमी ख़यालात रखा करते थे कि इस महीने में मुसीबतें और आफ़तें बहुत होती हैं, चुनान्चे वोह लोग माहे सफ़र के आने को मन्हूस ख़याल किया करते थे । (عمدۃ القاری،۷/۱۱۰مفھوماً)

अ़रब लोग हुरमत की वजह से चार माह रजब, ज़ुल क़ा'दह, ज़ुल ह़िज्जा और मुह़र्रम में जंगो जदल और लूट मार से बाज़ रहते और इन्तिज़ार करते कि येह पाबन्दियां ख़त्म हों तो वोह निकलें और लूट मार करें लिहाज़ा सफ़र शुरूअ़ होते ही वोह लूट मार, रहज़नी और जंगो जदल के इरादे से जब घरों से निकलते तो इन के घर ख़ाली रह जाते, इसी वजह से कहा जाता है "صَفَرَ الْمَكَان" (मकान ख़ाली हो गया) । जब अ़रबों ने देखा कि इस महीने में लोग क़त्ल होते हैं और घर बरबाद या ख़ाली हो जाते हैं तो उन्हों ने इस से येह शुगून लिया कि येह महीना हमारे लिये मन्हूस है और घरों की बरबादी और वीरानी की अस्ल वजह पर ग़ौर नहीं किया, न अपने अ़मल की ख़राबी का एह़सास किया और न ही लड़ाई झगड़े और जंगो जदाल से ख़ुद को बाज़ रखा बल्कि इस महीने को ही मन्हूस ठहरा दिया ।

सफ़र कुछ नहीं

हमारे मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सफ़रुल मुज़फ़्फ़र के बारे में वहमी ख़यालात को बातिल क़रार देते हुवे फ़रमाया : **"ला सफ़र" सफ़र कुछ नहीं ।** (بخاری، کتاب الطب، باب الجذام ٤/٢٤، حدیث: ٥٧٠٧)

मुहक़्क़िक़े अ़लल इत़्लाक़ ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिषे देहलवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی इस ह़दीष की शर्ह़ में लिखते हैं : अ़वाम इसे (या'नी सफ़र के महीने को) बलाओं, ह़ादिषों और आफ़तों के नाज़िल होने का वक़्त क़रार देते हैं, येह अ़क़ीदा बातिल है इस की कोई ह़क़ीक़त नहीं है । (اشعة اللمعات (فارسی)،٣/٦٦٤)

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی लिखते हैं : माहे सफ़र को लोग मन्हूस जानते हैं, इस में शादी बियाह नहीं करते, लड़कियों को रुख़्सत नहीं करते और भी इस क़िस्म के काम करने से परहेज़ करते हैं और सफ़र करने से गुरैज़ करते हैं, ख़ुसूसन माहे सफ़र की इब्तिदाई तेरह तारीख़ें बहुत ज़ियादा नह़ूस (या'नी नुह़ूसत वाली) मानी जाती हैं और इन को तेरह तेज़ी कहते हैं येह सब जहालत की बातें हैं । ह़दीष में फ़रमाया कि "सफ़र कोई चीज़ नहीं" या'नी लोगों का इसे मन्हूस समझना ग़लत़ है । इसी त़रह़ ज़ीक़ा'दा के महीने को भी बहुत लोग बुरा जानते हैं और इस को ख़ाली का महीना कहते हैं येह भी ग़लत़ है और हर माह में 3, 13, 23, 8, 18, 28 (तारीख़) को मन्हूस जानते हैं येह भी लग़्व (या'नी बेकार) बात है । (बहारे शरीअ़त, 3/659)

कोई दिन मन्हूस नहीं होता

अ़ल्लामा सय्यिद मुह़म्मद अमीन बिन उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السّامی लिखते हैं : अ़ल्लामा ह़ामिद आफ़न्दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی से सुवाल किया गया : क्या बा'ज़ दिन मन्हूस (या मुबारक) होते हैं जो सफ़र और दीगर काम की सलाह़िय्यत नहीं रखते ? तो उन्हों ने जवाब दिया कि जो शख़्स येह सुवाल करे कि क्या बा'ज़ दिन मन्हूस होते हैं उस के जवाब से ए'राज़ किया जाए और उस के फ़े'ल को जहालत कहा जाए और उस की मज़म्मत बयान की जाए, ऐसा समझना यहूद का त़रीक़ा है, मुसलमानों का शेवा नहीं है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करते हैं। (تنقیح الفتاوی الحامدیه، ۲/ ۳٦۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कोई वक़्त बरकत वाला और अ़ज़मत व फ़ज़ीलत वाला तो हो सकता है जैसे माहे रमज़ान, रबीउ़ल अव्वल, जुमुअ़तुल मुबारक वग़ैरा मगर कोई महीना या दिन मन्हूस नहीं हो सकता। मिरआतुल मनाजीह़ में है : इस्लाम में कोई दिन या कोई साअ़त मन्हूस नहीं हां बा'ज़ दिन बा बरकत हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, **5/484**) तफ़्सीरे रूहुल बयान में है : सफ़र वग़ैरा किसी महीने या मख़्सूस वक़्त को मन्हूस समझना दुरुस्त नहीं, तमाम अवक़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बनाए हुवे हैं और इन में इन्सानों के आ'माल वाक़ेअ़ होते हैं। जिस वक़्त में बन्दए मोमिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व बन्दगी में मश्ग़ूल हो वोह वक़्त मुबारक है और जिस वक़्त में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करे वोह वक़्त उस के लिये मन्हूस है। **दर ह़क़ीक़त अस्ल नुहूसत तो गुनाहों में है।** (तफ़्सीरे रूहुल बयान, **3/428**)

माहे सफ़र भी दीगर महीनों की त़रह़ एक महीना है जिस त़रह़ दूसरे महीनों में रब عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम की बारिशें होती हैं इस में भी हो सकती हैं, इसे तो सफ़रुल मुज़फ़्फ़र कहा जाता है या'नी कामयाबी का महीना, येह क्यूंकर मन्हूस हो सकता है ? अब अगर कोई शख़्स इस महीने में अह़कामे शरअ़ का पाबन्द रहा, नेकियां करता और गुनाहों से बचता रहा तो येह महीना यक़ीनन उस के लिये मुबारक है और अगर किसी बद किरदार ने येह महीना भी गुनाहों में गुज़ारा, जाइज़ व नाजाइज़ और ह़राम व ह़लाल का ख़याल न रखा तो उस की बरबादी के लिये गुनाहों की नुहूसत ही काफ़ी है। अब माहे सफ़र हो या किसी भी महीने का सेकन्ड, मिनट या घन्टा ! अगर उसे कोई मुसीबत पहुंचती है तो येह उस की शामते आ'माल का नतीजा है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) सफ़रुल मुज़फ़्फ़र का आख़िरी बुध मनाना

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं : माहे सफ़र का आख़िर चहार शम्बा (बुध) हिन्दुस्तान में बहुत मनाया जाता है, लोग अपने कारोबार बन्द कर देते हैं, सैर व तफ़रीह़ व शिकार को जाते हैं, पूरियां पकती हैं और नहाते धोते, ख़ुशियां मनाते हैं और कहते येह हैं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस रोज़ गुस्ले सिह्ह़त फ़रमाया था और बैरूने मदीनए त़य्यिबा सैर के लिये तशरीफ़ ले गए थे। येह सब बातें बे अस्ल हैं बल्कि इन दिनों में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मरज़ शिद्दत के साथ था, वोह

बातें ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ हैं। और बा'ज़ लोग येह कहते हैं कि इस रोज़ बलाएं आती हैं और त़रह़ त़रह़ की बातें बयान की जाती हैं सब बे षुबूत हैं। (बहारे शरीअ़त, 3/659)

सफ़र के महीने में पेश आने वाले चन्द तारीख़ी वाक़िआ़त

۞ सफ़रुल मुज़फ़्फ़र पहली हिजरी में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم और ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की शादी ख़ाना आबादी हुई। ۞ सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सात हिजरी में मुसलमानों को फ़त्ह़े ख़ैबर नसीब हुई। (الکامل فی التاریخ، ۲/ ۱۲) ۞ सैफ़ुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन त़लह़ा अ़ब्दरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने सफ़रुल मुज़फ़्फ़र आठ हिजरी में बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल किया। (الکامل فی التاریخ، ۲/ ۱۰۹) ۞ मदाइन (जिस में किस्रा का मह़ल था) की फ़त्ह़ सोलह हिजरी सफ़रुल मुज़फ़्फ़र ही के महीने में हुई। (الکامل فی التاریخ، ۲/ ۳۵۷)

क्या अब भी आप सफ़र को मन्हूस जानेंगे? नहीं और यक़ीनन नहीं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) छींक से बदशुगूनी लेना

बा'ज़ लोग छींक को बद शुगूनी समझते हैं अगर किसी काम के लिये जाते वक़्त ख़ुद को या किसी और को छींक आ गई तो लोग येह बद फ़ाली लेते हैं कि येह काम नहीं होगा, येह बहुत बड़ी जहालत और बे अ़क़्ली की दलील है। आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़रमाया : छींक अच्छी चीज़ है, इसे बद शुगूनी जानना मुशरिकीने

हिन्द का नापाक अक़ीदा है। ह़दीष[1] में तो येह इरशाद फ़रमाया : لَعَطْسَةٌ وَاحِدَةٌ عِنْدَ حَدِيْثٍ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ شَاهِدٍ عَدْلٍ बात के वक़्त छींक आ़दिल गवाह[2] है।[3] या'नी जो कुछ बयान किया जाता हो जिस का सिद्क़ व किज़्ब (या'नी सच्चा और झूटा होना) मा'लूम नहीं और उस वक़्त किसी को छींक आए तो वोह इस बात के सिद्क़ (या'नी सच्चा होने) पर दलील है।[4] और येह भी आया है कि दुआ़ के वक़्त छींक आना दलीले क़बूल है।[5] ग़रज़ छींक मह़बूब चीज़ है मगर वोह कि नमाज़ में आए ह़दीष में इसे शैत़ान की त़रफ़ से शुमार फ़रमाया है।[6] (मलफ़ूज़ात, स. 319-322)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) शव्वाल में शादी न करना

शरीअ़त ने किसी महीने या मौसिम में निकाह़ करने से मन्अ़ नहीं किया लेकिन कुछ नादान मख़्सूस महीनों या दिनों में शादी करने को मन्हूस समझते हैं, उन को येह वहम होता है कि इन दिनों में जो शादियां होती हैं इन से मियां बीवी के तअ़ल्लुक़ात अच्छे नहीं बनते और इन में वोह उल्फ़त व मह़ब्बत पैदा नहीं हो

मदीना

❶ येह ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है।

❷ अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی लिखते हैं अब ग़ौर करो कि जब छींक को रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शाहिदे अ़द्ल (या'नी आ़दिल गवाह) का लक़ब दिया तो फिर भला छींक मन्हूस और बद शुगूनी का सामान कैसे बन सकती है ? इस लिये लोगों को इस अ़क़ीदे से तौबा करनी चाहिये कि छींक मन्हूस और बद फ़ाली की चीज़ है। ख़ुदावन्दे करीम मुसलमानों को इत्तिबाए़ सुन्नत और पाबन्दिये शरीअ़त की तौफ़ीक़ बख़्शे आमीन। (जन्नती ज़ेवर, स.431)

٣: نوادر الاصول، ٢/٧٧٤، حديث:١٠٦٤ ٤: كنز العمال، ٩/٦٩، حديث:٢٥٥٣٣

٥: المعجم الكبير، ٢٢/٣٣٦، حديث:٨٤٣

٦: ترمذی، کتاب الادب، باب ما جاء ان العطاس......الخ، ٤/٣٤٤، حديث:٢٧٥٧

पाती जो ख़ुशगवार घरेलू ज़िन्दगी के लिये ज़रूरी है । बा'ज़ अ़लाक़ों में शव्वालुल मुकर्रम को भी इन्हीं महीनों में से शुमार किया जाता है । अहले अ़रब शव्वाल के महीने में निकाह़ या रुख़्सती मन्हूस जानते थे और कहते थे कि इस महीने का निकाह़ कामयाब नहीं होता मियां बीवी के दिल नहीं मिलते । (مرقاة المفاتيح، ٦/٣٠٢) इस की एक वजह येह बताई जाती है कि किसी ज़माने में शव्वाल के महीने में त़ाऊ़न वाक़ेअ़ हुवा जिस में बहुत सी दुल्हनें हलाक हो गईं, इस के सबब लोग शव्वाल में शादी को मन्हूस समझने लगे जब कि शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने इस तसव्वुर को ग़लत़ क़रार दिया है । उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से निकाह़ भी शव्वाल में किया और ज़िफ़ाफ़ भी, तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कौन सी बीवी मुझ से ज़ियादा मह़बूब थी ! (مسلم، كتاب النكاح، ٧٣٩، حديث: ١٤٢٣) मिरआतुल मनाजीह़ में है : मक़सद येह है कि मेरा तो निकाह़ भी माहे शव्वाल में हुवा और रुख़्सती भी और मैं तमाम अज़वाजे मुत़ह्हरात (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ) में हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को ज़ियादा मह़बूबा थी अगर येह निकाह़ और रुख़्सते मुबारक न होती तो मैं इतनी मक़्बूल क्यूं होती ! उ़-लमा फ़रमाते हैं कि माहे शव्वाल में निकाह़ मुस्तह़ब है । (मिरआतुल मनाजीह़, 5/32,33)

मख़्सूस तारीख़ों में शादी न करने के बारे में सुवाल जवाब

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से **सुवाल** हुवा : अकषर लोग **3**, **13**, या **23**, **8**, **18**, **28** वग़ैरा तवारीख़ और पंजशम्बा व यकशम्बा व चहार शम्बा (या'नी जुमा'रात, इतवार और बुध) वग़ैरा अय्याम को शादी वग़ैरा नहीं करते ।

ए'तिक़ाद येह है कि सख़्त नुक़्सान पहुंचेगा इन का क्या हुक्म (है) ? आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने **जवाब** दिया : येह सब बात़िल व बे अस्ल है । واللّٰہ تعالٰی اعلم (फ़तावा रज़विय्या, 23/272)

(5) सितारों के अच्छे बुरे अषरात पर यक़ीन रखना कैसा ?

ख़ुद को पढ़ा लिखा समझने वालों की बहुत बड़ी ता'दाद सितारों के अषरात की इस क़दर क़ाइल होती है कि शादी और कारोबार जैसे अहम फ़ैसले भी सितारों की नक़्ल व ह़रकत के मुत़ाबिक़ करती है, ऐसे लोग सितारा शनासी का दा'वा करने वालों का आसान शिकार होते हैं जो इन को बे वुक़ूफ़ बना कर बड़ी बड़ी रक़में बटोरते रहते हैं । बारहा ऐसा होता है कि लड़का लड़की का रिश्ता त़ै हो चुका होता है, ज़रूरी छान बीन भी हो चुकी होती है लेकिन एक फ़रीक़ येह कह कर रिश्ते से इन्कार कर देता है कि हम ने पता करवाया है कि लड़के और लड़की का सितारा आपस में नहीं मिलता लिहाज़ा येह शादी नहीं हो सकती । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن से सुवाल किया गया कि कवाकिबे फ़लकी (या'नी आस्मानी सितारों) के अषराते सा'द व नह़ूस (या'नी अच्छे और मन्ह़ूस अषरात) पर अ़क़ीदत (या'नी भरोसा) रखना कैसा है ? **आ'ला ह़ज़रत** رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने जवाब दिया : मुसलमाने मुत़ीअ़ (या'नी इत़ाअ़त गुज़ार मुसलमान) पर कोई चीज़ नह़ूस (या'नी मन्ह़ूस) नहीं और काफ़िरों के लिये कुछ सा'द (या'नी अच्छा) नहीं, और मुसलमाने आ़सी (या'नी नाफ़रमानी करने वाले मुसलमान) के लिये उस का इस्लाम सा'द (या'नी नेक बख़्ती) है । त़ाअ़त (या'नी इबादत) बशर्ते क़बूले सा'द (या'नी नेक बख़्ती) है । मा'सियत (या'नी गुनाहगारी) बजाए ख़ुद नह़ूस (या'नी मन्ह़ूस) है अगर रह़मत व

शफ़ाअ़त इस की नुहूसत से बचा लें बल्कि नुहूसत को सआ़दत कर दें, فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ (پ۱۹،الفرقان:۷۰) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो ऐसों की बुराइयों को **अल्लाह** भलाइयों से बदल देगा।) बल्कि कभी गुनाह यूं सआ़दत हो जाता है कि बन्दा इस पर ख़ाइफ़ व तरसां व ताइब व कोशां रहता है, वोह धुल गया और बहुत सी ह़सनात (या'नी नेकियां) मिल गईं, बाक़ी कवाकिब में कोई सआ़दत व नुहूसत नहीं अगर इन को ख़ुद मुअष्षिर (या'नी असर करने वाला) जाने शिर्क है और इन से मदद मांगे तो ह़राम है, वरना इन की रिआ़यत ज़रूर ख़िलाफ़े तवक्कुल है। (फ़तावा रज़विय्या,21/223)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कुछ मोमिन रहे कुछ काफ़िर हो गए

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें हुदैबिय्या के मक़ाम पर बारिश के बा'द सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ाई, जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे तो लोगों की जानिब रुख़े अन्वर किया और इरशाद फ़रमाया : क्या तुम जानते हो तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ ने क्या फ़रमाया? लोगों ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** और उस का रसूल ख़ूब जानते हैं। इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया है कि मेरे बन्दों ने सुब्ह़ की तो कुछ मोमिन हुवे और कुछ काफ़िर, जिस ने कहा : हम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल और उस की रह़मत से बारिश हुई तो वोह मुझ पर ईमान रखने वाला है और सितारों का इन्कार करने वाला है और जिन लोगों ने कहा : हम पर फ़ुलां फ़ुलां सितारे के सबब बारिश हुई, كَافِرٌ بِیْ مُؤْمِنٌ بِالْكَوَاكِب या'नी वोह मेरे मुन्किर और सितारों के मानने वाले हुवे।

(بخاری،کتاب الاذان،باب یستقبل الامام الناس اذا سلم ۱/۲۹۵،حدیث:۸۴۶)

शारेहे बुख़ारी मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى इस ह़दीष के तह़्त लिखते हैं : अगर येह ए'तिक़ाद हो कि सितारे ही बारिश बरसाते हैं तो येह ए'तिक़ाद **कुफ़्र** है और अगर येह ए'तिक़ाद हो कि बारिश बिइज़्ने इलाही (या'नी **अल्लाह** तआ़ला की इजाज़त से) बरसती है और मुख़्तलिफ़ सितारों का तुलूअ़ व ग़ुरूब इस की अ़लामत है तो इस में कोई ह़रज नहीं। इस लिये येह कहना कि फ़ुलां निछत्तर की वजह से बारिश हुई ममनूअ़ है और येह कहना कि फ़ुलां निछत्तर (सितारों की मन्ज़िल) में बारिश हुई जाइज़ है। (كَافِرٌ بِىْ مُؤْمِنٌ بِالْكَوَاكِب की तशरीह़ में मुफ़्ती साह़िब लिखते हैं) यहां कुफ़्र और ईमान के लुग़वी मा'ना मुराद हैं या'नी मेरा मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाला) और निछत्तर (या'नी सितारों की मन्ज़िलों) का मानने वाला है। (नुज़हतुल क़ारी, 2/495,496)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिस सितारे को जहां चाहे पहुंचा दे

एक दिन मौलाना मुहम्मद हुसैन मेरठी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى के वालिद साहिब (जो इल्मे नुजूम में बड़ी महारत रखते थे) आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के पास आए तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन से दरयाफ़्त फ़रमाया : फ़रमाइये ! बारिश का क्या अन्दाज़ा है कब तक होगी ? उन्हों ने सितारों की वज़्अ़ से ज़ाइचा बनाया और बताया : इस महीने में पानी नहीं है आइन्दा माह में होगा। येह कह कर वोह ज़ाइचा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

की त़रफ़ बढ़ा दिया। आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने देख कर फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला को सब कुदरत है चाहे तो आज बारिश हो। उन्हों ने कहा : येह कैसे हो सकता है ? आप सितारों की वज़्अ़ को नहीं देखते ? आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : मैं सब देख रहा हूं और इस के साथ साथ सितारों के वाज़ेअ़ (बनाने वाले) और उस की कुदरत को भी देख रहा हूं। फिर इस मुश्किल मस्अले को आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने आसान त़रीक़े पर समझा दिया। वोह इस त़रह़ कि सामने घड़ी लगी हुई थी, आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने उन से पूछा : वक़्त क्या हुवा है ? बोले : सवा ग्यारह बजे हैं। आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : बारह बजने में कितनी देर है ? शाह साह़िब बोले : "ठीक पोन घन्टा (या'नी **45** मिनट)।" आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ उठे और बड़ी सूई को घुमा दिया फ़ौरन टन-टन बारह बजने लगे। अब आ'ला ह़ज़रत ने फ़रमाया : आप ने तो कहा था ठीक पोन घन्टा है बारह बजने में। शाह साह़िब बोले : आप ने इस की सूई खिसका दी वरना अपनी रफ़्तार से पोन घन्टे ही के बा'द बारह बजते। आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : इसी त़रह़ **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त क़ादिरे मुत़लक़ है कि जिस सितारे को जिस वक़्त जहां चाहे पहुंचा दे, वोह चाहे तो एक महीना क्या, एक हफ़्ता क्या, एक दिन क्या, बल्कि अभी बारिश होने लगे। इतना ज़बाने मुबारक से निकलना था कि चारों त़रफ़ से घन्घोर (गहरी) घटा आ गई और पानी बरसने लगा।

(तजल्लियाते इमाम अह़मद रज़ा, स.**116**)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नुजूमियों के ढकोसले

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : क़मर दर अ़क़रब या'नी चांद जब बुर्जे अ़करब[1] में होता है तो सफ़र करने को बुरा जानते हैं और नुजूमी इसे मन्ह़ूस बताते हैं और जब बुर्जे असद में होता है तो कपड़े क़त़अ़ कराने (या'नी कटवाने) और सिलवाने को बुरा जानते हैं। ऐसी बातों को हरगिज़ न माना जाए, येह बातें ख़िलाफ़े शरअ़ और नुजूमियों के ढकोसले हैं। नुजूम की इस क़िस्म की बातें जिन में सितारों की ताषीरात बताई जाती हैं कि फ़ुला सितारा तुलूअ़ करेगा तो फ़ुलां बात होगी, येह भी ख़िलाफ़े शरअ़ है। इस त़रह़ निछत्तरों का ह़िसाब कि फ़ुलां निछत्तर (या'नी सितारों की मन्ज़िल) से बारिश होगी येह भी ग़लत़ है ह़दीष में इस पर सख़्ती से इन्कार फ़रमाया।

(बहारे शरीअ़त, 3/659)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 : सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی تَبٰرَكَ الَّذِیْ جَعَلَ فِی السَّمَآءِ بُرُوْجًا (پ۱۹، الفرقان، آیت:۶۱) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बड़ी बरकत वाला है वोह जिस ने आस्मान में बुर्ज बनाए।" के तह़्त तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सफ़ह़ा 678 पर लिखते हैं : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि बुरूज से कवाकिबे सबआ़ सय्यारा के मनाज़िल मुराद हैं जिन की ता'दाद बारह है : (1) ह़मल (2) षौर (3) जौज़ा (4) सरत़ान (5) असद (6) सुम्बुला (7) मीज़ान (8) अ़क़रब (9) क़ौस (10) जदी (11) दल्व (12) हूत।

बद शुगूनी की तरदीद

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 590 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 ह़िकायात" के सफ़ह़ा 90 पर है : अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز के ग़ुलाम मुज़ाहिम का बयान है : जब हम मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا وَّ تَكْرِيمًا से निकले तो मैं ने देखा कि चांद "दबरान" में है, मैं ने उन से येह कहना तो मुनासिब न समझा बल्कि येह कहा : ज़रा चांद की त़रफ़ नज़र फ़रमाइये, कितना ख़ूब सूरत लगता है ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने देखा तो चांद दबरान[1] में था, फ़रमाया शायद तुम मुझे येह बताना चाहते हो कि चांद दबरान में है, मुज़ाहिम ! हम चांद सूरज के साथ नहीं, बल्कि **अल्लाह** वाह़िदो क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ के हुक्म व मशिय्यत के साथ निकलते हैं ।

(सिरते इब्ने अ़ब्दुल ह़कम, स.27)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6) नुजूमी को हाथ दिखाना

बहुत से लोग काहिनों, नुजूमियों, प्रोफ़ेसरों और रमल व जफ़र के झूटे दा'वेदारों के हां जा कर क़िस्मत का ह़ाल मा'लूम

1 दबरान चांद की एक मन्ज़िल का नाम है, इस वक़्त चांद षिरया और जौज़ा के दरमियान होता है । अ़रब में नुजूमियों का येह वहम राइज था कि येह साअ़त मन्ह़ूस होती है, मुज़ाहिम का इशारा ग़ालिबन इसी त़रफ़ था ।

करते हैं, अपना हाथ दिखाते हैं, फ़ालनामे निकलवाते हैं, फिर इस के मुताबिक़ आइन्दा ज़िन्दगी का लाइहए अमल बनाते हैं । इस तर्ज़े अमल में नुक़्सान ही नुक़्सान है चुनान्चे, इमामे अहले सुन्नत मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : काहिनों और जोतिषियों से हाथ दिखा कर तक़्दीर का भला बुरा दरयाफ़्त करना अगर बतौरे ए'तिक़ाद हो या'नी जो येह बताएं हक़ है तो कुफ़्रे ख़ालिस है, इसी को हदीष में फ़रमाया : فَقَدْ كَفَرَ بِمَانُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّد या'नी इस ने मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल होने वाली शै का इन्कार किया(1) और अगर बतौरे ए'तिक़ाद व तयक़्क़ुन (या'नी यक़ीन रखने के) न हो मगर मैल व रग़्बत के साथ हो तो गुनाहे कबीरा है, इसी को हदीष में फ़रमाया : لَمْ يَقْبَلِ اللّٰهُ لَهٗ صَلٰوةً اَرْبَعِيْنَ صَبَاحًا **अल्लाह** तआला चालीस दिन तक उस की नमाज़ क़बूल न फ़रमाएगा, और अगर बतौरे हज़्ल व इस्तिहज़ा (या'नी हंसी मज़ाक़ के तौर पर) हो तो अबष (या'नी बेकार) व मकरूह व हमाक़त है, हां ! अगर बक़स्दे ता'जीज़ (या'नी इसे आजिज़ करने के लिये) हो तो हरज नहीं । (फ़तावा रज़विय्या, **21/155**)

काहिनों की बा'ज़ बातें दुरुस्त होने की वजह

हज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا बयान करती हैं कि कुछ लोगों ने रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से काहिनों (या'नी इन की बातें क़ाबिले ए'तिमाद होने या न होने) के बारे में पूछा : तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इन की बातों

مدینہ

۱: ترمذی، کتاب الطھارۃ، باب ما جاء فی کراھیۃ اتیان الحائض، ۱/۱۸۵، حدیث: ۱۳۵

की कोई ह़क़ीक़त नहीं है। लोगों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो ख़बर वोह देते हैं बा'ज़ अवक़ात वोह सच निकलती हैं। इरशाद फ़रमाया : वोह कलिमा जिन्न से सुना हुवा होता है जिसे जिन्नी उचक लेती है और अपने दोस्त (काहिन) के कान में इस त़रह़ डाल देती है जिस त़रह़ एक मुरग़ी दूसरी मुरग़ियों के कान में आवाज़ पहुंचाती है, फिर काहिन इस कलिमे में सो से ज़ियादा झूटी बातें मिला देते हैं।

(مسلم،کتاب السلام،باب تحریم الکھانۃ و اتیان الکھان، ص۱۲۲٤،حدیث:۲۲۲۸)

नुजूमी के पास जाने वालों के लिये सबक़ आमोज़ ह़िक़ायत

इल्मे नुजूम से तअ़ल्लुक़ रखने वाले एक शख़्स का बयान है कि एक रोज़ मेरे पास दो मियां बीवी आए। दोनों में झगड़ा चल रहा था। मैं ने दोनों का हाथ देखा तो इल्मे नुजूम के मुत़ाबिक़ त़लाक़ की लकीर वाज़ेह़ और यक़ीनी थी। मैं ने उन से कहा कि आप दोनों जो मरज़ी आए कर गुज़रें, आप दोनों में त़लाक़ नहीं हो सकती। दो साल बा'द जब उन से मुलाक़ात हुई तो वोह बड़ी ख़ुश व ख़ुर्रम ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। पूछा तो कहने लगे : जब आप ने हमें बताया कि त़लाक़ किसी सूरत नहीं हो सकती तो हम ने सोचा कि जब त़लाक़ ही नहीं होनी तो क्यूं न मिल जुल कर ज़िन्दगी गुज़ारी जाए, उस दिन के बा'द से हमारी घरेलू ज़िन्दगी ख़ुश्यों से भर गई।

सर्जरी के ज़रीए हाथों की लकीरें बदलने वाले नादान

इस जदीद दौर में भी बहुत से लोग हाथों की लकीरों पर अन्धा ए'तिक़ाद रखते हैं। ऐसा ही एक ह़ैरत अंगेज़ मुज़ाहरा जापान में देखने में आया जहां लोगों को हाथों की लकीरों पर

इतना यक़ीन है कि उन्हों ने अपनी क़िस्मत की लकीरों को बदलने के लिये हथेलियों की सर्जरी कराना शुरूअ़ करवा दी है। दिल चस्प बात येह है कि मर्द तो इस सर्जरी के ज़रीए़ अपने हाथों पर लम्बी दौलत की लाईनें बनवाते हैं जब कि ख़वातीन की ख़्वाहिश शादी की बड़ी लकीर होती है। (जंग न्यूज़, ऑनलाइन, **17** जुलाई **2013**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(7) घर में पपीते का दरख़्त लगाने को मन्हूस समझना

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से "काठियावाड़" के अ़लाक़े से कुछ इस त़रह़ का **सुवाल** हुवा कि यहां आ़म त़ौर पर तमाम शहर मुत्तफ़िक़ है कि दरख़्त पपीता जिस को अरन्ड ख़रपुज़ा कहते हैं, मकाने मस्कूना (या'नी रिहाइशी मकान) में लगाना मन्हूस है और मन्अ़ है चूंकि यहां येह बकषरत और निहायत लज़ीज़ है लिहाज़ा इल्तिमास है कि इस बारे में अह़कामे शरई से ख़बरदार कीजिये? इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **जवाब** दिया : शरीअ़त में इस की कोई अस्ल नहीं, शरअ़ ने न इसे मन्हूस ठहराया न मुबारक, हां जिसे आ़म लोग नहूस समझ रहे हैं इस से बचना मुनासिब है कि अगर ह़स्बे तक़दीर इसे कोई आफ़त पहुंचे उन का बात़िल अ़क़ीदा और मुस्तह़कम होगा कि देखो येह काम किया था इस का येह नतीजा हुवा और मुमकिन (है) कि शैत़ान इस के दिल में भी वस्वसा डाले। (फ़तावा रज़विय्या, **23/266**)

(8) लड़कियों की मुसलसल पैदाइश को मन्हूस समझना

बेटा पैदा हो या **बेटी**, इन्सान को **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र बजा लाना चाहिये कि बेटा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत और बेटी रह़मत है और दोनों ही मां बाप के प्यार और शफ़्क़त के मुस्तह़िक़ हैं। उ़मूमन देखा गया है कि अ़ज़ीज़ो अक़रिबा की त़रफ़ से जिस ख़ुशी का इज़हार लड़के की विलादत पर होता है, मह़ल्ले भर में **मिठाइयां** बांटी जाती हैं, मुबारक सलामत का शोर मच जाता है लड़की की विलादत पर इस का दस्वां ह़िस्सा भी नहीं होता। **दुन्यावी** त़ौर पर लड़कियों से वालिदैन और ख़ान्दान को बज़ाहिर कोई फ़ाइदा ह़ासिल नहीं होता बल्कि इन की शादी के कषीर अख़राजात का बार बाप के कन्धों पर आन पड़ता है शायद इसी लिये बा'ज़ नादान बेटियों की विलादत होने पर नाक चढ़ाते (या'नी नापसन्दीदगी का इज़हार करते) हैं और बच्ची की अम्मी को त़रह़ त़रह़ के त़ा'ने दिये जाते हैं, त़लाक़ की धमकियां दी जाती हैं बल्कि ऊपर तले बेटियां होने की सूरत में इस धमकी को अ़मली ता'बीर भी दे दी जाती है। इस पर येह ज़ुल्म भी होता है कि बेटियों को ही मन्हूस क़रार दे दिया जाता है, इस वहम की भी शरअ़न कोई ह़ैषिय्यत नहीं, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से **सुवाल** हुवा : क्या फ़रमाते हैं उ़-लमाए दीन इस मस्अले में कि ज़ैद के तीसरी लड़की हुई, उस दिन से ज़ैद निहायत परेशान है। अकषर लोग कहते हैं कि तीसरी लड़की अच्छी नहीं होती तीसरा लड़का नसीब वर और अच्छा होता है।

ज़ैद ने एक साहिब से दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने फ़रमाया येह सब बातें अहले हुनूद और औरतों की बनाई हुई हैं अगर तुम को वहम हो तो सदक़ात कर दो, एक गाए या सात बकरियां क़ुरबानी कर दो और तोशए शहनशाहे बग़दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कर दो, हक़ तआ़ला ब तसद्दुक़े सरकारे गोषिय्यत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हर त़रह़ की बला व नुहूसत से महफ़ूज़ रखेगा। इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **जवाब** दिया : येह महज़ बात़िल और ज़नाने अवहाम और हिन्दवाना ख़यालाते शैत़ानिय्या हैं इन की पैरवी ह़राम है। तसद्दुक़ और तौशए सरकारे अबदे क़रार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत अच्छी चीज़ है मगर इस निय्यत से कि इस की नुहूसत दफ़्अ़ हो जाइज़ नहीं कि इस में इस की नुहूसत मान लेना हुवा और येह शैत़ान का डाला हुवा वहम तस्लीम कर लेना हुवा, وَالْعِیَاذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی

(आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कुछ सुतूर के बा'द लिखते हैं :) येह तौशा कि उन्हों ने बताया है निहायत मुफ़ीद चीज़ है और ह़ाजतें बर लाने (या'नी पूरी करने) के लिये मुजर्रब (या'नी तजरिबा शुदा)। (फ़तावा रज़विय्या, **29/644** व **646** मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बेटियों की परवरिश के फ़ज़ाइल

बेटियों की पैदाइश पर दिल छोटा करने वाले इस्लामी भाइयों को चाहिये कि दरजे ज़ैल **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** को बार बार पढ़ें जिन में बेटी की परवरिश पर मुख़्तलिफ़ बिशारतों से नवाज़ा गया है। चुनान्चे, हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

(1) "जब किसी के हां लड़की पैदा होती है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के घर फ़िरिश्तों को भेजता है जो आ कर कहते हैं : "ऐ घर वालो ! तुम पर सलामती हो ।" फिर फ़िरिश्ते उस बच्ची को अपने परों के साए में ले लेते हैं और उस के सर पर हाथ फेरते हुवे कहते हैं कि येह एक नातुवां व कमज़ोर जान है जो एक नातुवां से पैदा हुई है, जो शख़्स इस नातुवां जान की परवरिश की ज़िम्मेदारी लेगा तो क़ियामत तक मददे ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) इस के शामिले ह़ाल रहेगी ।" (مجمع الزوائد،کتاب البر و الصلة،باب ماجاء فی الاولاد،۸/۲۸۵،حدیث:۱۳۴۸۴)

(2) "बेटियों को बुरा मत कहो, मैं भी बेटियों वाला हूं । बेशक बेटियां तो बहुत मह़ब्बत करने वालियां, ग़मगुसार और बहुत ज़ियादा मेहरबान होती हैं ।" (مسند الفردوس للدیلمی،۲/۴۱۵،حدیث:۷۵۵۶)

(3) "जिस के हां बेटी पैदा हो और वोह इसे ईज़ा न दे और न ही बुरा जाने और न बेटे को बेटी पर फ़ज़ीलत दे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा ।"

(المستدرک للحاکم،کتاب البر والصلة ،۵/۲۴۸،حدیث:۷۴۲۸)

(4) "जिस की तीन बेटियां हों, वोह इन का ख़याल रखे, इन को अच्छी रिहाइश दे, इन की कफ़ालत करे तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है ।" अ़र्ज़ की गई : "और दो हों तो ?" फ़रमाया : "और दो हों तब भी ।" अ़र्ज़ की गई : "अगर एक हो तो ?" फ़रमाया : "अगर एक हो तो भी ।"

(المعجم الاوسط ،۴/۳۴۷،حدیث: ۶۱۹۹)

(5) "जिस शख़्स पर बेटियों की परवरिश का बार पड़ जाए और वोह इन के साथ हुस्ने सुलूक करे तो येह बेटियां उस के लिये जहन्नम से रोक बन जाएंगी।"

(مسلم،کتاب البر والصلة ،باب فضل الاحسان الی البنات ،ص١٤١٤،حدیث:٢٦٢٩)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बेटियों पर शफ़्क़त

(1) ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जब अपने वालिदे बुज़ुर्गवार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर होतीं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हो जाते, इन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाते, फिर इन का हाथ अपने हाथ में ले लेते, इसे बोसा देते फिर इन को अपने बैठने की जगह पर बिठाते। इसी त़रह़ जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां तशरीफ़ ले जाते तो वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देख कर खड़ी हो जातीं, आप का हाथ अपने हाथ में ले लेतीं फिर इस को चूमतीं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी जगह पर बिठातीं।

(ابو داؤد، کتاب الادب ،با ب ماجاء فی القیام،٤/٤٥٤،حدیث:٥٢١٧)

(2) ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से बड़ी शहज़ादी हैं जो ए'लाने नबुव्वत से दस साल क़ब्ल मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में पैदा हुईं। जंगे बद्र के बा'द हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को मक्के से मदीना बुला लिया। जब

येह हिजरत के इरादे से ऊंट पर सुवार हो कर मक्के से बाहर निकलीं तो काफ़िरों ने इन का रास्ता रोक लिया। एक ज़ालिम ने नेज़ा मार कर इन को ऊंट से ज़मीन पर गिरा दिया जिस की वजह से इन का ह़म्ल साक़ित़ हो गया। नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस वाक़िए़ से बहुत सदमा हुवा चुनान्चे, आप ने इन के फ़ज़ाइल में इरशाद फ़रमाया : هِيَ أَفْضَلُ بَنَاتِي أُصِيبَتْ فِيَّ या'नी येह मेरी बेटियों में इस ए'तिबार से फ़ज़ीलत वाली है कि मेरी त़रफ़ हिजरत करने में इतनी बड़ी मुसीबत उठाई। जब आठ हिजरी में ह़ज़रते ज़ैनब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का इन्तिक़ाल हो गया तो नमाज़े जनाज़ा पढ़ा कर ख़ुद अपने मुबारक हाथों से क़ब्र में उतारा।

(شرح العلامة الزرقانی، باب فی ذکر اولاده الكرام، ٤/٣١٨، ماخوذاً)

(3) ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि नज्जाशी बादशाह ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में कुछ ज़ेवरात बत़ौरे तोह़फ़ा भेजे जिन में एक ह़बशी नगीने वाली अंगूठी भी थी। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस अंगूठी को छड़ी या अंगुश्ते मुबारक से मस किया (या'नी छुवा) और अपनी नवासी उमामा को बुलाया जो शहज़ादिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की बेटी थीं और फ़रमाया : "ऐ छोटी बच्ची ! इसे तुम पहन लो।"

(ابو داؤد، کتاب الخاتم، باب ماجاء فی ذهب للنساء، ٤/١٢٥، حديث: ٤٢٣٥)

(4) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए तो आप (अपनी नवासी)

उमामा बिन्ते अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को अपने कन्धे पर उठाए हुवे थे । फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ाने लगे तो रुकूअ़ में जाते वक़्त इन्हें उतार देते और जब खड़े होते तो इन्हें उठा लेते । (بخاری،کتاب الادب،باب رحمۃ الولد،٤/١٠٠،حدیث:٥٩٩٦)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9) मकान में नए बच्चे की विलादत को मन्हूस जानना

बा'ज़ लोग रहने के पुराने मकान में नए बच्चे की विलादत को मन्हूस जानते हैं, इसी त़रह़ का एक **सुवाल** (फ़ारसी ज़बान में) आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में किया गया कि उ़-लमाए दीन और मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस रस्म के बारे में क्या फ़रमाते हैं कि बंगाल में येह रवाज है कि नौ मौलूद की विलादत के लिये उस की विलादत से क़ब्ल अलग कमरा ता'मीर किया जाता है और पहले से ता'मीर शुदा मकान जहां वोह रिहाइश पज़ीर होते हैं इस में नए बच्चे की विलादत मन्हूस ख़याल की जाती है । क्या उन का येह इक़दाम शरअ़न जाइज़ है या नहीं ? और ह़ज़रते सय्यिदुना रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में ऐसे होता था या नहीं ? इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **जवाब** दिया : येह क़बीह़ (या'नी बुरी) रस्म उस पाक ज़माने में बिल्कुल न थी बल्कि इस के बा'द भी अ़रसए दराज़ तक बल्कि अब तक आ़म इस्लामी मुमालिक में इस का नामो निशान तक नहीं पाया जाता,

येह हिन्दवाना और मुशरिकाना रसूम के मुशाबेह बल्कि इन से भी बदतर है क्यूंकि हिन्दू भी ऐसा नहीं करते अगर येह अ़मल बदफ़ाली और गुमराही के ख़याल से न हो तब भी ब वजहे इसराफ़ मा'यूब है जब कि **अल्लाह** तआ़ला का इरशाद है : وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْرِفِیْنَ ﴿۱۴۱﴾ (پ۸،انعام:۱۴۱) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेजा न ख़र्चो बेशक बेजा ख़र्च ने वाले उसे पसन्द नहीं।) येह इक़्दाम मुतअ़द्दद वुजूह की बिना पर फ़ाइदे और भलाई से ख़ाली है और तब्ज़ीर के ज़ुमरे में आता है जब कि **अल्लाह** तआ़ला का फ़रमान है कि اِنَّ الْمُبَذِّرِیْنَ كَانُوْۤا اِخْوَانَ الشَّیٰطِیْنِ ؕ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۲۷) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक उड़ाने वाले शैत़ानों के भाई हैं।) इस वहम की बुन्याद शैत़ानी है मज़ीद येह कि इस में बद फ़ाली व बद शुगूनी वाली गुमराही भी शामिल है। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया बुरी फ़ाल निकालना और इस पर कारबन्द होना मुशरिकीन का त़रीक़ा और दस्तूर है।

(फ़तावा रज़विय्या, 23/264 ता 266 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(10) ग्रहन से जुड़े हुवे तवह्हुमात

सूरज और चांद ग्रहन के बारे में लोग इफ़रात़ व तफ़रीत़ का शिकार नज़र आते हैं। कहीं तो सूरज ग्रहन का (मख़्सूस शीशों के ज़रीए) नज़ारा करने के लिये पारटियां मुन्अ़क़िद की जाती हैं और कहीं ग्रहन के बारे में मुख़्तलिफ़ तसव्वुरात व तवह्हुमात पाए जाते हैं, मषलन : ❁ ग्रहन उस वक़्त लगता है जब सूरज को बलाएं और ख़ौफ़नाक जानवर निगल लेते हैं, एक वेब साइट से ली गई मा'लूमात के मुत़ाबिक़ जब भी चांद को ग्रहन लगता तो

क़दीम चीन के लोग इकठ्ठे मिल के पूरी कुव्वत से शोर मचाते, इन का अ़क़ीदा था कि चांद को एक बहुत बड़ा अज़्दहा खा रहा है, हमारा येह शोर चांद को बचाने की कामयाब कोशिश है। चांद ग्रहन अपने वक़्त पर ख़त्म हो जाता लेकिन येह लोग अपनी कामयाबी समझ कर इस का जश्न मनाते और अगली दफ़्आ़ पहले से ज़ियादा शोर मचाया करते। ۞ ग्रहन के वक़्त ह़ामिला ख़वातीन को कमरे के अन्दर रहने और सब्ज़ी वग़ैरा न काटने की हिदायत की जाती है ताकि इन के बच्चे किसी पैदाइशी नक़्स के बिग़ैर पैदा हों ۞ ग्रहन के वक़्त ह़ामिला ख़वातीन को सिलाई कढ़ाई से भी मन्अ़ किया जाता है क्यूंकि येह ख़याल किया जाता है कि इस से बच्चे के जिस्म पर ग़लत़ अषर पड़ सकता है। एक मग़रिबी मुल्क में रहने वाली दुन्यावी ता'लीम याफ़्ता ख़ातून सूरज ग्रहन से चन्द रोज़ पहले सख़्त परेशान थी क्यूंकि उस के हां पहले बच्चे की विलादत होने वाली थी और इस से महज़ चन्द रोज़ पहले सूरज ग्रहन के बच्चे पर मुमकिना अषरात का ख़ौफ़ इसे तशवीश में मुब्तला किये हुवे था। उस ने अपनी डॉक्टर को महज़ येह पूछने के लिये फ़ोन किया कि आया बच्चे को ग्रहन के मुज़िर अषरात से बचाने के लिये इस की क़ब्ल अज़ वक़्त विलादत मुमकिन है ? डॉक्टर ने उसे दिलासा देते हुवे समझाया कि उसे परेशान होने की ज़रूरत नहीं है और ग्रहन के अषरात की ह़क़ीक़त तवह्हुमात से ज़ियादा नहीं है। ۞ लोगों का एक ग़लत़ ख़याल येह भी है कि जब सूरज या चांद को ग्रहन लगता है तो ह़ामिला गाए, भेंस, बकरी और दीगर जानवरों के गले से रस्सी या ज़न्जीर खोल देनी चाहिये ताकि इन पर बुरा अषर न पड़े ۞ बा'ज़ अ़लाक़ों में ग्रहन के वक़्त ज़ईफ़ुल ए'तिक़ाद अफ़राद ख़ुद को कमरों में बन्द

कर लेते हैं ताकि बक़ौल इन के वोह ग्रहन के वक़्त ख़ारिज होने वाली नुक़्सान देह लहरों से बच सकें ۞ बा'ज़ मुआ़शरों में जिस दिन ग्रहन लगता है अकषर लोग खाना पकाने से गुरैज़ करते हैं क्यूंकि उन का ख़याल है कि ग्रहन के वक़्त ख़त़रनाक जराषीम पैदा होते हैं ۞ कई मशरिक़ी मुल्कों में इ़ल्मे नुजूम के माहिरीन सूरज ग्रहन से मुन्सलिक पेशन गोइयां करते हैं जिन में किसी तबाही या नुक़्सान की निशान देही की जाती है, मषलन चोरी, इ़ग़्वा, क़त्लो ग़ारत, ख़ुदकुशियां और तशद्दुद के वाक़िआ़त बिल ख़ुसूस ख़्वातीन की अम्वात में इज़ाफ़ा, ला क़ानूनिय्यत और बे इन्साफ़ी के वाक़िआ़त कषरत से होने की पेशन गोई की जाती है। अल ग़रज़ मशरिक़ो मग़रिब, तरक़्क़ी पज़ीर और तरक़्क़ी याफ़्ता दुन्या में हर जगह सूरज और चांद ग्रहन के इन्सान पर मुज़िर अषरात के ह़वाले से ख़दशात पाए जाते हैं।

ग्रहन किसी की मौत और ज़िन्दगी की वजह से नहीं लगता

अ़रब मुआ़शरे में भी सूरज और चांद ग्रहन के मुतअ़ल्लिक़ आ़म ख़याल था कि येह किसी बड़े वाक़िए़ मषलन किसी की वफ़ात या पैदाइश पर वुक़ूअ़ पज़ीर होते हैं। जब दुन्या के नक़्शे पर इस्लाम की इन्क़िलाबी दा'वत उभरी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन तवह्हुमात को ख़त्म किया। जिस दिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साहिबज़ादे ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه इन्तिक़ाल कर गए उसी दिन सूरज में ग्रहन लगा। बा'ज़ लोगों ने ख़याल किया कि येह ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के ग़म में वाक़ेअ़ हुवा है, चुनान्चे,

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लोगों को सूरज ग्रहन की नमाज़ पढ़ने के बा'द खुत़्बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : सूरज और चांद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में से दो निशानियां हैं, इन्हें ग्रहन किसी की मौत और ज़िन्दगी की वजह से नहीं लगता। पस जब तुम इसे देखो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पुकारो, उस की बड़ाई बयान करो, नमाज़ पढ़ो और सदक़ा दो।

(بخاری،کتاب الکسوف،باب الصدقة فی الکسوف ١/٣٥٧،٣٦٣،حدیث:١٠٤٤،١٠٦٠،ملخصاً)

मदनी फूल :– सूरज ग्रहन की नमाज़ सुन्नते मुअक्कदा है और चांद ग्रहन की मुस्तह़ब। सूरज ग्रहन की नमाज़ जमाअ़त से पढ़नी मुस्तह़ब है और तन्हा तन्हा भी हो सकती है और जमाअ़त से पढ़ी जाए तो खुत़्बे के सिवा तमाम शराइत़े जुमुआ़ इस के लिये शर्त़ हैं, वोही शख़्स इस की जमाअ़त क़ाइम कर सकता है जो जुमुआ़ की कर सकता है, वोह न हो तो तन्हा तन्हा पढ़ें, घर में या मस्जिद में। (बहारे शरीअ़त, 1/787)

हमें क्या करना चाहिये ?

जब सूरज या चांद को ग्रहन लगे तो मुसलमानों को चाहिये कि वोह इस नज़ारे से मह़ज़ूज़ होने (डॉक्टरों का कहना है कि ग्रहन के वक़्त सूरज को बराहे रास्त देखने से आंख की बीनाई भी जा सकती है) और तवहहुमात का शिकार होने के बजाए बारगाहे इलाही में ह़ाज़िरी दें और गिड़ गिड़ा कर अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी त़लब करें, उस यौमे क़ियामत को याद करें जब सूरज और चांद बे नूर हो जाएंगे और सितारे तोड़ दिये जाएंगे और पहाड़ लपेट दिये जाएंगे।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(11) औ़रत, घर और घोड़े को मन्हूस जानना

बा'ज़ लोग औ़रत, घर और घोड़े को मन्हूस समझते हैं और दलील के त़ौर पर येह ह़दीषे पाक पेश करते हैं कि रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, मह़बूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : नुहूसत औ़रत में, घर में और घोड़े में है।

(بخاری،کتاب النکاح،باب ما یتقی من شئوم المراۃ ۳/ ۴۳۰، حدیث:۵۰۹۳)

अगर इस ह़दीषे पाक की तशरीह़ पढ़ और समझ ली जाए तो उम्मीद है कि ऐसे लोग अपने मौक़िफ़ से रुजूअ़ कर लेंगे, चुनान्चे, मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त लिखते हैं : इस ह़दीष के बहुत मा'ना किये गए **एक** येह कि अगर किसी चीज़ से नुहूसत होती तो इन तीन में होती, **दूसरे** येह कि औ़रत की नुहूसत येह है कि अवलाद न जने और ख़ावन्द की नाफ़रमान हो, मकान की नुहूसत येह है कि तंग हो वहां अज़ान की आवाज़ न आए और उस के पड़ोसी ख़राब हों, घोड़े की नुहूसत येह है कि मालिक को सुवारी न दे, सरकश हो, बहर ह़ाल यहां **शूम** से मुराद बदफ़ाल (या'नी बद शुगूनी) नहीं कि इस की वजह से रिज़्क़ घट जाए या आदमी मर जाए कि इस्लाम में बदफ़ाली ममनूअ़ है। लिहाज़ा येह ह़दीष لَاطِيَرَةَ की ह़दीष के ख़िलाफ़ नहीं। ख़याल रहे कि बा'ज़ बन्दे और बा'ज़ चीज़ें मुबारक तो होती हैं कि इन से घर में, माल में और उ़म्र में ज़ियादतियां हो जाती हैं जैसे (ह़ज़रते) ईसा عَلَيْهِ السَّلَام

फ़रमाते हैं : وَجَعَلَنِیْ مُبٰرَكًا (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उस ने मुझे मुबारक किया । (پ١٦، مریم:٣١)) मगर कोई चीज़ इस के मुक़ाबिल मा'ना में मन्हूस नहीं, हां ! काफ़िर, कुफ़्र, ज़मानए अ़ज़ाब मन्हूस है, रब तआ़ला फ़रमाता है : فِیْ یَوْمِ نَحْسٍ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐसे दिन में जिस की नुहूसत (इन पर हमेशा के लिये रही) । (پ٢٧،القمر:١٩) (मिरआतुल मनाजीह, **5/6**)

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का मौक़िफ़

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या में लिखते हैं : जब उम्मुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह ह़दीष पहुंची कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि औ़रत, घर और घोड़े में नुहूसत है तो आप बहुत ज़ियादा ग़ज़बनाक हुईं और फ़रमाया : उस ख़ुदा बुज़ुर्ग व बरतर की क़सम ! जिस ने मुह़म्मदे करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मुक़द्दस कुरआन नाज़िल फ़रमाया कि हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस त़रह़ नहीं इरशाद फ़रमाया बल्कि यूं इरशाद फ़रमाया कि दौरे जाहिलिय्यत वाले इन चीज़ों से नुहूसत और बद शुगूनी लेते थे । (इमाम त़ह़ावी व इब्ने जरीर ने ब वासित़ा क़तादा ब वासित़ा अबू ह़स्सान इसे रिवायत किया है नीज़ ह़ाकिम और बैहक़ी ने इसे रिवायत किया है ।)

(ت)(شرح معانی الآثار للطحاوی،کتاب الکراھة ،باب الاجتناب من ذی داء الطاعون،٤/ ١٣٤)

(फ़तावा रज़विय्या, **24/246**)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़तावा रज़विय्या का एक सुवाल जवाब

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से **सुवाल** किया गया : क्या फ़रमाते हैं उ़-लमाए दीन इस मस्अले में कि येह जो मश्हूर है कि घर और घोड़ा और औ़रत मन्हूस होते हैं इस की क्या अस्ल है ? आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **जवाब** दिया : येह सब मह़ज़ बात़िल व मर्दूद ख़यालात हिन्दूओं के हैं, शरीअ़ते मुत़ह्हरा में इन की कोई अस्ल नहीं, शरअ़न घर की नुहूसत येह है कि तंग हो, हमसाए बुरे हों, घोड़े की नुहूसत येह कि शरीर हो, बद लगाम, बद रिकाब हो, औ़रत की नुहूसत येह कि बद ज़बान हो, बद रूया हो, बाक़ी वोह ख़याल कि औ़रत के पहरे से येह हुवा, फुलां के पहरे से येह, येह सब बात़िल और काफ़िरों के ख़याल हैं । واللہ تعالٰی اعلم (फ़तावा रज़विय्या, 21/220)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(12) मय्यित को ग़ुस्ल देने के बा'द घड़ा तोड़ देना

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से **सुवाल** किया गया कि घड़े, बधने (या'नी लोटे) मय्यित को ग़ुस्ल देने के बा'द फोड़ डालना जाइज़ है या नहीं ? आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **जवाब** दिया : गुनाह है कि बिला वजहे तज़यीए़ माल (या'नी माल को ज़ाएअ़ करना) है कि अगर वोह नापाक भी हो जाएं ताहम पाक कर लेना मुमकिन । हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : اِنَّ اللّٰهَ كَرِهَ لَكُمْ ثَلٰثًا **अल्लाह** तआ़ला तीन बातें तुम्हारे लिये नापसन्द रखता है :

قِيْلَ وَقَالَ وَكَثْرَةَ السُّؤَالِ وَاِضَاعَةَ الْمَالِ फ़ुज़ूल बक बक और सुवाल की कषरत और माल की इज़ाअ़त (या'नी माल को ज़ाएअ़ करना)। رَوَاهُ الشَّيْخَانِ وَغَيْرُهُمَا (या'नी इसे बुख़ारी व मुस्लिम और दीगर ने रिवायत किया)

और अगर येह ख़याल किया जाए कि इन से मुर्दे को नहलाया है तो इन में **नुहूसत** आ गई तो येह ख़याल अवहामे कुफ़्फ़ारे हिन्द (या'नी हिन्द के ग़ैर मुस्लिमों के वहमों) से बहुत मिलता है। واللہ تعالٰی اعلم (फ़तावा रज़विय्या, 9/98)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

न जाने किस मन्हूस की शक्ल देखी थी ?

बद शुगूनी की आ़दते बद में मुब्तला शख़्स को जब किसी काम में नुक़्सान होता है या किसी मक़सद में नाकामी होती है तो वोह येह जुम्ला कहता है : आज सुब्ह़ सवेरे न जाने किस मन्हूस की शक्ल देखी थी ? ह़ालांकि इन्सान सुब्ह़ सवेरे बिस्तर पर आंख खोलने के बा'द सब से पहले अपने ही घर के किसी फ़र्द की शक्ल देखता है, तो क्या घर का कोई आदमी इस क़दर मन्हूस हो सकता है कि सिर्फ़ उस की शक्ल देख लेने से सारा दिन नुहूसत में गुज़रता है ? किसी को मन्हूस कहने पर बा'ज़ अवक़ात शर्मिन्दगी का भी सामना करना पडता है, एक सबक़ आमोज़ ह़िकायत से इस बात को समझने की कोशिश कीजिये, चुनान्चे, एक बादशाह और उस के साथी शिकार की ग़रज़ से जंगल की जानिब चले जा रहे थे। सुब्ह़ के सन्नाटे में घोड़ों की टापें साफ़ सुनाई दे रही थीं जिन्हें सुनते ही अकषर राहगीर रास्ते से हट जाते थे क्यूंकि बादशाह सलामत शिकार पर जाते हुवे किसी का रास्ते में आना पसन्द नहीं करते थे। बादशाह और उस के साथियों की सुवारी

बड़े तुमतुराक़ (या'नी शानो शौकत) से शहर से गुज़र रही थी, जूं ही बादशाह शहर के फ़सील (चार दीवारी) के क़रीब पहुंचा उस की निगाह सामने आते हुवे एक आंख वाले शख़्स पर पड़ी जो रास्ते से हटने के बजाए बड़ी बे नियाज़ी से चला आ रहा था। इसे सामने आता हुवा देख कर बादशाह गुस्से से चीख़ा : "उफ़ ! येह तो इन्तिहाई बद शुगूनी है। क्या इस बद बख़्त काने (या'नी एक आंख वाले) शख़्स को इल्म नहीं था कि जब बादशाह की सुवारी गुज़र रही हो तो रास्ता छोड़ दिया जाता है, लेकिन इस मन्हूस यक चश्म ने तो हमारा रास्ता काट कर इन्तिहाई नुहूसत का षुबूत दिया है।" बादशाह सिपाहियों की जानिब मुड़ा और गुस्से से चीख़ा : " हम हुक्म देते हैं कि इस एक आंख वाले शख़्स को इन सुतूनों से बान्ध दिया जाए और हमारे लौटने तक येह शख़्स यहीं बन्धा रहेगा। हम वापसी पर इस की सज़ा तजवीज़ करेंगे।" सिपाहियों ने फ़ौरन हुक्म की ता'मील की और उस शख़्स को सुतूनों से बान्ध दिया गया। बादशाह और उस के साथी गर्द उड़ाते जंगल की जानिब रवाना हो गए । बादशाह के ख़ुदशात के बर अ़क्स इस रोज़ बादशाह का शिकार बड़ा कामयाब रहा। बादशाह ने अपनी पसन्द के जानवरों और परन्दों का शिकार किया। बादशाह बहुत ख़ुश था क्यूंकि आज उस का एक निशाना भी नहीं चुका बल्कि जिस जानवर पर निगाह रखी उसे ह़ासिल कर लिया। वज़ीर ने जानवर और परन्दों को गिनते हुवे कहा : "वाह ! आज तो आप का शिकार बहुत ख़ूब रहा, क्या निगाह थी और क्या निशाना !" इसी त़रह़ तमाम साथी भी बादशाह की ता'रीफ़ में मसरूफ़ थे, जब शाम ढले बादशाह शहर के क़रीब पहुंचा तो उस शख़्स को रस्सियों में जकड़ा हुवा पाया। बादशाह की सुवारी के साथ साथ जानवरों

और परन्दों से भरा छकड़ा भी चला आ रहा था जिसे देख कर बादशाह और उस के साथी ख़ुशी से फूले न समा रहे थे। भरा हुवा छकड़ा देख कर वोह शख़्स ज़ोरदार आवाज़ में बादशाह से मुख़ातब हुवा : कहिये बादशाह सलामत ! हम दोनों में से कौन मन्हूस है, मैं या आप ? येह सुनते ही बादशाह के सिपाही उस शख़्स के सर पर तल्वार तान कर खड़े हो गए लेकिन बादशाह ने उन्हें हाथ के इशारे से रोक दिया। वोह शख़्स बिला ख़ौफ़ फिर मुख़ातब हुवा : कहिये बादशाह सलामत ! हम में से कौन मन्हूस है "मैं या आप ?" मैं ने आप को देखा तो मैं रस्सियों में बन्ध कर चिल चिलाती धूप में दिन भर जलता रहा जब कि मुझे देखने पर आप को आज ख़ूब शिकार हाथ आया। येह सुन कर बादशाह नादिम हुवा और उस शख़्स को फ़ौरन आज़ाद कर दिया और बहुत से इन्आ़मो इकराम से भी नवाज़ा।

क्या किसी को नज़र लग सकती है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सानी जिस्म और दीगर अश्या को नज़र लगना, इस से बचने की तदाबीर करना, इस का इलाज करना शरअ़न षाबित है लेकिन याद रहे किसी की नज़र लगना और चीज़ है और किसी को मन्हूस समझना और चीज़। ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दस बेटे बहुत ख़ूब सूरत और बहुत बा कमाल थे, मिस्र के चार दरवाज़े थे, जब दस बेटे मिस्र रवाना होने लगे तो आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को येह ख़दशा हुवा कि अगर दस के दस एक दरवाज़े से दाख़िल हुवे तो इन पर देखने वालों की नज़र लग जाएगी इस लिये इरशाद फ़रमाया :

يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ (پ۱۳،یوسف:۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ मेरे बेटो एक दरवाज़े से न दाख़िल होना और जुदा जुदा दरवाज़ों से जाना।*

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयत के तह़्त लिखते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि नज़र ह़क़ है और इस में अषर है, येह भी मा'लूम हुवा कि नज़रे बद से बचने की तदबीर करना सुन्नते पैग़म्बर है (नुरूल इरफ़ान, स. 387) सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस आयत के तह़्त लिखते हैं : ताकि नज़रे बद से मह़फ़ूज़ रहो। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीष में है कि नज़र ह़क़ है। पहली मरतबा ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह नहीं फ़रमाया था इस लिये कि उस वक़्त तक कोई येह न जानता था कि येह सब भाई और एक बाप की अवलाद हैं लेकिन अब चूंकि जान चुके थे इस लिये नज़र हो जाने का एह़तिमाल था, इस वासिते आप ने अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा हो कर दाख़िल होने का हुक्म दिया। इस से मा'लूम हुवा कि आफ़तों और मुसीबतों से दफ़्अ़ की तदबीर और मुनासिब एह़तियातें अम्बिया (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) का त़रीक़ा हैं और इस के साथ ही आप ने अम्र (या'नी मुआ़मला) **अल्लाह** को तफ़्वीज़ कर दिया कि बा वुजूद एह़तियात़ों के तवक्कुल व ए'तिमाद **अल्लाह** पर है अपनी तदबीर पर भरोसा नहीं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स.654)

***अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمين بِجاہِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रहमते आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नज़र लगाने की कोशिश नाकाम रही

पारह **29** सूरतुल क़लम की आयत **51** में है :

وَ اِنْ یَّكَادُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَیُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَ یَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌۘ(۵۱) (پ۲۹،القلم:۵۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ज़रूर काफ़िर तो ऐसे मा'लूम होते हैं कि गोया अपनी बद नज़र लगा कर तुम्हें गिरा देंगे जब कुरआन सुनते हैं और कहते हैं येह ज़रूर अ़क़्ल से दूर हैं।*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस आयत के तह़्त लिखते हैं : मन्क़ूल है कि अ़रब में बा'ज़ लोग नज़र लगाने में शोहरए आफ़ाक़ थे और उन की येह ह़ालत थी कि दा'वा कर के नज़र लगाते थे और जिस चीज़ को उन्हों ने गुज़न्द (या'नी नुक़्सान) पहुंचाने के इरादे से देखा, देखते ही हलाक हो गई, ऐसे बहुत वाक़िआ़त उन के तजरिबा में आ चुके थे। कुफ़्फ़ार ने उन से कहा कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नज़र लगाएं तो उन लोगों ने हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को बड़ी तेज़ निगाहों से देखा और कहा कि हम ने अब तक न ऐसा आदमी देखा न ऐसी दलीलें देखीं और उन का किसी चीज़ को देख कर ह़ैरत करना ही सितम होता था लेकिन उन की येह तमाम जिद्दो जहद भी मिष्ल उन के और मकाइद (या'नी बुरी चालों) के जो रात दिन वोह करते रहते थे बेकार गई और **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन के शर से मह़फ़ूज़ रखा और येह आयत नाज़िल हुई। (ह़ज़रते) ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : जिस को नज़र लगे उस पर येह आयत पढ़ कर दम कर दी जाए। (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स.**1048**)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : अ़रब में बा'ज़ लोग नज़रे बद लगाने में मश्हूर थे अगर वोह भूके हो कर किसी को तेज़ निगाह से देख कर कहते कि "ऐसा हम ने आज तक न देखा, क्या ही अच्छा है !" तो वोह आदमी या जानवर फ़ौरन हलाक हो जाता। कुफ़्फ़ारे मक्का बहुत लालच दे कर इन्हें लाए, येह ह़स्बे आ़दत तीन दिन भूके रहे फिर हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे जब कि आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तिलावते कुरआन फ़रमा रहे थे उन्हों ने बार बार येही कहा मगर **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को उन की नज़रे बद से मह़फ़ूज़ रखा, इस पर आयत आई। मा'लूम हुवा कि बद निय्यती से हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का चेहरए अन्वर देखना कुफ़्र है, ए'तिक़ाद से रुख़े अन्वर की ज़ियारत सह़ाबी बना देती है, येही ह़ाल कुरआन शरीफ़ का है, बद निय्यती से इस का पढ़ना कुफ़्र है, नेक निय्यती से इ़बादत। इस से दो मस्अले मा'लूम हुवे एक येह कि नज़रे बद ह़क़ है, दूसरे येह कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रब के ऐसे मह़बूब हैं कि रब इन्हें नज़रे बद से बचाता है क्यूंकि कुफ़्फ़ार ने उन लोगों से नज़रे बद लगाने को कहा था जिन की बुरी नज़र लोगों को हलाक कर देती थी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़बीब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को उन के शर से मह़फ़ूज़ रखा। येह आयत नज़रे बद से बचने के लिये अकसीर (या'नी मुफ़ीद) है।

(नुरूल इरफ़ान, स. **971**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नज़र हक़ है

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : नज़र हक़ है, अगर कोई चीज़ तक़दीर से बढ़ सकती तो इस पर नज़र बढ़ जाती और जब तुम धुलवाए जाओ तो धो दो। (مسلم،کتاب السلام،باب الطب و المرض و الرقی ،ص۱۲۰۲،حدیث:۲۱۸۸)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने इस हदीषे पाक के तहत जो वज़ाहत फ़रमाई है, इस से हासिल होने वाले मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं : ❁ नज़रे बद का अषर बरहक़ है इस से मन्ज़ूर (या'नी जिसे नज़र लगी उस को नुक़्सान पहुंच जाता है ❁ नज़र का अषर इस क़दर सख़्त है कि अगर कोई चीज़ तक़्दीर का मुक़ाबला कर सकती तो नज़रे बद कर लेती कि तक़्दीर में आराम लिखा हो मगर येह तक्लीफ़ पहुंचा देती मगर चूंकि कोई चीज़ तक़्दीर का मुक़ाबला नहीं कर सकती इस लिये येह नज़रे बद भी तक़्दीर नहीं पलट सकती। ❁ अगर किसी नज़रे हुवे (या'नी जिस को नज़र लगी हो उस) को तुम पर शुबा हो कि तुम्हारी नज़र उसे लगी है और वोह दफ़्ए़ नज़र (या'नी नज़र उतारने) के लिये तुम्हारे हाथ पाउं धुलवा कर अपने पर छींटा मारना चाहे तो तुम बुरा न मानो बल्कि फ़ौरन अपने येह आ'ज़ा धो कर उसे दे दो, नज़र लग जाना ऐब नहीं **नज़र तो मां की भी लग जाती है।** ❁ इस हदीष से मा'लूम हुवा कि अवाम में मश्हूर टोटके अगर ख़िलाफ़े शरअ़ न हों तो इन

का बन्द करना ज़रूरी नहीं, देखो नज़र वाले के हाथ पाउं धो कर मन्ज़ूर (या'नी जिस को नज़र लगी हो) को छींटा मारना अ़रब में मुरव्वज (या'नी इस का रवाज) था, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस को बाक़ी रखा। ۞ हमारे हां थोड़ी सी आटे की भूसी और तीन सुर्ख़ (लाल) मिर्चें मन्ज़ूर (या'नी जिस को नज़र लगी हो) पर सात बार घुमा कर (सर से पाउं तक) फिर आग में डाल देते हैं अगर नज़र होती है तो भुस नहीं उठती और रब तआ़ला शिफ़ा देता है। ۞ जैसे दवाओं में नक़्ल की ज़रूरत नहीं तजरिबा काफ़ी है ऐसे ही दुआ़ओं और ऐसे टोटकों में नक़्ल ज़रूरी नहीं ख़िलाफ़े शरअ़ न हों तो दुरुस्त हैं अगर्चे माषूर दुआ़एं अफ़्ज़ल हैं। ۞ ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक ख़ूब सूरत तन्दुरुस्त बच्चा देखा तो फ़रमाया इस की ठोड़ी में सियाही (काला टीका) लगा दो ताकि नज़र न लगे। ۞ ह़ज़रते हिश्शाम इब्ने उ़र्वा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब कोई पसन्दीदा चीज़ देखते तो फ़रमाते : مَاشَاءَ اللهُ لَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ ۞ उ़-लमा फ़रमाते हैं कि बा'ज़ नज़रों में ज़हरीला पन होता है जो अषर करता है। (मिरकात)

(मिरआतुल मनाजीह़, **6/223**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खेतों वग़ैरा को नज़र लगने से बचाने का नुस्ख़ा

अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی लिखते हैं : इस बात में कोई ह़रज नहीं है कि खेती या ख़रबूज़ और तरबूज़ के खेत में नज़रे बद से बचाव के लिये हड्डियां लटकाई जाएं क्यूंकि

नज़्रे बद माल, आदमी और जानवर सब को लग जाती है और इस का अषर अ़लामात से ज़ाहिर हो जाता है तो देखने वाला जब खेती कि जानिब देखेगा तो उस की निगाह पहले हड्डियों पर पड़ेगी क्यूंकि वोह खेत से बुलन्द होती हैं इस के बा'द खेती पर पड़ेगी तो यूं उस की नज़र का ज़हर वहीं ज़ाएअ़ हो जाएगा और खेत को नुक़्सान नहीं पहुंचेगा, ह़दीषे पाक में है कि एक सहाबिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुईं कि "हम किसान लोग हैं और हमें अपने खेतों पर नज़्रे बद का अन्देशा रहता है।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खेती में हड्डियां रखने का हुक्म इरशाद फ़रमाया।

(رد المحتار،۹/۶۰۱)(سنن الکبری للبیھقی،۶/۲۲۸،حدیث:۱۱۷۵۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नज़्रे बद ऊंट को देग में उतार देती है

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْعَیْنُ تُدْخِلُ الرَّجُلَ الْقَبْرَ وَ تُدْخِلُ الْجَمَلَ الْقِدْرَ बेशक नज़र मर्द को क़ब्र में और ऊंट को देग में दाख़िल कर देती है।

(جمع الجوامع ، ۵/۲۰۴، حدیث:۱۴۵۵۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जल्द नज़र लग जाती है

ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अवलादे जा'फ़र को जल्द नज़र लग जाया करती है, क्या मैं उन्हें झाड़ फूंक कराऊं ? फ़रमाया : हां ! क्यूंकि अगर कोई चीज़ तक़्दीर से सबक़त ले जाने वाली होती तो नज़रे बद सबक़त ले जाती । (ترمذی،کتاب الطب،باب ما جاء فی الرقیۃمن العین،٤/١٣،حدیث:٢٠٦٦)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त वज़ाह़त फ़रमाते हैं : ۞ क्यूंकि येह बच्चे ज़ाहिरी बात़िनी ख़ूबियों वाले हैं इस लिये लोग इन्हें तअ़ज्जुब की नज़र से देखते हैं और येह बच्चे नज़र की वजह से बीमार हो जाते हैं। नज़र का अषर ज़ह़र से ज़ियादा तेज़ और सख़्त होता है इस लिये तुसरिअ़ (या'नी जल्दी) फ़रमाना बिल्कुल दुरुस्त है। ۞ ग़ालिबन इन्हों ने (या'नी ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने) ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ही नज़र का दम सीखा होगा, इस की इजाज़त चाह रही हैं जो अ़त़ा हो गई। ۞ नज़रे बद बड़ी मुअष्षिर होती है अगर किसी चीज़ से तक़्दीर पलट जाती तो नज़र से पलट जाती। ۞ ख़याल रहे कि ग़ुस्से की नज़र मन्ज़ूर में डर पैदा कर देती है मह़ब्बत की नज़र ख़ुशी इसी त़रह़ तअ़ज्जुब की नज़र बीमारी पैदा कर सकती है। ۞ रब तआ़ला जिस चीज़ में चाहे ताषीरे ख़ास पैदा फ़रमा दे वोह क़ादिरे मुत़लक़ है। ۞ फिर जैसे बुरी नज़र बुरा अषर पैदा करती है यूं ही सालिह़ीन मक़्बूलीन की रह़मत की नज़र मन्ज़ूर में इन्क़िलाब (या'नी तब्दीली) पैदा कर

देती है, नज़रे बद बीमारियां पैदा करती है तो नज़रे ख़ूब (नेक नज़र) बीमारियां दूर करती है। शैत़ान ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ किया : اَنْظِرْنِیْ मुझे मोहलत दे, अगर कहता : اُنْظُرْ اِلَیَّ मुझे नज़रे रह़मत से देख ले तो उस का बेड़ा पार हो जाता। (मिरक़ात) ۞ (ह़िकायत :) एक शख़्स ने कहा कि मैं ने बड़े बड़ों को देखा किसी में कुछ नहीं है। दूसरे ने कहा : मगर किसी ने तुझे न देखा, अगर कोई नज़र वाला तुझे देख लेता तो तेरा येह ह़ाल न होता।

अल ग़रज़ नज़र बड़ी चीज़ है, कोई नज़र ख़ाना ख़राब कर देती है कोई नज़र ख़राब को आबाद कर देती है। शे'र

नज़र की जौलानियां न पूछो नज़र ह़क़ीक़त में वोह नज़र है
उठे तो बिजली पनाह मांगे गिरे तो ख़ाना ख़राब कर दे

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/241, बित्तग़य्युर)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मूए मुबारक की बरकत से नज़र वाले को शिफ़ा मिल जाती

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मौहब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि मेरे घर वालों ने मुझे प्याला दे कर उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास भेजा क्यूंकि जब किसी आदमी को नज़र या कोई शै लग जाती तो इन के पास लगन भेजते थे। ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मूए मुबारक चांदी की कुप्पी (डब्बी) में रखा हुवा था। मैं ने कुप्पी में झांका तो चन्द सुर्ख़ बाल देखे। (بخاری،کتاب اللباس، باب ما یذکر فی الشیب، ٤/ ٧٦، حدیث: ٥٨٩٦)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने इस ह़दीषे पाक के तह़त जो वज़ाह़त फ़रमाई है, इस से ह़ासिल होने वाले मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं : ۞ या'नी अहले मदीना को जब कोई बीमारी या नज़रे बद या कोई और तक्लीफ़ होती तो वोह किसी ऐसे बरतन में जिस में कपड़े धोए जाते थे पानी भेज देते ۞ ग़ालिबन आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) वोह बाल शरीफ़ मअ़ उस कुप्पी के पानी में घोल देती थीं, लोग वोह पानी पीते और शिफ़ा पाते। ۞ बाल की येह सुर्ख़ी ख़िज़ाब की न थी बल्कि वोह बाल ख़ुश्बूओं में रखे गए थे येह रंग उसी ख़ुश्बू का था। ۞ इस ह़दीष से चन्द फ़ाइदे ह़ासिल हुवे : **एक :** येह कि ह़ज़राते सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बाल शरीफ़ बरकत के लिये अपने घरों में रखते थे। **दूसरा :** येह कि इस बाल शरीफ़ का बहुत ही अदबो एह़तिराम करते थे कि इस के लिये ख़ास कुप्पी (डब्बी) या पूंगी बनाते और इस में ख़ुश्बू बसाते थे क्यूंकि येह रंगत ख़ुश्बू की थी न कि ख़िज़ाब की। **तीसरे :** येह कि सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बाल शरीफ़ को दाफ़ेए बला, बाइषे शिफ़ा समझते थे कि इन्हें पानी में ग़ुस्ल दे कर शिफ़ा के लिये पीते थे, क्यूं न हो कि जब (ह़ज़रते सय्यिदुना) यूसुफ़ (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की क़मीस दाफ़ेए बला हो सकती है जैसा (कि) क़ुरआने करीम फ़रमा रहा है :

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ الخ[1] तो हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बाल शरीफ़ बदरजए औला दाफ़ेए बला हो सकते हैं। **चौथे :** येह कि सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बाल शरीफ़ की ज़ियारत करने जाते थे जैसा कि रिवायत से मा'लूम हुवा। (मिरआतुल मनाजीह़, **6/247**)

हम सियाह कारों पे या रब तपिशे महशर में
साया अफ़गन हों तेरे प्यारे के प्यारे गैसू

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. **119**)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दूध को भी नज़र लग सकती है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ुमैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه नक़ीअ़ (एक मक़ाम का नाम) से दूध भरा बरतन सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाए। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम ने इसे ढक क्यूं नहीं लिया अगर्चे इस पर लकड़ी खड़ी कर देते।

(بخاری،کتاب الاشربہ،باب شرب اللبن ۳/۵۸۶، حدیث:۵۶۰۵)

مدینہ

1 पारह **13** सूरए यूसुफ़ की आयत **93** में है :

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मेरा येह कुरता ले जाओ इसे मेरे बाप के मुंह पर डालो उन की आंखें खुल जाएंगी।*

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त लिखते हैं : वोह ह़ज़रत खुले बरतन में दूध लाए थे इस पर हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह फ़रमाया या'नी दूध ढक कर लाना चाहिये था, अगर ढंकना न था तो इस के ऊपर लकड़ी ही खड़ी कर लेते। हमारे हां अ़वाम में मश्हूर है कि दूध और दही को नज़रे बद बहुत जल्द लगती है, इस पर लकड़ी खड़ी कर लेनी चाहिये। इस की अस्ल येह ह़दीष हो सकती है। ख़याल रहे दुकानों पर दूध दही खुला रखा रहता है वोह इस हुक्म में दाख़िल नहीं, कहीं ले कर जाओ तो ढक लो। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/88)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िला

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मैं ने ह़ज के मौसिम में तमाम उम्मतों को देखा, पस मैं ने अपनी उम्मत को देखा कि उन्हों ने मैदानों और पहाड़ों को घेर रखा है, मुझे उन की कषरत और अन्दाज़ ने तअ़ज्जुब में डाल दिया, मुझ से पूछा गया : क्या आप इस बात पर राज़ी हैं? मैं ने कहा : मैं राज़ी हूं। कहा गया : इन के साथ मज़ीद 70 हज़ार हैं जो किसी ह़िसाब के बिगैर जन्नत में दाख़िल होंगे, वोह जो

झाड़ फूंक नहीं करवाते[1], दाग़ नहीं लगवाते, बद फ़ाली नहीं लेते और अपने रब عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा करते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़क्काशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हो गए और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ कीजिये कि मुझे भी उन में कर दे। चुनान्चे, नबिय्ये रह़मत, क़ासिमे ने'मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे भी उन लोगों में से कर दे।" दूसरे सह़ाबी ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : मेरे लिये भी दुआ़ कीजिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे भी उन में से कर दे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अ़क्काशा तुम पर सब्क़त ले गए। (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقاء والتمائم،۶۲۸/۷، حدیث:۶۰۵۲)

---

1 : इस ह़दीष में उस दम की नफ़ी (रद्द) है जो लोग ज़मानए जाहिलिय्यत में करवाते थे (जिस में शिर्किय्या अल्फ़ाज़ होते थे) लेकिन जिस दम में किताबुल्लाह के अल्फ़ाज़ हों तो ऐसा दम जाइज़ है क्यूंकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी ऐसा दम किया है और ऐसा दम कराने का हुक्म दिया है और येह दम तवक्कुल के मनाफ़ी (ख़िलाफ़) नहीं है। (عمدۃ القاری،۱۴/۶۹۰) ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नज़रे बद, डंक और फोड़े फुन्सियों की सूरत में दम करवाने की इजाज़त दी। (مُسلِم ص۱۲۰۶، حدیث:۲۱۹۶) मुह़क़्क़िक़े अ़लल इत़लाक़ ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिषे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **अशिअ़तुल्लमआ़त** (फ़ारसी) जिल्द **3** सफ़ह़ा **645** पर इस ह़दीषे पाक के तह़्त लिखते हैं : याद रहे कि तमाम बीमारियों और तक्लीफ़ों में दम करना जाइज़ है, सिर्फ़ इन तीन के साथ मख़्सूस नहीं, ख़ास तौर पर इन के ज़िक्र की वजह येह है कि दूसरी बीमारियों की निस्बत इन तीन में दम ज़ियादा मुनासिब और मुफ़ीद है। (اشعۃ اللمعات،۳/۶۴۵) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा अफ़्रीक़ा सफ़ह़ा **168** पर फ़रमाते हैं : जाइज़ ता'वीज़ कि क़ुरआने करीम या अस्माए इलाहिय्या या दीगर अज़्कार व दा'वात (या'नी दुआ़ओं) से हो उस में अस्लन ह़रज नहीं बल्कि मुस्तह़ब है। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ اَنْ يَّنْفَعَ اَخَاهُ فَلْيَنْفَعْهُ" या'नी तुम में जो शख़्स अपने मुसलमान भाई को नफ़्अ़ पहुंचा सके पहुंचाए।" (مُسلِم ص۱۲۰۸ حدیث:۲۱۹۹)

बद शुगूनी से क्यूं कर बचा जाए ?

बद शुगूनी एक हलाकत ख़ैज़ बातिनी बीमारी है इस लिये इस का इलाज बहुत ज़रूरी है, अगर आप से कभी बद शुगूनी पर अ़मल का गुनाह सरज़द हुवा हो तो सब से पहले इस से तौबा कीजिये, इस के बा'द दर्जे ज़ैल नुस्ख़ों पर अ़मल कीजिये इस बीमारी पर क़ाबू पाना बेहद आसान हो जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

(1) इस्लामी अ़क़ाइद की मा'लूमात हासिल कीजिये

इल्म से वहशत दूर होती है, इस्लामी अ़क़ाइद की ज़रूरी मा'लूमात रखना हर मुसलमान पर लाज़िम है। अगर तक़्दीर पर इन मा'नों पर ईमान रखा जाए कि हर भलाई, बुराई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इल्मे अज़ली के मुवाफ़िक़ मुक़द्दर फ़रमा दी है, जैसा होने वाला था और जो जैसा करने वाला था, अपने इल्म से जाना और वोही लिख लिया[1] (बहारे शरीअ़त, 1/11) तो बद शुगूनी दिल में जगह ही नहीं बना सकेगी क्यूंकि जब भी इन्सान को कोई नुक़्सान पहुंचेगा तो वोह येह ज़ेहन बना लेगा कि येह मेरी तक़्दीर में लिखा था न कि किसी चीज़ की नुहूसत की वजह से ऐसा हुवा है। पारह 27 सूरतुल ह़दीद की आयत 57 में इरशाद होता है :

مدینہ

1 अ़क़ाइद के बारे में मज़ीद तफ़्सीलात के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल (मत़बूआ़ मकतबतुल मदीना) के ह़िस्सए अव्वल का मुत़ालआ़ कीजिये।

مَآ اَصَابَ مِنۡ مُّصِیۡبَةٍ فِی الۡاَرۡضِ وَلَا فِیۡۤ اَنۡفُسِكُمۡ اِلَّا فِیۡ كِتٰبٍ مِّنۡ قَبۡلِ اَنۡ نَّبۡرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ یَسِیۡرٌ ۚ﴿۲۲﴾ (پ۲۷، الحدید:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *नहीं पहुंचती कोई मुसीबत ज़मीन में और न तुम्हारी जानों में मगर वोह एक किताब में है क़ब्ल इस के कि हम इसे पैदा करें, बेशक येह* **अल्लाह** *को आसान है।*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वोही होता है जो मन्ज़ूरे ख़ुदा होता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपना ज़ेहन बना लीजिये कि वोही होता है जो मन्ज़ूरे ख़ुदा होता है, काली बिल्ली के रास्ता काटने या घर की छत पर उल्लू के बोलने से हमें कुछ नुक़्सान नहीं पहुंचेगा, कितने ही लोग ऐसे होते हैं जिन के सामने से काली बिल्ली नहीं गुज़रती फिर भी उन्हें कोई न कोई नुक़्सान उठाना पड़ता है लिहाज़ा काली बिल्ली में कोई नुहूसत नहीं है। सूरए तौबा में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों से इरशाद फ़रमाता है कि यूं कहा करें :

لَنۡ یُّصِیۡبَنَاۤ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوۡلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلۡیَتَوَكَّلِ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۵۱﴾

(پ۱۰، التوبہ:۵۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हमें हरगिज़ न पहुंचेगी मगर वोह बात जो* **अल्लाह** *तआ़ला ने हमारे लिये लिख दी, वोह हमारा मौला है और मुसलमानों को* **अल्लाह** *ही पर भरोसा करना चाहिये।*

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی तफ़्सीरे कबीर में फ़रमाते हैं : इस आयते मुबारका का मा'ना येह है कि हमें कोई ख़ैर व शर, ख़ौफ़ और उम्मीद, शिद्दत व सख़्ती नहीं पहुंचेगी मगर वोही कि जो हमारा मुक़द्दर है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास लौहे महफ़ूज़ पर लिखी हुई है। (तफ़्सीरे कबीर, 6/66)

रिज़्क़ और मुसीबतों को लिख दिया गया है

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर एक जान को पैदा फ़रमाया है और उस की ज़िन्दगी, रिज़्क़ और मुसीबतों को लिख दिया है। (ترمذی،کتاب القدر،باب ماجاء لا عدوی و لا ھامۃ و لا صفر،۴/۵۷،حدیث: ۲۱۵۰ ملتقطاً)

लिहाज़ा एक मुसलमान होने की हैषिय्यत से हमारा इस बात पर यक़ीने कामिल होना चाहिये कि रन्ज हो या ख़ुशी ! आराम हो या तक्लीफ़ ! **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से है और जो मुश्किलात, मुसीबतें, तंगियां और बीमारियां हमारे नसीब में नहीं लिखी गईं वोह हमें नहीं पहुंच सकतीं।

नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से फ़रमाया : यक़ीन रखो कि अगर पूरी उम्मत इस पर मुत्तफ़िक़ हो जाए कि तुम को नफ़्अ़ पहुंचाए तो वोह तुम को कुछ नफ़्अ़ नहीं पहुंचा सकती मगर उस चीज़ का जो **अल्लाह** ने

तुम्हारे लिये लिख दी और अगर इस पर मुत्तफ़िक़ हो जाएं कि तुम्हें कुछ नुक़्सान पहुंचा दें तो हरगिज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते मगर उस चीज़ से जो **अल्लाह** ने लिखी।

(ترمذی ،کتاب صفة القیامة،٤/ ٢٣١،حدیث:٢٥٢٤،ملتقطاً)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने इस ह़दीषे पाक के तह़्त जो वज़ाह़त फ़रमाई है, इस से ह़ासिल होने वाले मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं : ۞ या'नी सारी दुन्या मिल कर तुम को नफ़्अ़ नहीं पहुंचा सकती अगर कुछ पहुंचाएगी तो वोह ही जो तुम्हारे मुक़द्दर में लिखा है। इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला का लिखा हुवा नफ़्अ़ दुन्या पहुंचा सकती है। त़बीब की दवा शिफ़ा दे सकती है, सांप का ज़ह्र जान ले सकता है मगर येह **अल्लाह** तआ़ला का तै़ शुदा उस की त़रफ़ से (है), ह़ज़रते यूसुफ़ (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की क़मीस ने दीदए या'क़ूबी (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की आंखों) को शिफ़ा बख़्शी, ह़ज़रते ईसा (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) मुर्दे ज़िन्दा और बीमार अच्छे करते थे मगर **अल्लाह** के इ़ज़्न (या'नी इजाज़त) से। ۞ लिखने से मुराद लौह़े मह़फ़ूज़ में लिखना है अगर्चे वोह तह़रीर क़लम ने की मगर चूंकि **अल्लाह** के हुक्म से की थी इस लिये कहा गया कि **अल्लाह** ने लिखा। मत़लब ज़ाहिर है कि अगर सारा जहां मिल कर तुम्हें कोई नुक़्सान दे तो वोह भी तै़ शुदा प्रोग्राम के तह़्त होगा कि लौह़े मह़फ़ूज़ में यूं ही लिखा जा चुका था ۞ ख़याल रहे कि तदबीर भी तक़्दीर में आ चुकी है लिहाज़ा तदबीर से ग़ाफ़िल न रहो मगर इस पर ए'तिमाद न करो नज़र **अल्लाह** की कुदरत व रह़मत पर रखो। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/117)

(2) तवक्कुल बेहतरीन इलाज है

अल्लाह तबारक व तआ़ला पर ए'तिमाद करना और कामों को उस के सिपुर्द कर देना तवक्कुल कहलाता है लिहाज़ा जब भी कोई बद शुगूनी दिल में खटके तो रब तआ़ला पर तवक्कुल कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बद शुगूनी का ख़याल दिल से जाता रहेगा। रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बद फ़ाली लेना शिर्क है, बद फ़ाली लेना शिर्क है, येह बात तीन बार इरशाद फ़रमाई (फिर फ़रमाया) और हर शख़्स के दिल में इस का ख़याल भी आता है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तवक्कुल के ज़रीए इसे दूर फ़रमा देता है। (ابو داؤد ،کتاب الطب،باب فی الطیرۃ،٤/٢٣، حدیث:٣٩١٠)

हाफ़िज़ अबुल क़ासिम अस्फ़हानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى इरशाद फ़रमाते हैं : इस ह़दीषे पाक का मत़लब येह है कि मेरी उम्मत के हर शख़्स के दिल में इन में से कुछ न कुछ ख़याल आता है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर उस शख़्स के दिल से येह ख़याल निकाल देता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करता है और इस बदफ़ाली पर क़ाइम नहीं रहता। (الزواجر عن اقتراف الکبائر،باب السفر،١/٣٢٥)

शारेह़े बुख़ारी अ़ल्लामा इस्माईल बिन मुह़म्मद अ़जलूनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى अ़ल्लामा मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى के ह़वाले से लिखते हैं कि जिस का येह यक़ीन होता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़ज़्न के बिग़ैर कोई चीज़ किसी चीज़ में अषर नहीं करती, उस पर किसी बद शुगूनी का कोई अषर नहीं होता। (کشف الخفاء، ١/١١)

(3) काम से न रुकिये

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी उम्मत में **तीन चीज़ें** लाज़िमन रहेंगी : **बद फ़ाली, ह़सद** और **बदगुमानी**। एक सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस शख़्स में येह तीन ख़स्लतें हों वोह इन का किस त़रह़ **तदारुक** करे ? इरशाद फ़रमाया : जब तुम **ह़सद** करो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार करो और जब तुम कोई बद गुमानी करो तो इस पर जमे न रहो और जब तुम **बदफ़ाली** निकालो तो उस काम को कर लो। (المعجم الکبیر،۳/۲۲۸،حدیث: ۳۲۲۷)

बद शुगूनी बात़िनी बीमारी है

अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़ैज़ुल क़दीर में लिखते हैं : इस ह़दीष में इस बात की त़रफ़ इशारा है कि येह तीनों ख़स्लतें **अमराज़े क़ल्ब** में से हैं जिन का इ़लाज ज़रूरी है जो कि ह़दीष में बयान कर दिया गया है। (فیض القدیر،۳/۴۰۱،حدیث: ۳۴۶۵)

बुरा शुगून तुम्हें वापस न करे

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने बद शुगूनी का ज़िक्र हुवा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया फ़ाल अच्छी चीज़ है और बुरा शुगून किसी मुस्लिम को वापस न करे। (ابو داؤد،کتاب الطب،باب فی الطیرۃ،۴/۲۵،حدیث:۳۹۱۹)

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی लिखते हैं : या'नी कहीं जा रहा था और बुरा शुगून हुवा तो वापस न आए, चला जाए। (बहारे शरीअ़त, 3/504)

सफ़र से न रुके

मन्क़ूल है कि अमीरुल मोअमिनीन मौला मुश्किल कुशा हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने जब ख़ारिजियों से जंग के लिये सफ़र का इरादा किया तो एक मुनज्जिम (नुजूमी या'नी सितारों का इल्म रखने वाला एक शख़्स) रुकावट बना और कहने लगा : ऐ अमीरल मोअमिनीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! आप तशरीफ़ न ले जाइये, हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने वजह पूछी तो उस ने कहा : इस वक़्त चांद अ़क़रब (आस्मान के बुर्जों में से एक बुर्ज का नाम) में है अगर आप इस वक़्त तशरीफ़ ले गए तो आप को शिकस्त हो जाएगी। येह सुन कर फ़ातेहे ख़ैबर हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने जवाब दिया : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सिद्दीक़ो उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا नुजूमियों पर ए'तिक़ाद नहीं रखते थे, मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करते हुवे और तुम्हारी बात को झूटा षाबित करने के लिये (अब) ज़रूर सफ़र करूंगा। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस सफ़रे जिहाद पर तशरीफ़ ले गए, अल्लाह तआ़ला ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हयाते ज़ाहिरी के बा'द सब से ज़ियादा बरकत इस सफ़र में अ़ता फ़रमाई ह़त्ता कि तमाम दुश्मन मारे गए और हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़त्ह़ के साथ ख़ुशी ख़ुशी वापस तशरीफ़ लाए। (غذاء الألباب فی شرح منظومة الآداب، ۱/۱۹۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बद शुगूनी पर अ़मल न करो

आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : शरीअ़त में हुक्म है : اِذَا تَطَيَّرْتُمْ فَامْضُوْا या'नी जब कोई शुगूने बद गुमान में आए तो उस पर अ़मल न करो। (فتح الباری،کتاب الطب،باب الطیرۃ،۱۱/۱۸۱)

(फ़तावा रज़विय्या, 29/641 मुलख़्ख़सन)

काम न करने का भी इख़्तियार है

किसी चीज़ का मन्हूस होना मश्हूर हो तो उस काम को न करने का भी इख़्तियार है लेकिन बद शुगूनी पर ए'तिक़ाद हरगिज़ न रखा जाए। आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : जिसे आ़म लोग नहूस (या'नी मन्हूस) समझ रहे हैं उस से बचना मुनासिब है कि अगर ह़स्बे तक़्दीर उसे कोई आफ़त पहुंचे (तो) इन का बातिल अ़क़ीदा और मुस्तह़कम होगा कि देखो येह काम किया था इस का येह नतीजा हुवा और मुमकिन (है) कि शैत़ान उस के दिल में भी वस्वसा डाले। (फ़तावा रज़विय्या, 23/267)

गुनाहों के सबब भी मुसीबत आती है

मुसीबत आने पर दिल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डराने, सब्र पर इस्तिक़ामत पाने और ग़लत़ क़दम उठाने से ख़ुद को

बचाने के लिये तौबा व इस्तिग़फ़ार करते हुवे येह ज़ेहन भी बनाइये कि हम पर जो मुसीबत नाज़िल हुई है उस का सबब हमारे अपने ही करतूत हैं न कि किसी की नुहूसत की वजह से ऐसा हुवा है, पारह **25** सूरतुश्शूरा की **31** वीं आयते करीमा में इरशादे रब्बानी है :

وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِیْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَیْدِیْكُمْ وَیَعْفُوْا عَنْ كَثِیْرٍ ﴿۳۰﴾ط (پ ۲۵، الشوریٰ ۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वोह इस के सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया और बहुत कुछ तो मुआफ़ फ़रमा देता है।*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस आयत के तह़्त लिखते हैं : "येह ख़ित़ाब मोअमिनीन मुकल्लफ़ीन से है जिन से गुनाह सरज़द होते हैं, मुराद येह है कि दुन्या में जो तक्लीफ़ें और मुसीबतें मोअमिनीन को पहुंचती हैं अकषर इन का सबब इन के गुनाह होते हैं। इन तक्लीफ़ों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर देता है और कभी मोमिन की तक्लीफ़ उस के रफ़्ए़ दरजात (या'नी बुलन्दिये दरजात) के लिये होती है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हाथों हाथ सज़ा

कभी ऐसा भी होता है कि हम पर आने वाली मुसीबत हमारे गुनाहों की सज़ा होती है, चुनान्चे, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِذَا اَرَادَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ بِعَبْدٍ خَيْرًا عَجَّلَ لَهٗ عُقُوْبَةَ ذَنْبِهٖ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा करता है तो उस के गुनाह की सज़ा फ़ौरी तौर पर उसे (दुन्या ही में) दे देता है।

(مُسنَد اِمام احمد بن حَنبل، ٥/٦٣٠،حديث: ١٦٨٠٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) मुख़्तलिफ़ वज़ाइफ़ का मा'मूल बना लीजिये

आ'ला हज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : इस क़िस्म (या'नी बद शुगूनी वग़ैरा) के ख़तरे (वस्वसे) जब कभी पैदा हों उन के वासिते क़ुरआने करीम व ह़दीष शरीफ़ से चन्द मुख़्तसर व बेशुमार नाफ़ेअ़ (फ़ाइदा देने वाली) दुआ़एं लिखता हूं इन्हें एक एक बार ख़्वाह ज़ाइद (या'नी एक से ज़ियादा मरतबा) आप और आप के घर में पढ़ लें। अगर दिल पुख़्ता हो जाए और वोह वहम जाता रहे बेहतर वरना जब वोह वस्वसा पैदा हो एक एक दफ़्आ़ पढ़ लीजिये और यक़ीन कीजिये कि अल्लाह व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم) के वा'दे सच्चे हैं और शैत़ान मलऊ़न का डराना झूटा। चन्द बार में بِعَوْنِهٖ تَعَالٰى (या'नी अल्लाह तआ़ला की मदद से) वोह वहम बिल्कुल ज़ाइल (या'नी ख़त्म) हो जाएगा और अस्लन कभी किसी त़रह़ इस से कोई नुक़्सान न पहुंचेगा। वोह दुआ़ए येह हैं :

لَنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۱﴾

(हमें न पहुंचेगी मगर जो हमारे लिये **अल्लाह** ने लिख दी वोह हमारा मौला और **अल्लाह** ही पर भरोसा करना लाज़िम)

(پ۱۰،التوبة:۵۱)

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿۱۷۳﴾ (**अल्लाह** हमें काफ़ी है और क्या अच्छा बनाने वाला) (پ۴،ال عمران:۱۷۳)

اَللّٰهُمَّ لَا يَأْتِيْ بِالْحَسَنَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا يَذْهَبُ بِالسَّيِّئَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ

(इलाही ! अच्छी बातें कोई नहीं लाता तेरे सिवा और बुरी बातें कोई दूर नहीं करता तेरे सिवा और कोई ज़ोर (ताक़त) नहीं मगर तेरी तरफ़ से)

(مصنف ابن ابی شیبه ،کتاب الدعاء،باب مایقول الرجل اذا تطیره،۷/۸۷،حدیث:۲۰۱)

اَللّٰهُمَّ لَا طَيْرَ اِلَّا طَيْرُكَ، وَلَا خَيْرَ اِلَّا خَيْرُكَ، وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ (इलाही ! तेरी फ़ाल फ़ाल है और तेरी ही ख़ैर ख़ैर और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।)

(फ़तावा रज़विय्या, **29/645**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **नेकी की दा'वत** का मदनी काम जारी रखने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी

तह़रीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त, मदनी क़ाफ़िलों, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत, मदनी तर्बिय्यती कोर्स, फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स, मदनी चैनल और दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत वग़ैरा के ज़रीए ख़ूब सर गर्मे अ़मल है, आप भी दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, इस की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आ'ला अख़्लाक़ी अवसाफ़ ग़ैर महसूस त़ौर पर आप के किरदार का हिस्सा बनते चले जाएंगे। हर इस्लामी भाई को चाहिये कि वोह अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करे और सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र करे। इन मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपने साबिक़ा तर्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल आ़क़िबत की बेहतरी के लिये बेचैन हो जाएगा, जिस के नतीजे में गुनाहों की कषरत पर नदामत होगी और तौबा की सआ़दत मिलेगी। आ़शिक़ाने रसूल के हमराह मदनी क़ाफ़िलों में मुसलसल सफ़र करने के नतीजे में फ़ोह़्श कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह लब पर दुरूदे पाक का विर्द होगा और ज़बान तिलावते कुरआन और ज़िक्रो ना'त की आ़दी बन जाएगी, ग़ुस्से की जगह नर्मी, बे सब्री की जगह सब्रो तह़म्मुल, तकब्बुर की जगह आ़जिज़ी और एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा मिलेगा। दुन्यावी मालो दौलत के लालच से पीछा छुटेगा और नेकियों की हिर्स मिलेगी। अल ग़रज़ बार बार राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से ममलू (या'नी भरी हुई) एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं, चुनान्चे,

नशे की आ़दते बद छूट गई

अ़त्ताराबाद (जेकोबाबाद, बाबुल इस्लाम सिन्ध) के अ़लाक़े ठुल से तअ़ल्लुक़ रखने वाले इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है : पहले मैं ग़लत़ अ़क़ाइद का ह़ामिल और अख़्लाक़ी बुराइयों की दलदल में धंसा हुवा था, रोज़ाना रात को 8 से 12 बजे तक भंग, चरस और शराब वग़ैरा का नशा किया करता फिर बदमस्त हो कर घर पहुंचता और बिस्तर पर बे सुध हो कर सो रहता। मेरी मां मेरी ह़ालत देख कर रोती रहती और मुझे समझाती लेकिन मुझ पर ज़रा भी अषर न होता। फिर ग़ालिबन सि. 2010 ई. में हमारे अ़लाक़े में सैलाब आया तो हम ने एक मह़फ़ूज़ मक़ाम पर पनाह ली। वहां मैं शदीद बीमार हो गया ह़त्ता कि मुझे ख़ून की उलटियां आने लगीं। मेरी ख़ुश नसीबी कि इसी दौरान मेरी मुलाक़ात एक दा'वते इस्लामी वाले से हो गई जिस ने मुझ पर इनफ़िरादी कोशिश की और मैं ने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार मदनी क़ाफ़िले में सख्खर की त़रफ़ सफ़र किया। मुझे बद अ़क़ीदगी और नशे की आ़दते बद से तौबा की तौफ़ीक़ मिली, फिर राहें खुलती चली गईं। मदनी काम करते करते मुझे ह़ुसूले इ़ल्मे दीन का ऐसा शौक़ हुवा कि मैं ने लाड़काना फ़ारूक़ नगर में जामिअ़तुल मदीना में दाख़िला ले लिया, कुछ अ़र्से बा'द बाबुल मदीना कराची मुन्तक़िल हो गया। ता दमे बयान जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मुश्ताक़ बाबुल मदीना (कराची) में दरजए षानिय्या का त़ालिबे इ़ल्म हूं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नेक फ़ाल या अच्छा शुगून लेना

नेक फ़ाल या अच्छा शुगून लेना बद शुगूनी की ज़िद है या'नी किसी चीज़ को अपने लिये बाइषे ख़ैरो बरकत समझना और येह मुस्तहब है, मषलन बुज़ुर्गाने दीन की ज़ियारत होना, बुध के दिन नया सबक़ शुरूअ़ करना, पीर और जुमा'रात को सफ़र शुरूअ़ करना। हमारे मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नेक फ़ाल लेना पसन्द था चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया : बद फ़ाली कोई चीज़ नहीं और फ़ाल अच्छी चीज़ है। लोगों ने अ़र्ज़ की : फ़ाल क्या चीज़ है ? फ़रमाया : "अच्छा कलिमा जो किसी से सुने।" (بخاری،کتاب الطب، باب الطیرة،٤/٣٦، حدیث:٥٧٥٤)

मिरआतुल मनाजीह़ में इस ह़दीष के तह़्त है : ग़ालिबन यहां "त़ीरह" से मुराद बदफ़ाली लेना है ख़्वाह परन्दे से हो या चरिन्दे जानवर से या किसी और चीज़ से क्यूंकि **बद फ़ाली मुत़लक़न ममनूअ़ है**। कुरआने मजीद में तत़य्युर और त़ाइर ब मा'ना बद फ़ाली आया है, रब फ़रमाता है : قَالُوْۤا اِنَّا تَطَیَّرْنَا بِكُمْ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : बोले हम तुम्हें मन्हूस समझते हैं। (پ۲۲،یٰسٓ:۱۸)) और फ़रमाता है : قَالُوْا طَآىٕرُكُمْ مَّعَكُمْ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : उन्हों ने फ़रमाया तुम्हारी नुहूसत तो तुम्हारे साथ है (پ۲۲،یٰسٓ:۱۹)) ।

मक़्सद येह है कि इस्लाम में बदफ़ाली कोई शै नहीं किसी चीज़ से बद फ़ाली न लो। ("अच्छा कलिमा जो किसी से सुने" के तह़्त मुफ़्ती साह़िब लिखते हैं :) जैसे कोई शख़्स किसी काम को जा रहा है किसी से आवाज़ आई "ऐ नजीह़ (या'नी ऐ कामयाब होने वाले)" या "ऐ बरकत" या "ऐ रशीद (या'नी ऐ हिदायत याफ़्ता)" येह जाने वाला येह अल्फ़ाज़ सुन कर कामयाबी का उम्मीद वार हो गया येह बिल्कुल जाइज़ है। बा'ज़ दुकानदार

सुब्ह् को "या रज्ज़ाक़, "गुमशुदा के मुतलाशी या वाजिद (या'नी ऐ पाने वाले)", मुसाफ़िर लोग "या सालिम (या'नी ऐ सलामती वाले)", ह़ाजी व ग़ाज़ी लोग "या मनसूर (या'नी ऐ मदद याफ़्ता)" या "ए मबरूर" और ज़ाइर लोग "या मक़्बूल (या'नी ऐ क़बूल होने वाले)" सुन कर ख़ुश हो जाते हैं, येह सब इसी ह़दीष से माख़ूज़ है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/255)

अच्छा मा'लूम होता

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब किसी काम के लिये निकलते तो येह बात हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को पसन्द थी कि "या रशीद (ऐ हिदायत याफ़्ता)", "या नजीह़ (ऐ कामयाब)" सुनें।

(ترمذی،کتاب السیر، باب ماجاء فی الطیرۃ،۳/۲۲۸،حدیث:۱۶۲۲)

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीष के तह़्त लिखते हैं : या'नी उस वक़्त अगर कोई शख़्स इन नामों के साथ किसी को पुकारता येह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अच्छा मा'लूम होता कि येह कामयाबी और फ़लाह़ की फ़ाले नेक है। (बहारे शरीअ़त, 3/503)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अब तुम्हारा काम आसान हो गया है

सुल्ह़े हुदैबिय्या[1] के मौक़अ़ पर जब मुशरिकीन ने मुसलमानों से सुल्ह़ करने के लिये सुहैल बिन अ़म्र (जो उस वक़्त तक ईमान नहीं लाए थे) को भेजा, उन को देख कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

1 सुल्ह़े हुदैबिय्या का तफ़्सीली अह़वाल पढ़ने के लिये सीरते मुस्त़फ़ा (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) सफ़ह़ा 346 ता 364 का मुत़ालआ़ कीजिये।

(नेक फ़ाल लेते हुवे) सह़ाबा से फ़रमाया : قَدْ سَهُلَ لَكُمْ مِنْ اَمْرِكُمْ अब तुम्हारा काम आसान हो गया।

(بخاری،کتاب الشروط،باب الشروط فی الجهاد،۲/۲۲۶،حدیث:۲۷۳۱،۲۷۳۲ملخصاً)

शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा शहाबुद्दीन अह़मद बिन मुह़म्मद क़स्त़लानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى अपनी किताब इरशादुस्सारी में लिखते हैं : या'नी येह नेक फ़ाल थी और नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नेक फ़ाल को पसन्द करते थे। (ارشادالساری،کتاب الشروط،باب الشروط فی الجهاد، ۶/۲۲۹)

अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस फ़रमाने रसूल के तह़्त लिखते हैं : येह फ़रमाने आ़लीशान अच्छे नाम से अच्छा शुगून लेने के मुस्तह़ब होने पर दलील है। (کشف المشکل عن حدیث الصحیحین، ۱/۱۰۷۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अच्छा शुगून लेना

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बद शुगूनी नहीं लेते थे लेकिन आप (नेक) फ़ाल लेते, ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه क़बीलए बनू सहम के **70** सुवारों के साथ ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे थे तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम कौन हो ? उन्हों ने कहा : बुरैदा, तब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की त़रफ़ मुड़ कर फ़रमाया : بَرَدَ اَمْرُنَا وَصَلَح हमारा मुआ़मला ठन्डा और अच्छा हो गया, फिर फ़रमाया : तुम किन लोगों से हो ? उन्हों ने कहा : अस्लम से, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया : سَلِمْنَا हम सलामती से रहेंगे, फिर फ़रमाया तुम किस क़बीले से हो ? उन्हों ने कहा : बनू सहम से, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : خَرَجَ سَهْمُنَا हमारा ह़िस्सा निकल आया। (الاستیعاب فی معرفة الاصحاب،۱/۲۶۳)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अच्छे नाम वाले से काम लिया

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक दिन एक ऊंटनी मंगवाई और फ़रमाया : इसे कौन दोहेगा (या'नी दूध निकालेगा ?) एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : मैं। दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम्हारा नाम क्या है ? उस ने कहा : मुर्रतुन (या'नी कड़वा)। फ़रमाया : तुम बैठ जाओ। एक और शख़्स खड़ा हुवा। नाम पूछा तो उस ने अपना नाम जमरतुन (या'नी अंगारा) बताया। उसे भी बैठने का इरशाद फ़रमाया। अब ह़ज़रते सय्यिदुना यईश ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه खड़े हुवे और दरयाफ़्त करने पर अपना नाम यईश (या'नी ज़िन्दगी गुज़ारने वाला) बताया तो इरशाद हुवा : तुम ऊंटनी को दोहो (या'नी इस का दूध निकालो)।

(المعجم الکبیر، ۲۲/ ۲۷۷، حدیث : ۷۱۰)

परन्दों और जानवरों से नेक फ़ाल नहीं ले सकते

नेक फ़ाल सिर्फ़ किसी अच्छी बात, नेक शख़्स की ज़ियारत या बा बरकत अय्याम मषलन अय्यामे ईद, पीर शरीफ़ वग़ैरा से ले सकते हैं परन्दे और जानवरों से जिस त़रह़ बुरा शुगून लेना मन्अ़ है इसी त़रह़ नेक फ़ाल लेने की भी इजाज़त नहीं है। तफ़्सीरे कबीर में है : अहले अ़रब के नज़दीक फ़ाल और बद शुगूनी का मुआ़मला एक था, सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़ाल को बुरा क़रार रखा और बद शुगूनी को बातिल क़रार दिया। इमाम मुह़म्मद राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : फ़ाल और बद शुगूनी में फ़र्क़ का बयान ज़रूरी है, इस सिलसिले में बेहतर बात येह है कि इन्सानी रूह़ दरिन्दों और परन्दों की रूहों से

ज़ियादा क़वी और साफ़ होती है लिहाज़ा इन्सान की ज़बान पर जारी होने वाले कलिमे से इस्तिद्लाल करना (फ़ाल लेना) मुमकिन है लेकिन परन्दों के उड़ने या दरिन्दों की किसी ह़रकत से किसी बात पर इस्तिद्लाल करना (या'नी अच्छा या बुरा शुगून लेना) मुमकिन नहीं क्यूंकि इन की रूहें कमज़ोर होती हैं। (तफ़्सीरे कबीर, 5/344)

इस में ख़ैर और शर की क्या बात है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इकरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं : एक दिन हम लोग ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के पास बैठे थे। हमारे पास से एक परन्दा चहचहाता हुवा गुज़रा। मजलिस के हाज़िरीन में से किसी ने कहा : ख़ैर ही होगी। आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने फ़ौरन उस की इस्लाह़ फ़रमाई और कहा : न ख़ैर होगी न शर होगा। (या'नी एक परन्दा चेहचहाते हुवे उड़ रहा है तो इस में ख़ैर और शर की क्या बात है ?) (فیض القدیر، ٥/٢٩٤، تحت الحدیث: ٧١٠١)

ना गवारी का इज़हार किया

इमाम ताऊस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक शख़्स के हमराह सफ़र में थे, उस ने कव्वे की आवाज़ सुनी तो कहा : ख़ैर होगी। येह सुनते ही आप ने ना गवारी से फ़रमाया : اَیُّ خَیرٍ عِندَ ھٰذَا اَوْ شَرٍّ، لَاتَصحَبنِی इस में ख़ैर या शर की कौन सी बात है ! मेरे साथ मत आओ।

(مصنف عبدالرزاق، کتاب الجامع، باب الطیرۃ ایضاً، ١٠/٢٤، رقم: ١٩٦٨٢)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इन का आना फ़ाले ह़सन था

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن अपने दूसरे सफ़रे मदीना के अह़वाल बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : अब यहां कामरान (एक जगह का नाम) में नव दिन हो चुके। कल जहाज़ पर जाना है। दफ़्अ़तन (या'नी अचानक) रात को मेरे सब साथियों को दर्दे शिकम (या'नी पेट का दर्द) व इस्हाल (اِس۔ہال या'नी पेचिश) आ़रिज़ (या'नी लाह़िक़) हुवा, मेरे दर्द तो न था मगर पांच बार इजाबत (या'नी रफ़्ए़ ह़ाजत) को मुझे जाना हुवा, दिन चढ़ गया और डॉक्टर के आने का वक़्त हुवा, बाहर तुर्की मर्द और अन्दर औ़रतों को तुर्किया औ़रत रोज़ाना आ कर देखा करते। मेरे भाई नन्हे मियां سَلَّمَهُ (या'नी अ़ल्लामा मुह़म्मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان) को अन्देशा हुवा और अ़ज़्म कर लिया कि अपनी ह़ालतों को डॉक्टर से कह दो। मुझ से दरयाफ़्त किया। मैं ने कहा : अगर बीमार समझ कर रोक लिये गए और ह़ज का वक़्त क़रीब है مَعَاذَاللّٰه वक़्त पर न पहुंच सके तो कैसा ख़सारा (या'नी नुक़्सान) होगा ! कहा : "अब डॉक्टर और डॉक्टरनी आते होंगे अगर इन्हें इत्तिलाअ़ हुई तो हमारा न कहना इख़्फ़ा (या'नी पोशीदगी) में न ठहरेगा ?" मैं ने कहा : ज़रा ठहरो ! मैं अपने ह़क़ीम से कह लूं। मकान से बाहर जंगल में आया और ह़दीष की दुआ़एं पढ़ीं और सय्यिदुना ग़ौषे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस्तिमदाद (या'नी मदद त़लब) की, कि दफ़्अ़तन सामने से ह़ज़रते सय्यिद शाह ग़ुलाम जीलानी साह़िब सज्जादा नशीन सरकारे बांसा शरीफ़ कि अवलादे अमजाद हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौषे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से थे और

बम्बई से हमारा इन का साथ हो गया था, सामने से तशरीफ़ लाए। **इन की तशरीफ़ आवरी फ़ाले ह़सन (या'नी नेक शुगूनी) थी।** मैं ने इन से भी दुआ़ को कहा, इन्हों ने भी दुआ़ फ़रमाई। मुझे मकान से बाहर आए शायद दस मिनट हुवे होंगे, अब जो मकान में जा कर देखा بِحَمْدِاللّٰہِ सब को ऐसा तन्दुरुस्त पाया कि गोया मरज़ ही न था, दर्द वग़ैरा कैसा ! इस का ज़ो'फ़ भी न रहा। सब ढाई तीन मील पियादा (या'नी पैदल) चल कर समन्दर के किनारे पहुंचे। (मलफ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स.**186**)

बद शुगूनी और अच्छे शुगून में फ़र्क़

इन दोनों में बुन्यादी फ़र्क़ येह है कि बद शुगूनी लेना शरअ़न ममनूअ़ और अच्छा शुगून लेना मुस्तह़ब है, इस के इ़लावा ۞ अच्छा शुगून लेना हमारे मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का त़रीक़ा है जब कि बद शुगूनी कुफ़्फ़ारे ना हन्जार का शेवा है ۞ अच्छा शुगून लेने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रह़्मो करम से अच्छाई और भलाई की उम्मीद होती है जब कि बद शुगूनी से ना उम्मीदी पैदा होती है ۞ नेक फ़ाल से दिल को इत़मीनान और ख़ुशी ह़ासिल होती है जो हर काम की जिद्दो जहद और तक्मील के लिये ज़रूरी है जब कि बद शुगूनी से बिला वजह रन्ज व तरद्दुद पैदा होता है ۞ नेक फ़ाली इन्सान को कामयाबी, ह़रकत और तरक़्क़ी की त़रफ़ ले जाती है जब कि बद शुगूनी से मायूसी, सुस्ती और काहिली पैदा होती है जो तनज़्ज़ुली की त़रफ़ ले जाती है।

मिरआतुल मनाजीह़ में है : **नेक फ़ाल लेना सुन्नत है इस में अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है और बद फ़ाली लेना ममनूअ़ कि इस में रब عَزَّوَجَلَّ से ना उम्मीदी है। उम्मीद अच्छी है ना उम्मीदी बुरी, हमेशा रब से उम्मीद रखो।**

(मिरआतुल मनाजीह़, **6/255**)

ख़ुलासए किताब

❁ किसी शख़्स, जगह, चीज़ या वक़्त को मन्हूस जानने का इस्लाम में कोई तसव्वुर नहीं येह महज़ वहमी ख़यालात होते हैं।

❁ शुगून का मा'ना है फ़ाल लेना या'नी किसी चीज़, शख़्स, अ़मल, आवाज़ या वक़्त को अपने हक़ में अच्छा या बुरा समझना। अगर अच्छा समझा तो अच्छा शुगून या नेक फ़ाल है और अगर बुरा समझा तो बद शुगूनी है।

❁ नेक फ़ाल लेना मुस्तहब है, बद फ़ाली (या) बद शुगूनी लेना शैतानी काम है।

❁ बद शुगूनी पर गुनाह उस वक़्त होगा जब उस के तक़ाज़े पर अ़मल कर लिया और अगर इस ख़याल को कोई अहमिय्यत न दी तो कोई इलज़ाम नहीं।

❁ बद शुगूनी लेना आ़लमी बीमारी है, मुख़्तलिफ़ मुमालिक में रहने वाले मुख़्तलिफ़ लोग मुख़्तलिफ़ चीज़ों से बद शुगूनियां लेते हैं।

❁ बद शुगूनी इन्सान के लिये दीनी व दुन्यवी दोनों ए'तिबार से बेहद ख़तरनाक है।

❁ बद शुगूनी से ईमान भी ज़ाएअ़ हो सकता है।

❁ बद शुगूनी लेना मुसलमान को ज़ैब नहीं देता बल्कि येह ग़ैर मुस्लिमों का पुराना त़रीक़ा है।

❁ दौरे हाज़िर में भी बहुत से ग़लत़ सलत़ ए'तिक़ादात, तवह्हुमात और नाजाइज़ रुसूमात ज़ोर पकड़ती जा रही हैं जिन का तअ़ल्लुक़ बद शुगूनी से भी होता है मषलन माहे सफ़र को मन्हूस

जानना, छींक को मन्हूस जानना, सितारों के अषरात पर यक़ीन रखना, मुसलसल बेटियों की पैदाइश को मन्हूस समझना, घर में पपीता का दरख़्त लगाने को मन्हूस समझना, शव्वाल या मख़्सूस तारीखों में शादी को मन्हूस जानना, औ़रत, घर और घोड़े को मन्हूस समझना वग़ैरा।

❁ इस्तिख़ारा करना जाइज़ व मुस्तह़सन है।

❁ नज़र लगना एक ह़क़ीक़त है इस से इन्कार नहीं किया जा सकता।

❁ इस्लामी अ़क़ाइद की मा'लूमात ह़ासिल कर के, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर सच्चा तवक्कुल कर के, बद शुगूनी के तक़ाज़े पर अ़मल न कर के और मुख़्तलिफ़ वज़ाइफ़ के ज़रीए **बद शुगूनी का इलाज** किया जा सकता है।

तफ़्सीलात के लिये किताब का मुकम्मल मुत़ालआ़ कीजिये

ज़ाहिद कौन ?

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "अगर कोई शख़्स तमाम रूए ज़मीन का माल ह़ासिल करे और उस का इरादा रिज़ाए ख़ुदावन्दी का ह़ुसूल हो तो वोह ज़ाहिद है और अगर सारा माल छोड़ दे लेकिन रिज़ाए ख़ुदावन्दी मक़्सूद न हो तो वोह ज़ाहिद नहीं है।"

(احیاء علوم الدین،کتاب ذم البخل وذم حب المال،ج۳،ص۳۲٤تا۳۲۵ملخصًا)

फ़ेहरिस

उ़नवान	सफ़हा	उ़नवान	सफ़हा
क़ियामत का नूर	6	येह तुम्हारे जे़हन का वहम है	33
मन्हूस कौन ?	6	परन्दे भी तक़दीर के मुताबिक़ ही उड़ते हैं	34
क्या कोई शख़्स मन्हूस हो सकता है ?	8	बद फ़ाली की कुछ हक़ीक़त नहीं है	34
गुनाहों का मजमूआ़	9	क्या घर बदलने से बरकत ख़त्म हो जाती है ?	36
(शुगून की क़िस्में)	10	बद शुगूनी लेना मेरा वहम था	36
अच्छे बुरे शुगून की मिषालें	11	तीरों से फ़ाल न निकालो	38
शैतानी काम	12	पांसे डालना गुनाह का काम है	38
बद शुगूनी हराम और नेक फ़ाल लेना मुस्तहब है	12	कुरआनी फ़ाल निकालना नाजाइज़ है	39
अहम तरीन वज़ाहत	13	एक इब्रत अंगेज़ हिकायत	40
नाजुक तरीन मुआ़मला	14	इन्हों ने कभी फ़ाल का तीर नहीं फेंका	41
शिर्क में आलूदा हो गया	15	फ़ाल के तीर किस त़रह़ के थे ?	41
बद शुगूनी की मुख़्तलिफ़ शकलें	15	फ़ाल खोलने और इस पर उजरत लेने का हुक्म	43
बद शुगूनी के नुक़्सानात	18	इस्तिख़ारा सिखाते थे	44
वोह हम में से नहीं	19	इस्तिख़ारा करने वाला नुक़्सान में नहीं रहेगा	44
बुलन्द दरजों तक नहीं पहुंच सकता	19	इस्तिख़ारा छोड़ने का नुक़्सान	45
बद शुगूनी के भयानक नताइज	20	इस्तिख़ारा किन कामों के बारे में होगा ?	45
आस्मान पर से कागज़ का पुर्ज़ा गिरा	22	इस काम का मुकम्मल इरादा न किया हो	46
बद शुगूनी लेना ग़ैर मुस्लिमों का त़रीक़ा है	24	इस्तिख़ारे के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े	47
फ़िरऔनियों का ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को		नमाज़े इस्तिख़ारा का त़रीक़ा	47
मन्हूस जानना	24	नमाज़े इस्तिख़ारा में कौन सी सूरतें पढ़ें ?	49
क़ौमे षमूद ने ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام को		इशारा कैसे मिलेगा ?	49
मन्हूस कहा	25	सात मरतबा इस्तिख़ारा करना बेहतर है	50
मुबल्लिग़ीन को मन्हूस कहने वाले बद बख़्त लोग	26	अगर इशारा न हो तो ?	50
यहूदो मुनाफ़िक़ीन ने आमदे मुस्त़फ़ा से		सिर्फ़ दुआ़ के ज़रीए इस्तिख़ारा	51
बद शुगूनी ली	29	इस्तिख़ारे की मुख़्तसर दुआएं	51
यषरब मदीना बना	30	अगर इस्तिख़ारे के बा'द भी नुक़्सान	
बुराई की निस्बत अपनी त़रफ़ करनी चाहिये	32	उठाना पड़े तो ?	52
मुशरिकीन बद शुगूनी लिया करते थे	32	दरयाए नील के नाम ख़त़	53

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
अफ़्सोस नाक सूरते ह़ाल	55	बेटियों की परवरिश के फ़ज़ाइल	73
माहे सफ़र को मन्हूस जानना	55	मदनी आक़ा ﷺ की बेटियों पर शफ़्क़त	75
अ़रबों में माहे सफ़र को मन्हूस समझा जाता था	56	मकान में नए बच्चे की विलादत को मन्हूस जानना	77
सफ़र कुछ नहीं	57	ग्रहन से जुड़े हुवे तवहहुमात	78
कोई दिन मन्हूस नहीं होता	58	ग्रहन किसी की मौत और ज़िन्दगी की	
सफ़रुल मुज़फ़्फ़र का आख़िरी बुध मनाना	59	वजह से नहीं लगता	80
सफ़र के महीने में पेश आने वाले चन्द		हमें क्या करना चाहिये ?	81
तारीख़ी वाक़िआ़त	60	औ़रत, घर और घोड़े को मन्हूस जानना	82
छींक से बद शुगूनी लेना	60	ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा का मोक़िफ़	83
शव्वाल में शादी न करना	61	फ़तावा रज़विय्या का एक सुवाल जवाब	84
मख़्सूस तारीख़ों में शादी न करने के		मय्यित को गुस्ल देने के बा'द घड़ा तोड़ देना	84
बारे में सुवाल जवाब	62	न जाने किस मन्हूस की शक्ल देखी थी ?	85
सितारों के अच्छे बुरे अषरात पर		क्या किसी को नज़र लग सकती है ?	87
यक़ीन रखना कैसा ?	63	रह़मते आ़लम को नज़र लगाने की कोशिश नाकाम रही	89
कुछ मोमिन रहे कुछ काफ़िर हो गए	64	नज़र ह़क़ है	91
जिस सितारे को जहां चाहे पहुंचा दे	65	खेतों वग़ैरा को नज़र लगने से बचाने का नुस्ख़ा	92
नुजूमियों के ढकोसले	67	नज़रे बद ऊंट को देग में उतार देती है	93
बद शुगूनी की तरदीद	68	जल्द नज़र लग जाती है	94
नुजूमी को हाथ दिखाना	68	मूए मुबारक की बरकत	95
काहिनों की बा'ज़ बातें दुरुस्त होने की वजह	69	दूध को भी नज़र लग सकती है	97
नुजूमी के पास जाने वालों के लिये सबक़		बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िला	98
आमोज़ ह़िकायत	70	बद शुगूनी से क्यूं कर बचा जाए ?	100
सर्जरी के ज़रीए हाथों की लकीरें		इस्लामी अ़क़ाइद की मा'लूमात ह़ासिल कीजिये	100
बदलने वाले नादान	70	वोही होता है जो मन्ज़ूरे ख़ुदा होता है	101
घर में पपीते का दरख़्त लगाने को मन्हूस समझना	71	रिज़्क़ और मुसीबतों को लिख दिया गया है	102
मुसलसल लड़कियों की पैदाइश को मन्हूस समझना	72	नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते	102

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
तवक्कुल बेहतरीन इलाज है	104	नेक फ़ाल या अच्छा शुगून लेना	113
काम से न रुकिये	105	अच्छा मा'लूम होता	113
बद शुगूनी बातिनी बीमारी है	105	अब तुम्हारा काम आसान हो गया है	114
बुरा शुगून तुम्हें वापस न करे	105	अच्छा शुगून लिया	115
सफ़र से न रुके	106	अच्छे नाम वाले से काम लिया	116
बद शुगूनी पर अ़मल न करो	107	नेक फ़ाल किस से ली जाए ?	116
काम न करने का भी इख़्तियार है	107	इस में ख़ैर और शर की क्या बात है ?	117
गुनाहों के सबब भी मुसीबत आती है	108	ना गवारी का इज़्हार किया	117
हाथों हाथ सज़ा	109	इन का आना फ़ाले ह़सन था	118
मुख़्तलिफ़ वज़ाइफ़ का मा'मूल बना लीजिये	109	बद शुगूनी और अच्छे शुगून में फ़र्क़	119
नशे की आदते बद छुट गई	112	ख़ुलासए किताब	120

ماٰخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
قرآن مجید	کلامِ الٰہی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
نورالعرفان	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	پیر بھائی کمپنی، لاہور
تفسیرخزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز، لاہور
تفسیر کبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ۶۰۶ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
روح المعانی	ابوالفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
التفسیرات الاحمدیہ	شیخ احمد بن ابی سعید ملّا جیون جونپوری، متوفی ۱۱۳۰ھ	پشاور
الجامع لاحکام القرآن للقرطبی	ابوعبداللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی، متوفی ۶۷۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ ۱۴۱۹ھ
صحیح البخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام ابوالحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دارابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ

سنن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن ابی داؤد	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاءالتراث بیروت ۱۴۲۱ھ
المسند	امام احمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
المستدرک	امام ابوعبداللہ محمد حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
المعجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	داراحیاءالتراث ۱۴۲۲ھ
المعجم الاوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
جمع الجوامع	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
التیسیر بشرح الجامع الصغیر	علامہ محمد عبدالرءُوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	مکتبۃ الامام الشافعی، ریاض ۱۴۰۸ھ
السنن الکبریٰ	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۴ھ
مصنف ابن ابی شیبہ	حافظ عبداللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی عبسی، متوفی ۲۳۵ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
مصنف عبدالرزاق	امام ابوبکر عبدالرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی متوفی ۲۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
الزھد	امام عبداللہ بن مبارک مروزی متوفّٰی ۱۸۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	علامہ امیر علاءالدین علی بن بلبان متوفی ۷۳۹ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ
کنز العمال	امام علی متقی بن حسام الدین ہندی، متوفی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
فتح الباری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرءُوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ
مراٰۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز لاہور
نزھۃ القاری	علامہ مفتی محمد شریف الحق امجدی، متوفی ۱۴۲۰ھ	فرید بک اسٹال لاہور ۱۴۲۱ھ
ارشاد الساری	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۲۱ھ
اشعۃ اللمعات	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	کوئٹہ ۱۳۳۲ھ
عمدۃ القاری	امام بدرالدین ابومحمد محمود بن عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
الطریقۃ المحمدیۃ	امام محمد آفندی رُومی برکلی متوفی ۹۸۱ھ	نوریہ رضویہ سرداراباد فیصل آباد ۱۹۷۷ء
مسند الفردوس	الحافظ شیرویہ بن شھردار بن شیرویہ الدیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
بریقہ محمودیہ شرح طریقہ محمدیہ	ابوسعید محمد بن مصطفیٰ نقشبندی حنفی، متوفی ۱۱۷۶ھ	شرکت صحافیہ عثمانیہ ۱۳۱۸ھ
حدیقہ ندیہ شرح طریقہ محمدیہ	سیدی عبدالغنی نابلسی حنفی، متوفی ۱۱۴۱ھ	پشاور

العظمۃ	ابومحمد عبداللہ بن محمد بن جعفر بن حیان، متوفّٰی ۳۶۹ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۴ھ
شرح العلامۃ الزرقانی	محمد بن عبدالباقی بن یوسف زرقانی، متوفی ۱۱۲۲ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ
شرح معانی الآثار	امام ابوجعفر احمد بن محمد طحاوی، متوفی ۳۲۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
کشف الخفاء	شیخ محمد بن علی العجلونی ۱۱۶۲ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
کشف المشکل عن حدیث الصحیحین	ابوالفرج عبدالرحمٰن ابن الجوزی، المتوفی ۵۹۷ھ	دارالنشر، ۱۴۱۸ھ
الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	ابوعمر یوسف عبداللہ بن محمد بن عبدالبر قرطبی، متوفّٰی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
مجمع الزوائد	حافظ نورالدین علی بن ابوبکر ہیثمی، متوفی ۸۰۷ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
رَدُّ المُحتار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
تنقیح الفتاوی الحامدیہ	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	مکتبہ حقانیہ پشاور
فتاویٰ رضویہ (مخرجہ)	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور ۱۴۱۸ھ
بہارِ شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
الزواجر عن اقتراف الکبار	احمد بن محمد بن علی بن حجر مکی ہیتمی، متوفی ۹۷۴ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
ادب الدنیا والدین	لابی الحسن علی بن محمد بن حبیب البصری الماوردی، المتوفی ۴۵۰ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۰۸ھ
تاریخ دمشق	ابن عساکر، المتوفی ۵۷۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۷ھ
البدایۃ والنہایۃ	عمادالدین اسماعیل بن عمر ابن کثیر دمشقی، متوفی ۷۷۴ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
الکامل فی التاریخ	ابن الأثیر الجزری، المتوفی ۶۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھ
سیرت ابن عبدالحکم	ابومحمد عبداللہ بن عبدالحکم، المتوفی ۲۱۴ھ	مکتبۃ وھبۃ
عمل الیوم واللیل	احمد بن محمد المعروف بابن السُّنّی، المتوفی ۳۶۴ھ	دارالقبلۃ للثقافۃ الاسلامیۃ بیروت
حیاۃ الحیوان الکبریٰ	کمال الدین محمد بن موسیٰ دمیری، متوفی ۸۰۸ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۵ھ
غذاء الألباب شرح منظومۃ الآداب	محمد بن احمد بن سالم السفارینی الحنبلی	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۳ھ
المنن الکبریٰ	امام عبدالوہاب شعرانی المتوفی ۹۷۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
نوادر الاصول	ابوعبداللہ محمد بن علی بن حسن حکیم ترمذی، متوفی ۳۲۰ھ	مکتبہ امام بخاری
حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
الملفوظ (ملفوظات اعلیٰ حضرت)	شہزادۂ اعلیٰ حضرت محمد مصطفیٰ رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
وسائل بخشش	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
فیضان سنت	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
جنتی زیور	حضرت علامہ عبدالمصطفیٰ اعظمی رحمۃ اللہ علیہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تجلیاتِ امام احمد رضا خان	خلیفہ مفتی اعظم ہند الحاج قاری محمد امانت رسول قادری	رضا اکیڈمی لاہور

"या ख़ुदा करम !" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से वस्वसों के 8 इलाज

(1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ कीजिये। (या'नी शैत़ान से नजात के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इमदाद त़लब कीजिये और ज़िक्रुल्लाह शुरूअ़ कर दीजिये)

(2) اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم पढ़िये।

(3) لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ पढ़िये।

(4) सूरतुन्नास की तिलावत कीजिये।

(5) اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ कहिये।

(6) هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ (پ۲۷ الحدید ۳) कहिये, इन से फ़ौरन वस्वसा दफ़्अ़ हो जाता है।

(7) سُبْحٰنَ الْمَلِكِ الْخَلَّاقِ ﴿اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ۝﴾ (پ۱۳ ابراهیم آیت ۱۹، ۲۰) की कषरत इसे या'नी वस्वसे को जड़ से क़त़्अ़ (या'नी काट) कर देती है (मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा रज़विय्या, मुख़र्रजा 1/770) (इस दुआ़ के ह़िस्सए आयत को आप की मा'लूमात के लिये मुनक़्क़श हिलालैन और रस्मुल ख़त़ की तब्दीली के ज़रीए़ वाज़ेह़ किया है)

(8) मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि जो कोई सुब्ह़ शाम इक्कीस इक्कीस बार "लाह़ौल शरीफ़" पानी पर दम कर के पी लिया करे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वस्वसए शैत़ानी से बहुत ह़द तक अम्न में रहेगा।" (मिरआतुल मनाजीह़, 1/87)

मुहीत दिल पे हुवा हाए नफ़्से अम्मारा दिमाग़ पर मेरे इब्लीस छा गया या रब
रिहाई मुझ को मिले काश ! नफ़्सो शैतां से
तेरे हबीब का देता हूं वासिता या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 54)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अगर वस्वसे किसी सूरत न जाएं तो.....

अगर वज़ाइफ़ व आ'माल से शैतान के वस्वसों से छुटकारा न हो तो घबराने की ज़रूरत नहीं । दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **मिन्हाजुल आ़बिदीन** में हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने जो कुछ फ़रमाया उस का ख़ुलासा है : अगर आप येह महसूस करें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगने के बा वुजूद शैतान पीछा नहीं छोड़ रहा और ग़ालिब आने की कोशिश में है तो इस का मत़लब येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को आप के मुजाहदे, कुव्वत और सब्र का इम्तिह़ान मत़लूब है, या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आज़मा रहा है कि आप शैतान से मुक़ाबला और मुह़ारबा (या'नी जंग) करते हैं या इस से मग़लूब हो (या'नी हार) जाते हैं । (مِنهاجُ العابِدين (عربی)، ص٤٦)

वस्वसों के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "वस्वसों का इ़लाज" (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ कीजिये

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net
I.T. Majlis of Dawateislami

येह क़िताब एक नज़र में

۞ किसी शख़्स, जगह, चीज़ या वक़्त को मन्हूस जानने का इस्लाम में कोई तसव्वुर नहीं येह मह्ज़ वहमी ख़यालात होते हैं। ۞ शुगून का मा'ना है फ़ाल लेना या'नी किसी चीज़, शख़्स, अ़मल, आवाज़ या वक़्त को अपने हक़ में अच्छा या बुरा समझना। अगर अच्छा समझा तो अच्छा शुगून या नेक फ़ाल है और अगर बुरा समझा तो बद शुगूनी है। ۞ नेक फ़ाल लेना मुस्तहब है, बद फ़ाली (या) बद शुगूनी लेना शैत़ानी काम है। ۞ बद शुगूनी पर गुनाह उस वक़्त होगा जब उस के तक़ाज़े पर अ़मल कर लिया और अगर इस ख़याल को कोई अहमिय्यत न दी तो कोई इलज़ाम नहीं। ۞ बद शुगूनी लेना आ़लमी बीमारी है, मुख़्तलिफ़ मुमालिक में रहने वाले मुख़्तलिफ़ लोग मुख़्तलिफ़ चीज़ों से बद शुगूनियां लेते हैं। ۞ बद शुगूनी इन्सान के लिये दीनी व दुन्यवी दोनों ए'तिबार से बेहद ख़त़रनाक है। ۞ बद शुगूनी से ईमान भी ज़ाएअ़ हो सकता है। ۞ बद शुगूनी लेना मुसलमान को ज़ैब नहीं देता बल्कि येह ग़ैर मुस्लिमों का पुराना त़रीक़ा है। ۞ दौरे ह़ाज़िर में भी बहुत से ग़लत़ सलत़ ए'तिक़ादात, तवह्हुमात और नाजाइज़ रुसूमात ज़ोर पकड़ती जा रही हैं जिन का तअ़ल्लुक़ बद शुगूनी से भी होता है मसलन माहे सफ़र को मन्हूस जानना, छींक को मन्हूस जानना, सितारों के अशरात पर यक़ीन रखना, मुसलसल बेटियों की पैदाइश को मन्हूस समझना, घर में पपीता का दरख़्त लगाने को मन्हूस समझना, शव्वाल या मख़्सूस तारीखों में शादी को मन्हूस जानना, औ़रत, घर और घोड़े को मन्हूस समझना वग़ैरा। ۞ इस्तिख़ारा करना जाइज़ व मुस्तहसन है। ۞ नज़र लगना एक ह़क़ीक़त है इस से इन्कार नहीं किया जा सकता। ۞ इस्लामी अ़क़ाइद की मा'लूमात ह़ासिल कर के, अللہ عَزَّوَجَلَّ पर सच्चा तवक्कुल कर के, बद शुगूनी के तक़ाज़े पर अ़मल न कर के और मुख़्तलिफळ वज़ाइफ़ के ज़रीए़ बद शुगूनी का इ़लाज किया जा सकता है।

तफ़्सीलात के लिये इसी किताब "बद शुगूनी" का मुकम्मल मुत़ालआ़ कीजिये

ISBN 978-969-631-122-5
0109919
MC 1286

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net